

सामुदायिक



RNI No. MPBIL02443/2020-TC

National News Magazine

वर्ष : 02 अंक : 04

अप्रैल 2022

मूल्य: ₹ 25 पृष्ठ : 52

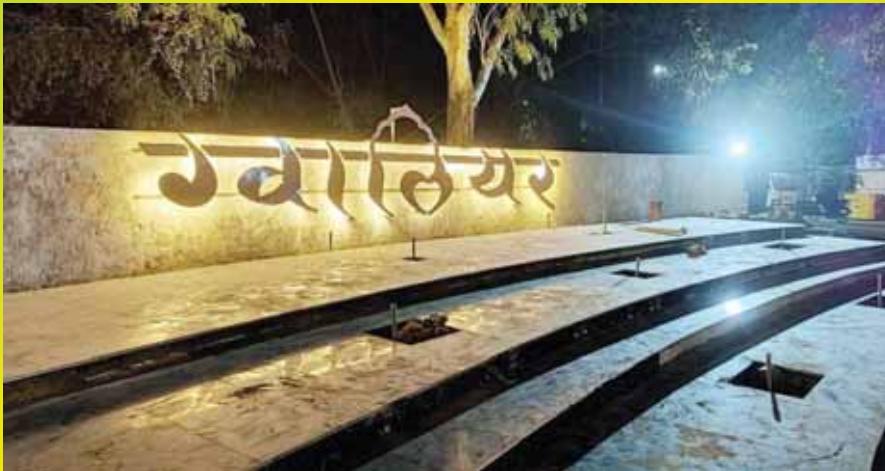
ग्वालियर में 'गूंज' की गूंज





मार्च 2022 का अंक

IN THIS ISSUE...



निंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर गवालियर 45



चम्बल की धरोहरें: 43



गवालियर की पुलिस....23



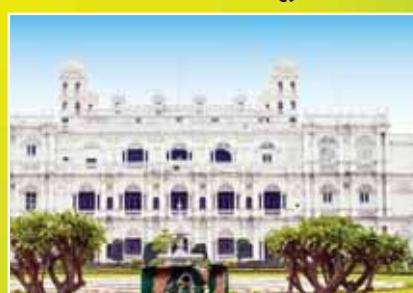
स्वच्छता में नंबर 1 बनेगा गवालियर 26



आम जनजीवन को छूएंगे: 05



सड़क दुर्घटनाएं रोकने में मददगार 46



हमारी धरोहर....43

स्वात्माधिकारी एवं प्रकाशक कृति सिंह के लिए भूद्रक सदीप कुमार सिंह द्वारा नेहा ग्राफिक्स, 32 ललितपुर कॉलोनी, लश्कर गवालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं

ई-69/70, हारिशंकरपुरम लश्कर गवालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित। संपादक कृति सिंह। सभी विवादों के लिए न्याय केन्द्र गवालियर होगा।

RNI.Title Code-MPBIL02443/2020-TC (समाचार वयन के लिए पीआरबी एकट के तहत जिम्मेदार) पत्रिका में प्रकाशित सामग्री, रचनाएं, एवं

स्तंभ लेखक के स्वयं के हैं इसमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। (पत्रिका में सभी पद अवैतनिक एवं अस्थाई हैं।) संपर्क: 7880075908

गूँज पत्रिका संपादकीय कार्यालय
ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर गवालियर मध्य प्रदेश
(संपर्क: 7880075908)

आमजन से जुड़े मुद्दों पर रहेगा फोकस

गवा

लियर का पहला कम्प्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ.एम. आपकी अपनी आवाज़ आमजन के लिए शुरू की गई एक पहल है जिसे आप सभी को सफल बनाना है। हमारा पहला कर्तव्य आपने श्रोताओं (पाठकों) आमजन से जुड़े मुद्दों पर रहेगा। गूंज किस तरह से आमजन की कसोटी पर खरा उतरेगा इसका भी हम ख्याल रखेंगे। जनता से जुड़ी समस्याओं को अधिकारियों तक पहुंचाना हमारा मुख्य

कार्यक्रमों पर भी फोकस रहेगा। केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा महिलाओं के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी जाएगी जिससे महिलाएं जागरूक हो सकें। महिलाओं से संबंधित कानूनी अधिकारों उनके क्या-क्या अधिकार होते हैं और भी कई पहलुओं पर कार्यक्रमों के माध्यम से प्रोग्राम प्रसारित किए जाएंगे।

गूंज का मुख्य उद्देश्य समाज व्यक्ति को जीवनशैली, आगे बढ़ने की प्रेरणा व एकजुटता का भाव प्रदान करना है। एक संस्था के रूप में की गूंज का प्रयास है समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचना और उन्हें अपना एक हिस्सा बना लेना।

हमारे द्वारा चिकित्सा सेवाओं के विषय पर भी कुछ खास कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाएगा जिसमें चिकित्सा सेवाओं से जुड़े हॉस्पिटल, डॉक्टर्स के बारे में भी पाठकों को जानकारी मिल सकेगी जिसमें मुख्य रूप से बीमारी से संबंधित डॉक्टर के बारे में जानकारी दी जाएगी। आमतौर पर लोगों को यह जानकारी ही नहीं होती है कि अगर उन्हें कोई बीमारी अथवा चिकित्सक परामर्श की आवश्यका है तो वह किस डॉक्टर्स से परामर्श ले अथवा इलाज कराएं इस विषय को ध्यान में रखकर हमारे द्वारा विशेष कार्यक्रम किए जाएंगे जिसमें यह सारी जानकारी पाठकों को उपलब्ध कराई जाएगी और समय-समय पर चिकित्सकों द्वारा पाठकों के लिए विशेष परामर्श कार्यक्रम भी आयोजित कराए जाएंगे जिनमें पाठकगण दूरभाष के माध्यम से फोन करके चिकित्सकों से उचित परामर्श भी ले सकेंगे। हमारा यही प्रयास रहेगा कि ज्यादा से ज्यादा आमजन को उचित मार्गदर्शन एवं मदद मिले।

अन्त में पाठकों से सिर्फ यही कहना चाहूंगी कि प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने का तथा अपने विचार प्रस्तुत करने का पूरा हक है और इसका ज़रिया बनेगा गूंज आपकी अपनी आवाज़। समाज का प्रत्येक व्यक्ति गूंज का हिस्सा बने और साथ में मिलकर समाज के विकास में अपना योगदान दे। हमें आशा है कि हमारे ग्रिय पाठक गूंज 90.8 एफ.एम से जुड़ कर हमारे उद्देश्य को सफल बनाकर समाज की उन्नति में अपना योगदान देंगे।

धन्यवाद



**कृति सिंह
संपादक**

“

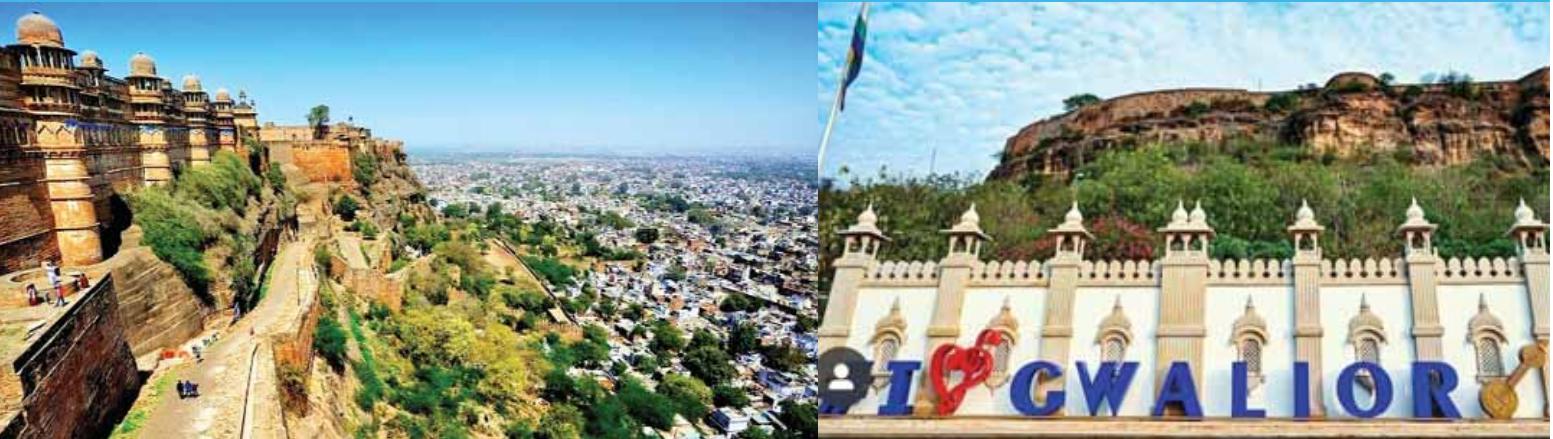
गूंज का मुख्य उद्देश्य समाज व्यक्ति को जीवनशैली, आगे बढ़ने की प्रेरणा व एकजुटता का भाव प्रदान करना है। एक संस्था के रूप में की गूंज का प्रयास है समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचना और उन्हें अपना एक हिस्सा बना लेना। गूंज एक मंच प्रदान करता है उन आवाजों को जो समाज में उभरकर नहीं आप पा रही हैं। ऐसे बहुत हुनरमंद कलाकार हैं जो पूरे विश्व में ही शहर का नाम रोशन कर सकते हैं तेकिन उनको अपने सपने साकार करने की सीढ़ी नहीं मिल पा रही है। गूंज के ज़रिए वो अपनी कला का जादू बिखरे सकते हैं। हमारे द्वारा प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमों में महिला उत्थान एवं बेटियों को आगे बढ़ने में बढ़ावा देने वाले

”



SPECIAL EDITION

आपकी अपनी आवाज़



ग्वालियर में 'गूंज' की गूंज

ग्वालियर का पहला कम्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ.एम. आपकी अपनी आवाज़ अब शहरवासियों के बीच ऑन एयर हो चुका है शहरवासियों का गूंज 90.8 एफ.एम. को अच्छा इस्पॉस मिल रहा है। लोग गूंज 90.8 एफ.एम. के माध्यम से ग्वालियर शहर से जुड़े इतिहास, कला, संस्कृति, पर्यटन, कम्युनिटी, एग्रीकल्चर, शिक्षा आदि विषयों पर कई जानकारी मिल रही है। गूंज एक मंच प्रदान करता है उन आवाजों को जो समाज में उभरकर नहीं आप पा रही हैं। ऐसे बहुत हुनरमंद कलाकार हैं जो पूरे विश्व में ही शहर का नाम सेशन कर सकते हैं लेकिन उनको अपने सपने साकार करने की सीढ़ी नहीं मिल पा रही है। गूंज के ज़रिए वो अपनी कला का जादू बिखेर सकते हैं।



गूंज 90.8 एम.एम. स्टूडियो जहां प्रतिभाओं को मिलेगी नई पहचान



होनहार प्रतिभाओं की आवाज बनेगा गूंज

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क



ज का उद्देश्य है जो समाज से मिला है वो समाज को वापस देने की कोशिश करना है। समाज लोगों से बनता है, और हर व्यक्ति का समाज के प्रति योगदान होता है। समाज व्यक्ति को जीवनशैली, आगे बढ़ने की प्रेरणा व एकजुटता का भाव प्रदान करता है। एक संस्था के रूप में की गूंज 90.8 एफ.एम. का प्रयास है समाज के प्रत्येक वर्ग तक



पहुंचना और उहें अपना एक हिस्सा बना लेना। गूंज एक मंच प्रदान करता है उन आवाजों को जो समाज में उभरकर नहीं आप पा रही हैं। ऐसे बहुत हुनरमंद कलाकार हैं जो पूरे विश्व में ही शहर का नाम रोशन कर सकते हैं लेकिन उनको अपने सपने साकार करने की सीढ़ी नहीं मिल पा रही है। गूंज के ज़रिए वो अपनी कला का जादू बिखेर सकते हैं। इसके अलावा गूंज उन दबी हुई खामोशियों को आवाज देना चाहता है जो समाज में सालों से पसरी हुई हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने का तथा अपने विचार प्रस्तुत करने का पूरा हक है और इसका ज़रिया बनेगा गूंज 90.8 एफ.एम. आपकी अपनी आवाज। समाज का प्रत्येक व्यक्ति गूंज का हिस्सा बन बने और साथ में मिलकर समाज के विकास में अपना योगदान दे।

हुनरमंद कलाकारों को दिलाएंगे पहचान

गूंज का मुख्य उद्देश्य समाज व्यक्ति को जीवनशैली,

आगे बढ़ने की प्रेरणा व एकजुटता का भाव प्रदान करना है। 90.8 एफ.एम. का प्रयास है समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचना और उहें अपना एक हिस्सा बना लेना। गूंज एक मंच प्रदान करता है उन आवाजों को जो समाज में उभरकर नहीं आप पा रही हैं। ऐसे बहुत हुनरमंद कलाकार हैं जो पूरे विश्व में ही शहर का नाम रोशन कर सकते हैं लेकिन उनको अपने सपने साकार करने की सीढ़ी नहीं मिल पा रही है। गूंज के ज़रिए वो अपनी कला का जादू बिखेर सकते हैं।

हर कर्ग के लिए कुठ न कुठ

गूंज 98.8 एफ.एम के प्रोग्रामों में कृषि, शिक्षा, करियर, परामर्श, महिला सशक्तिकरण, चिकित्सा, मेडिकल, सड़क सुरक्षा, बच्चों के खेल, संगीत व मनोरंजन से भरे होंगे। गूंज का प्रयास रहेगा वो समाज की समस्याओं पर प्रकाश डाले व उनके समाधान के मार्ग बताए।

योजनाओं पर रहेगा फोकस

हमारे द्वारा प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमों में महिला उत्थान एवं बेटियों को आगे बढ़ने में बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों पर भी फोकस रहेगा। केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा महिलाओं के लिए चलाई जा रहीं विभिन्न योजनाओं के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी जाएगी जिससे महिलाएं जागरूक हो सकें। महिलाओं से संबंधित कानूनी अधिकारों उनके क्या-क्या अधिकार होते हैं और भी कई पहलुओं पर कार्यक्रमों के माध्यम से प्रोग्राम प्रसारित किए जाएंगे।

चिकित्सा से जुड़ीं जानकारियां भी

चिकित्सा सेवाओं के विषय पर भी कुछ खास कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाएगा जिसमें चिकित्सा सेवाओं से जुड़े हॉस्पिटल, डॉक्टर्स के बारे में भी पाठकों को जानकारी मिल सकेगी जिसमें मुख्य रूप से बीमारी से संबंधित डॉक्टर के बारे में जानकारी दी जाएगी।



कृति सिंह डायरेक्टर

(गूंज 90.8 एफ.एम., गूंज मीडिया ग्रुप)

होनहार प्रतिभाओं की आवाज बनकर उभरेगा गूंज 90.8 एफ.एम यह कहना है गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह का उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने का तथा अपने विचार प्रस्तुत करने का पूरा हक है और इसका ज़रिया बनेगा गूंज 90.8 एफ.एम. आपकी अपनी आवाज। ग्वालियर शहर एवं अंचल के आसपास की होनहार प्रतिभाओं को आगे बढ़ने के लिए गूंज एक प्लेटफॉर्म बनकर उभरेगा और उहें आगे बढ़ने में मदद करेगा। समाज का प्रत्येक व्यक्ति गूंज का हिस्सा बने और साथ में मिलकर समाज के विकास में अपना योगदान दे। हमें आशा है कि हमारे प्रिय पाठक गूंज 90.8 एफ.एम से जुड़ कर हमारे उद्देश्य को सफल बना समाज की उत्तम में अपना योगदान देंगे।



आम जनजीवन को छूण्हे गूंज के कार्यक्रम



ज 90.8 एफ एम आपकी अपनी आवाज़ आवश्यक सूचनाएँ लोगों तक पहुंचाएगा, गूंज के प्रोग्राम में कृषि, शिक्षा, करियर, परामर्श, महिला

सशक्तिकरण, बच्चों के खेल, संतानीत व मनोरंजन से भरे होंगे। गूंज का प्रयास रहेगा वो समाज की समस्याओं पर प्रकाश डाले व उनके समाधान के मार्ग बताए। हमें आशा है कि हमारे प्रिय पाठक गूंज 90.8 एफ एम से जुड़ कर हमारे उद्देश्य को सफल बना समाज की उत्त्रति में अपना योगदान देंगे।

1. प्रातः स्मरण

कितना अच्छा हो ना यदि आपकी हर सुबह मंगलमय हो? प्रातः स्मरण श्लोक और भजनों के माध्यम से श्रीताओं की सुबह और भी मंगलमय बनाएगा। सुबह की भाग दौड़ में प्रातः स्मरण लोगों को वह ठहराव देगा जिससे कि वह अपने दिन की एक अच्छी शुरुआत कर सके।

2. विरासत

अजब गजब मध्य प्रदेश अपने अंदर छुपाए बैठा है कई सारी ऐसी ऐतिहासिक जगह, किससे कहानियाँ जो बस एक मौका ढूँढ़ रहे हैं खुद का परिचय देने का, गूंज 90.8 एफएम आपकी अपनी आवाज भी ऐसी ही कुछ धरोहरों और लोक कथाओं को श्रीताओं के पास लेकर आएगा विरासत के जरिए।

3. मिट्टी की खुशबू

अन्नदाता किसान हमारे देश को ना सिर्फ भोजन प्रदान करते हैं बल्कि अपने निर्वार्थ भावना से किए गए कार्यों से हम

सभी को मेहनत करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं गूंज 90.8 एफएम आपकी अपनी आवाज के खास प्रोग्राम मिट्टी की खुशबू के जरिए किसान भाइयों को होने वाली मुश्किलों एवं फसलों से जुड़े उनके सवाल का जवाब बन के आरहा है मिट्टी



की खुशबू, जहाँ बातें होंगी किसानों के हित की।

4. Potli

एक समय की बात है दूर किसी देश में.... यह पढ़ते ही आपकों याद आ गई होंगी वो अनंत कहानियाँ जो अपने कही पढ़ी या सुनी होंगी। ऐसी ही कुछ रोचक कहानियाँ लेकर आ रहा है गूंज 90.8 एफएम आपकी अपनी आवाज।

5. रुनझुन मौसी शो

बच्चों के साथ खेलने वाली पहली दोस्त मौसी ही होती है, रुनझुन मासी शो के जरिए आप भी दोबारा जी सकेंगे अपना बचपन वह खेल जो हम खेलते खेलते बड़े हुए पर आज समय के अभाव के कारण उन्हें भूल से गए हैं उन्हीं से रुबरु कराएगा आपको यह शो।

6. हॉर्न ओके प्लीज

सड़कों पर होने वाली दुर्घटनाएँ तो जैसे एक आम सी बात हो गई है जिसके कारण के बारे में हम बिल्कुल ही नहीं सोचते हैं। गूंज 90.8 एफएम आपकी अपनी आवाज का प्रोग्राम हॉर्न ओके प्लीज आपको सड़क दुर्घटना के विभिन्न कारणों से अवगत कराएगा जिससे कि सड़क सुरक्षित हो सके।

7. फिल्मी पत्रे

बॉलीवुड माया नगरी के बारे में जितनी भी जानकारी आपको कयों ना हो कुछ घटनाक्रम तो रही जाते हैं जो आपको ना पता हो फिल्मी पत्रे लेकर आ रहा है कुछ ऐसी ही रोचक बातें, जो आपको अपने मनपसंद फिल्मी कलाकार से पहचान कराएंगे।

8. कैरियर जंक्शन

करियर को लेकर होने वाली असमंजस युवाओं को कई बार भारी पड़ जाती है, करियर से जुड़े हर सवाल का जवाब लेकर आ रहा है रेडियो गूंज, जहाँ कैरियर के अलग-अलग क्षेत्रों के महारथी आकर देंगे आपको करियर एडवाइस।

9. स्वास्थ्य मंत्र

डॉक्टर की सलाह किसे पसंद नहीं है पर उस सलाह को पाने के लिए लाइन में लगने वाले ड्राइवर्स से यदि छुटकारा मिले तो गूंज 90.8 एफएम का शो स्वास्थ्य मंत्र आपको घर बैठे बैठे ही डॉक्टर की सलाह प्राप्त करेगा।



All About GOONJ

GOONJ

"We started this journey with the germ of an idea of creating social equality, thus came into being MPMM. However, we soon realized the need for widening the sphere and means for realizing our goals. Today the society is infested with so many pressing & compelling social issues that just being an NGO and serving people wouldn't suffice. Very quickly we realized that we could maximize our



social impact, by addressing the needs of the youth and children. By assisting the younger generation we can improve the communities where they live there by making the future of these communities brighter. From the epiphany came a clear Vision:Inform,Inspire,Empower. We not only wanted to help them but also empower them and give them a media platform which is their own and where they can raise their own concerns, through our voice; hence came up Goonj 90.8 FM Aapkee Apni Aawaz. Madhya Pradesh has produced so many famous reporters and journalist but does not house any reputed media college. With a aim of retaining and grooming this local talent we started Goonj Institute and a news portal Goonj MP "

FOUNDER'S BIOGRAPHY



For over decade MS Krati Singh has been a Social worker. With a degree in BBA from De Montfort University (U.K), an MBA from Indore and specialization in Media Studies, Krati Singh's life is a cynosure for others who want to be the agents of social change .A social entrepreneur every bit she strongly believes that social enterprise is not a silver bullet, but it is a promising approach to fulfilling unmet needs and fostering genuinely "triple-bottom-line" organizations – those simultaneously seeking profits, social impact, and environmental sustainability. It's certainly not the only solution, but it is most definitely a solution.

Krati Singh
Director, Goonj Media Group



धरती के ‘देवदूत’

कोरोना काल की विषम
परिस्थिति में धरती के देवदूत
कहे जाने वाले डॉक्टरों ने
निभाया अपना फर्ज

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

दुनिया कोरोना जैसी महामारी से ज़ब्र रही है। तब डॉक्टरों की महत्वपूर्ण भूमिका और उनकी कड़ी मेहनत को अनदेखा नहीं किया जा सकता। डॉक्टरों को समाज में भगवान का दर्जा प्राप्त है। अब जो लोग समाज और देश की सेवा में अपनी जान की चिंता किए बगैर दिन रात लग रहते हैं। डॉक्टर्स देवदूत बनकर हमारी रक्षा कर रहे हैं आज गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से धरती के ‘देवदूतों’ को सलाम करती है।

डॉक्टर धरती पर भगवान का दूसरा रूप होते हैं। भगवान तो हमें एक बार जीवन देता है पर डॉक्टर हमारे अमूल्य जान को बार-बार बचाता है। दुनियां में ऐसे कई उदाहरण हैं जहां डॉक्टरों ने भगवान से भी बढ़कर काम किया है। बच्चे को जन्म देना हो या किसी वृद्ध को बचाना हो डॉक्टरों की मदद हमेशा हमें मुश्किल से बचाती है। यही एक पेशा है जहां दवा और दुआ का अनोखा संगम देखने को मिलता है, इंसान को भगवान भी यहीं बनाया जाता है। डॉक्टरों ने मानव जाति के लिए बहुत समर्पण किया है। अगर भारत की बात की जाए तो हम देखेंगे कि यहां आज भी डॉक्टरों का



कोरोना वायरस के डर जब लोग घरों से निकलने की हिम्मत नहीं जुटा पाते थे तब ऐसे भी जांबाज हैं जो बिना भय के संदिग्धों और मरीजों की सेवा करने में जुटे थे। जिंदगियां बचाने के लिए ये जांबाज दिनरात काम पर लगे हुए थे। कई बार ऐसी भी स्थिति आ जाती है जब ये जांबाज संक्रमित के सीधे संपर्क में आ जाते इसके बावजूद उनका न तो हौसला डिगा और न ही बेहतर करने में कोई कमी आई है। ये सेना के जवानों की तरह सलामी के हकदार हैं।



विशेष आदर-सत्कार होता है। कोरोना काल में सच्चे कोरोना वॉरियर्स के रूप में डॉक्टर समर्पण भाव से मरीजों की सेवा में लगे हैं और पूरे समर्पण भाव के साथ मरीजों की सेवा कर रहे हैं। डॉक्टरों ने मानव जाति के लिए बहुत समर्पण किया है। अगर भारत की बात की जाए तो हम देखेंगे कि यहां आज भी डॉक्टरों और वैद्यों का विशेष आदर-सत्कार होता है।

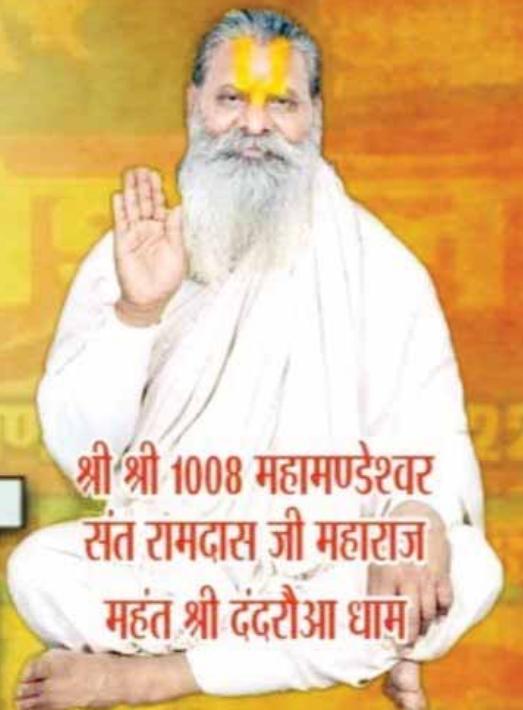
डॉक्टरों को समाज के सबसे महत्वपूर्ण भागों में से एक माना जाता है। घर की तलाश करते समय देखे जाने वाली पहली चीजों में से सबसे पहले एक अस्पताल, नर्सिंग होम या डॉक्टर का क्लिनिक है। इसका कारण यह है कि पास में चिकित्सा संबंधी सहायता सुरक्षा की भावना प्रदान करती है। रोगियों के लिए विशिष्ट उपचार प्रदान करने के लिए डॉक्टर विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ हैं। इसमें से कुछ में एनेस्थिसियोलॉजिस्ट, कार्डियोलॉजिस्ट, एलर्जिस्ट, रुग्न रोग विशेषज्ञ, इम्युनोलॉजिस्ट, निओनाटोलॉजिस्ट, ऑन्कोलॉजिस्ट, रेडियोलॉजिस्ट, प्रसूति, फिजियोलॉजिस्ट और बाल रोग विशेषज्ञ शामिल हैं। किसी भी मेडिकल समस्या का सामना करते समय अधिकांश लोग सामान्यतः डॉक्टरों के पास जाते हैं। ये डॉक्टर मरीजों की जांच करते हैं और उन्हें दवा लिखते हैं और यदि उन्हें जरूरत पड़े तो उसे विशेषज्ञ डॉक्टरों के पास भेज देते हैं। लोगों को जिंदगी को लेकर डॉक्टरों पर भरोसा करना चाहिए पर बहुत से अविश्वासों का भी प्रसार किया जा रहा है।

वहीं दूसरी ओर चिकित्सा व्यवसाय सदियों से विकसित हुआ है और अभी भी विकसित हो रहा है। विभिन्न बीमारियों की दवाएं तथा उपचार जो पहले उपलब्ध नहीं थे अब विकसित हुए हैं। चिकित्सा प्रौद्योगिकी ने भी समय गुजरने के साथ प्रगति की है। अगर हमारे पास अच्छे डॉक्टर हैं और हमारे आसपास के क्षेत्र में चिकित्सा सुविधाएं हैं तो यह राहत की भावना देता है क्योंकि हमें पता है कि हमारे पास तकाल सहायता का साधन है।

कोरोना वायरस के डर जब लोग घरों से निकलने की हिम्मत नहीं जुटा पाते थे तब ऐसे भी जांबाज हैं जो बिना भय के संदिग्धों और मरीजों की सेवा करने में जुटे थे। जिंदगियां बचाने के लिए ये जांबाज दिनरात काम पर लगे हुए थे। कई बार ऐसी भी स्थिति आ जाती है जब ये जांबाज संक्रमित के सीधे संपर्क में आ जाते इसके बावजूद उनका न तो हौसला डिगा और न ही बेहतर करने में कोई कमी आई है। ये सेना के जवानों की तरह सलामी के हकदार हैं।



डॉक्टर हनुमान



दर्शन मात्र से ठीक होती है बीमारी

दंदरौआ सरकार सबकी पीड़ा, दर्द बीमारियां हर लेते हैं। हर कष्ट से निजात दिलाते हैं। उनके दर्शन मात्र से लोगों की कैंसर जैसी बीमारियां ठीक हुई हैं। ऐसे दंदरौआ धाम में विराजे डॉक्टर हनुमान जी की कृपा रही है। जिले में दंदरौआ धाम में विराजे प्राचीन प्रसिद्ध भगवान हनुमान जी वैसे तो लोगों के कष्ट और बीमारियां हटने की वजह से डॉक्टर हनुमान जी के नाम से विख्यात है।

- गूंज न्यूज नेटवर्क

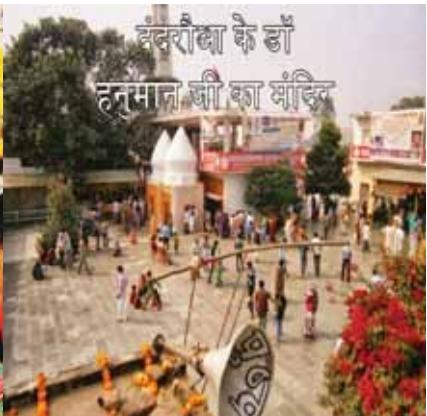
भिं ड जिला मुख्यालय से 55 किलोमीटर दूरी पर स्थित दंदरौआ सरकार सबकी पीड़ा, दर्द बीमारियां हर लेते हैं। हर कष्ट से निजात दिलाते हैं। उनके दर्शन मात्र से लोगों की कैंसर जैसी बीमारियां ठीक हुई हैं। ऐसे दंदरौआ धाम में विराजे डॉक्टर हनुमान जी की कृपा रही है। जहां कोरोना काल में भी उनका आशीर्वाद भिंडवासियों के साथ-साथ प्रदेशवासियों पर भी बना रहा।

दंदरौआ धाम के महंत रामदास महाराज का कहना है डॉक्टर हनुमान जी की कृपा हर इंसान पर है फिर वो आम श्रद्धालु हो या वीआईपी। मंदिर में दर्शन के लिए ताम्र लगा हाई राइज है। कोरोना काल में लोग तो मंदिर तक नहीं पहुंचे लेकिन दंदरौआ धाम में कोरोना के प्रभाव को लेकर समय समय पर कई दिग्गज मंत्री भी डॉक्टर हनुमान के आगे शीश झुकाने पहुंचते हैं।

दंदरौआ धाम वाले हनुमानजी मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान प्रांत के कई जिलों में डॉक्टर वाले हनुमानजी के नाम से सुप्रसिद्ध हैं। यहां दूर-दूर से



श्रद्धालु मंगलवार और शनिवार को रोगों से मुक्ति की कामना को लेकर आते हैं। श्रद्धालुओं के मुताबिक यहां पर हनुमानजी के पांच, सात, ग्याहर मंगलवार या शनिवार दर्शन करने मात्र से कई असाध्य रोगों से मुक्ति मिल रही है। यह स्थान सैकड़ों साल पुराना है। स्थानीय लोगों के मुताबिक दंदरौआ धाम स्थान पर करीब छह सौ साल पहले एक तालाब के किनारे पीपल के पेड़ की जड़ के पास हनुमानजी की प्रतिमा मिली थी। इस मंदिर से जुड़े चमत्कार के किस्से क्षेत्रीय लोगों की जुबानी



सुनने को मिलते हैं। यहां के महंत महामंडलेश्वर रामदास महाराज का कहना है कि यहां सबसे पहले 2001 में कैंसर जैसे असाध्य रोग को लेकर मंदिर के ही एक साधक द्वारा अर्जी लगाई गई थी। वह साधक को हनुमान जी के चरणों के जल से कैंसर जैसे रोग से मुक्ति मिली थी। वह साधक आज भी हनुमान जी की सेवा में उपस्थित रहता है। यहां हर मंगलवार और शनिवार को दर्शनों के बाद रोगों से मुक्ति मिलने पर पूजा-अनुष्ठान व धार्मिक आयोजन, श्रद्धालुओं द्वारा कराए जाते हैं।



भारत में कोरोना की वापसी

“भारत में कोरोना के बढ़ते मामलों ने फिर कुछ पाबंदियों की वापसी करा दी है। जब लोग पाबंदियों से निकलकर सामाज्य जीवन जीने लगे हैं, तब संक्रमण ने फिर अपना आतंक प्रदर्शित कर दिया है। राष्ट्रीय राजधानी में मास्क की न केवल वापसी हो गई है, बल्कि मास्क न पहनने वालों को 500 रुपये जुर्माना भी देना पड़ेगा। दिल्ली डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी की बैठक में यह कड़ा फैसला लेते हुए मास्क को अनिवार्य कर दिया गया है।

Uएक चर्चा तो स्कूलों को लेकर भी थी कि क्या संक्रमण पर अंकुश के लिए स्कूलों को फिर से ऑफलाइन कर दिया जाए। बमुश्किल घरों से निकले बच्चों से ज्यादा उनके अभिभावकों को चिंता हो रही है, क्योंकि किसी-किसी दिन बच्चों में संक्रमण ज्यादा दिख रहा है। पिछले सप्ताह कुछ स्कूलों को बंद भी करना पड़ा था। बहरहाल, फैसला हुआ है कि स्कूल अभी खुले रहेंगे। स्कूलों को खोले रखना जरूरी ही नहीं, मजबूरी भी है। पढ़ाई का जो तुकसान हुआ है, उसकी भरपाई आसान नहीं है। इसके अलावा, स्कूलों का प्रबंधन भी प्रभावित हुआ है, वर्तमान स्कूली ढांचे के तहत स्कूलों के लिए ऑफलाइन होना गंभीर अनिवार्यता है।

दिल्ली में आगामी दिनों में विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए जाएंगे। डॉक्टर हालात पर कड़ा नजर रखे हुए हैं। बैठक में यह भी चर्चा हुई है कि अभी कोरोना के मामले ऐसे नहीं हैं कि अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत पड़े। जो बच्चे संक्रमित हुए हैं, उनमें से ज्यादातर का इलाज घर में ही चल रहा है। अतः स्कूल और आपदा प्रबंधन से जुड़े लोग अभी संक्रमण की रफ्तार जांचने के पक्ष में हैं। अगले 15 दिन अस्पतालों में मरीजों के भर्ती होने के अनुपात को समझा जाएगा। आरटी-पीसीआर टेस्ट में



बढ़ाई जाएगी, पर इसके लिए लोगों को स्वयं आगे आना होगा। चिकित्सा महकमे को देखना होगा कि जांच की सुविधाओं में कमी नहीं आनी चाहिए। कई बार लोग जांच की परेशानी से बचते हुए ही उपचार को तरजीह देते हैं। जबकि जांच और उसके परिणाम संक्रमण की प्रवृत्ति पर नजर रखने के लिए जरूरी हैं। सरकार ने फैसला लिया है कि लक्षण वाले सभी लोगों की जांच कराई जाएगी, तो इसके लिए जगह-जगह सरकारी अस्पतालों में इंतजाम भी पूरे रखने होंगे। दूसरी गंभीर

बीमारियों से पीड़ित लोगों पर भी नजर रखने का फैसला उपयोगी है, क्योंकि कोरोना से गुजर चुके लोग बड़ी संख्या में तरह-तरह की बीमारियों से पीड़ित हो रहे हैं।

फिर दिल्ली की बात करें, तो मंगलवार को कोरोना संक्रमण के 632 नए मामले सामने आए हैं। संक्रमण दर अभी भी चिंता की वजह है। 11 से 18 अप्रैल के बीच दिल्ली में दैनिक मामलों में लगभग तीन गुना बढ़ि देखी गई है, इसलिए दिल्ली को देश में कोरोना के नए केंद्र के रूप में देखा जा रहा है। अतः कड़ाई समय की मांग है, ताकि

लॉकडाउन के बाद पूरी रफ्तार पकड़ चुके राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में स्थिति हाथ से नहीं निकले। डॉक्टरों का पहले से मानना रहा है कि कमजोर स्वास्थ्य के लोगों को हमेशा मास्क पहनना चाहिए। बेशक, स्कूल खुले रहेंगे, लेकिन स्कूलों को पूरी सावधानी और चौकसी का परिचय देना होगा। दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और मिजोरम की सरकारों को केंद्र की ओर से सचेत भी किया गया है। मतलब, कोरोना से लड़ाई को अभी कतई खत्म नहीं मानना चाहिए।

इस बार पड़ेगी भयानक गर्मी



झुलसा रही आसमान से बरसती आग

दे

श भर में इन दिनों आसमान से झुलसाने वाली आग बरस रही है हर कोई गर्मी की चुभन से परेशान हैं देश के कई राज्यों में भयानक गर्मी आग उगल रही है। यूपी, बिहार, उत्तराखण्ड समेत पूरा उत्तर भारत प्रचंड गर्मी की आगोश में है। मैदान से लेकर पहाड़ तक तपने लगे हैं। अप्रैल में ही मई-जून सी गर्मी झेल रहे लोगों के लिए आने वाले दिन और परेशानी भरे हो सकते हैं। आगले कुछ दिनों के दौरान राजस्थान, यूपी, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, बिहार और झारखण्ड में 'लू' चलने की आशंका है इसलिए अलर्ट जारी किया गया है। मध्य प्रदेश के राजगढ़ तथा नर्मदापुरम जिलों में पारा 45 डिग्री को छू गया है। भोपाल में 41.7 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से चार डिग्री अधिक है। छिंदवाड़ा, छतरपुर, सागर, राजगढ़, धार, रतलाम, ग्वालियर और गुना जिलों में लू का प्रकोप रहा।

अप्रैल महीने का आखिरी पश्चिमी विश्वाभ कश्मीर में दस्तक दे चुका है। इसकी वजह से अगले 2 दिन तक पहाड़ों से मैदान तक तापमान में 2 से 3 डिग्री तक की गिरावट आएगी, लेकिन 22 अप्रैल से राहत का यह दौर खत्म हो जाएगा। फिर तापमान बढ़ना शुरू होगा। वहीं, अप्रैल महीने के आखिरी 4-5 दिन में लू चलने लगेगी।

अप्रैल में टूट सकता है रिकॉर्ड

अगर बीते दो सालों की बात करें तो 2020 और 2021 में अप्रैल का औसत तापमान 35.5 डिग्री और

रिकॉर्ड टूट सकते हैं।

मार्च 2022 में टूटा था 122 साल का रिकॉर्ड



उपर ! ये गर्मी

37.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ था। वहीं इस बार औसत तापमान 40 डिग्री तक रह सकता है, जो 120 साल में कभी भी दर्ज नहीं हुआ है।

औसत तापमान 3 डिग्री तक बढ़ सकता है

शर्मा ने बताया कि औसत तापमान एक डिग्री बढ़ना भी बहुत बड़ी बात है। इस बार जो स्थितियां बन रही हैं, उन्हें देखकर लगता है कि औसत तापमान 3 डिग्री तक ज्यादा रह सकता है। सिर्फ दिल्ली ही नहीं बल्कि पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में भी तापमान सामान्य से 3 से 5 डिग्री तक ज्यादा रहेगा। इन राज्यों में अप्रैल महीने में गर्मी के सभी हुए दिनों में तापमान लगातार बढ़ता जाएगा।

बता दें कि इस साल गर्मी ने पिछले कई सालों का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। मार्च और अप्रैल में ही भयानक गर्मी से लोगों का जीना मुहाल हो गया। 11 अप्रैल को दिल्ली में 72 साल का गर्मी का रिकॉर्ड टूट गया। विशेषज्ञों का कहा कि 72 साल बाद अप्रैल के फर्स्ट हाफ में तापमान 42 डिग्री से ज्यादा रिकॉर्ड किया गया। इसी तरह मार्च 2022 में गर्मी ने पिछले 122 साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया था। जाब के बठिंडा में बुधवार को अधिकतम तापमान 43 डिग्री, हरियाणा के सिरसा में 42.3 डिग्री, चंडीगढ़ में 41 और हिमाचल की राजधानी शिमला में 27 डिग्री सेल्सियस रहा। लोगों को लू के थपेड़े झेलने पड़ रहे हैं।



महाविनाश की ओर रूस-यूक्रेन युद्ध

रू

स युक्रेन युद्ध को पचास से ज्यादा दिन हो गए। युद्ध का लंबा खिंचना ठीक नहीं होता। इस युद्ध का तो बिल्कुल भी नहीं। ये युद्ध जितनी जल्दी समाप्त हो जाए, उतना अच्छा है। युद्ध जितना लंबा खिंच रहा है, उतना गंभीर हो रहा है। संकेत ऐसे हैं कि ये युद्ध विश्व युद्ध की ओर न चला जाए। इसीलिए इस युद्ध को रोकने के लिए विश्व के सभी देशों को ईमानदारी के साथ प्रयास करने होंगे। रूस के मित्र देशों को इसके लिए प्रयास करने होंगे।

युद्ध, युद्ध होता है, वह न हो तो बहुत ही बढ़िया। कभी मजबूरी में हो तो बहुत सक्षिप्त। बड़ा युद्ध, उसको लड़ने वाले देश ही नहीं पूरी दुनिया को प्रभावित करता है। रूस यूक्रेन युद्ध 55 दिन से जारी है। वार्ता और मान-मनवल की कोशिश बेकार हो गई। अब ऐसा नहीं लगता कि जल्दी युद्ध रुकेगा। रूस को उम्मीद नहीं थी कि यूक्रेन इतनी मजबूती के साथ मुकाबला करेगा। युद्ध के चलते 55 दिन बीत गए। रूस ने यूक्रेन के शहरों पर बमबारी करके लगभग उड़े तबाह कर दिया। वहां जरूरत के सामान का संकट है, फिर भी यूक्रेन युद्धरत है। उसने हथियार नहीं डाले। वहां की जनता हार मानने को तैयार नहीं है। अब तो समाचार ये आ रहे हैं कि रूस के हमलों से डरकर देश छोड़ने वाले यूक्रेनवासी वापस लौट रहे हैं। देश छोड़कर जाने वाले यूक्रेन वालों की वापसी यह बताने के लिए काफी है कि वे प्रत्येक परिस्थिति को समझकर लौट रहे हैं। वह अपने देश और देशवासियों के साथ कधे से कंधा मिलाकर खड़े होने के लिए लौट रहे हैं। भारी बमबारी और मिसाइल हमले के बाद भी यूक्रेन पर विजय न मिलने के हालात से रूस के राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन परेशान हैं। वह गुस्से में हैं। युद्ध में बड़ी संख्या में उनके सैनिक तो मारे ही गए हैं, हाल में यूक्रेन ने काला सागर में एक रूसी युद्धपोत को भी तबाह कर दिया। बड़ी तादाद

में रूस के विमान, हैलिकाप्टर और टैंक आदि के पहले ही क्षितिग्रस्त होने की सूचनाएं हैं। रूस को यूक्रेन के खिलाफ युद्ध कुछ ही दिनों में जीत लेने की उम्मीद थी, लेकिन 55 दिनों बाद भी वह ऐसा नहीं कर सका है। अधर अमेरिका और उसके मित्र देशों को लगतार अस्त-

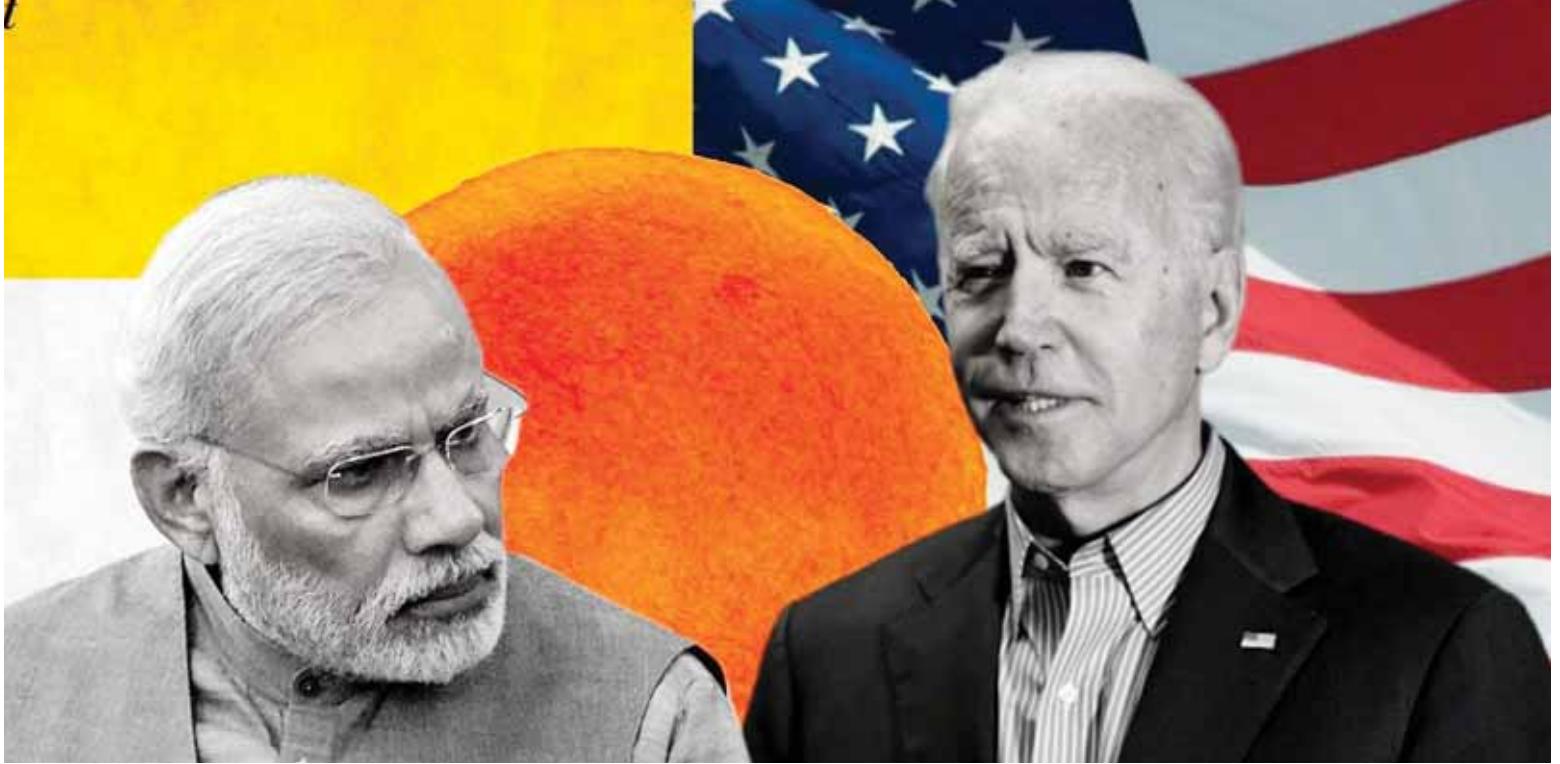
डेलिंगेशन कीव जाने वाला है। इसके बाद बाइडेन या वाइस प्रेसिडेंट कमला हैरिस के यूक्रेन जाने की उम्मीद जारी जा रही है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने नौ अप्रैल को कीव जाकर हालात का जायजा लिया था। 55 दिन से चल रहे युद्ध से रूस की सुपरपावर इमेज को

धक्का लगा है। ऐसे में यूक्रेन को न जीत पाने की द्वांजलाहट में रूस यूक्रेन के खिलाफ टेक्टिकल परमाणु हथियारों का इस्तेमाल कर सकता है। यह भी हो सकता है कि वह शस्त्र लेकर आने वाले मित्र देशों के युद्धपोत को निशाना बनाए। वह बार-बार अमेरिका और उसके मित्र देशों को इसकी चेतावनी भी दे रहा है। यदि मित्र देशों के युद्धपोत निशाना बने तो फिर मित्र देश युद्ध में सीधे उत्तरने को मजबूर होंगे। यूक्रेन के रूस के खिलाफ



शस्त्र उपलब्ध करा रहे हैं। 25 मार्च को जर्मनी से 1500 स्ट्रेला-विमान भेदी मिसाइलों और 100 स्लॉमरीनगनानों की एक खेप यूक्रेन पहुंची है। अमेरिका व उसके अन्य मित्र देश भी शस्त्र भेज रहे हैं। यह सही है कि वह युद्ध में शामिल नहीं है। उनकी सेनाएं युद्ध में भाग नहीं ले रहीं। उनके सैनिक नहीं लड़ रहे, किंतु यह भी सत्य है कि उनके शस्त्रों और आधुनिक युद्धक सामग्री की बदौलत यूक्रेन अभी युद्ध के मैदान में जमा है। मित्र देशों के राष्ट्राध्यक्ष युद्धरत यूक्रेन के दौरे कर रहे हैं। अभी तक अमेरिकी राष्ट्रपति के यूक्रेन दौरे की खबरें थीं, किंतु उनके कार्यालय ने इन्हें गलत बताया है। यूक्रेन को समर्थन देने के लिए व्हाइट हाउस की तरफ से एक हाई-लेवल

युद्ध में टिके रहने की सबसे बड़ी बजह अमेरिका और उसके मित्र देशों से मिल रही हथियारों की मदद है। रूस शुरू से इसका विरोध करता रहा है। ऐसे में नाटो को सबक सिखाने के लिए रूस यूक्रेन के खिलाफ टेक्टिकल परमाणु हथियारों का इस्तेमाल कर सकता है। टेक्टिकल परमाणु हथियार कम क्षमता के और सीमित एसिया में ही विनाश करते हैं। अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए के डायरेक्टर विलियम जे बर्नस ने कहा है कि यूक्रेन में जीत हासिल करने के लिए रूस टेक्टिकल न्यूक्लियर वेपन का इस्तेमाल कर सकता है। यूक्रेन के खिलाफ हमले शुरू होने के तुरंद बाद ही रूसी राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन ने कहा था कि उन्होंने अपने न्यूक्लियर वेपन तैयार रखे हैं।



मोदी-बाइडन वाता

प्र

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के बीच हुई आभासी शिखरवार्ता के गहरे निहितार्थ हैं। रियायती दर पर भारत को तेल बेचने के रूसी प्रस्ताव को लेकर एकाधिक अमेरिकी बयानों से भ्रम की स्थिति बन गई थी। पश्चिमी मीडिया का एक हिस्सा इन बयानों को अमेरिकी नाखुशी के रूप में पेश करने में जुटा था, लेकिन विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत-अमेरिकी 2+2 वार्ता के बाद आयोजित संवाददाता सम्मेलन में स्पष्ट कर दिया कि रूस से पेट्रो उत्पादों की खरीद के संदर्भ में भारत को लेकर अमेरिका को चिंतित होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यूरोप जितना एक दोपहर में उससे तेल खरीदता है, भारत उतना महीने भर में भी आयात नहीं करता। वाशिंगटन को यह मानना पड़ा है कि भारत का तेल आयात मॉस्को पर आयद प्रतिबंधों का उल्लंघन नहीं है और यूक्रेन युद्ध के मामले में भारत अपनी भूमिका लेने के लिए आजाद है।

रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद दुनिया की बड़ी शक्तियां अब खुलकर आमने-सामने आ चुकी हैं और अमेरिका चाहता है कि रूस पर आर्थिक दबाव बनाए रखा जाए। इसलिए मॉस्को से पेट्रो उत्पादों के अलावा हथियार खरीद के नए समझौतों को लेकर भी उसने अपने तेवर कड़े कर लिए हैं। लेकिन वाशिंगटन को यह समझने की जरूरत है कि रूस के साथ भारत के दशकों पुराने सामरिक संबंध हैं और वह अपने हितों की अनदेखी नहीं कर सकता। यूक्रेन मामले पर संयुक्त राष्ट्र की तमाम वोटिंग के दौरान अनुपस्थित रहकर भी भारत ने यह साफ कर दिया है कि वह अपने कंधे का इस्तेमाल

करने की इजाजत किसी को नहीं देगा। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रुख से भी वाशिंगटन को स्पष्ट हो जाना चाहिए कि भारत वैश्विक शांति और अपने हितों के

रहा है। यह सही है कि अंतरराष्ट्रीय कूटनीति परिस्थितियों से संचालित होती है, लेकिन नाजुक मौकों पर रूस के सहयोग को भारत कैसे भूल सकता है? वह



बीच संतुलन साधना जानता है। प्रधानमंत्री ने बातचीत के दौरान एक बार भी रूस का नाम नहीं लिया।

भारत को अपने पक्ष में करने की अमेरिकी रणनीति समझी जा सकती है। ये दोनों देश दुनिया के दो सबसे बड़े लोकतंत्र हैं। फिर वाशिंगटन जानता है कि चीन पहले से मॉस्को के साथ है। उसके पास मजबूत आर्थिक व सैन्य ताकत के अलावा एक विशाल बाजार भी है, जिसका जवाब सिर्फ भारत हो सकता है। भारत और चीन के तनावपूर्ण संबंधों में भी वह अपने लिए संभावनाएं देख रहा है। चंद रोज पहले उसके उपराष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार दलीप सिंह की अराजनयिक टिप्पणी इसी बात की तस्दीक करती है। अब वह भारत की ऊर्जा व सैन्य जरूरतों में अपनी दिलचस्पी दिखा

भी उस अमेरिका के मुकाबले, जिसने तमाम सुबूतों के बावजूद पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के मामले में भारतीय हितों की हमेशा अनेदखी की? इन सबके बावजूद प्रधानमंत्री ने यूक्रेन के मासूम नागरिकों की हत्या की तीखी निंदा की है। और यह भारत का पुराना रुख है, वह किसी अमानवीय कृत्य की हिमायत नहीं कर सकता। निस्पर्देह, भारत को भी अमेरिका के साथ और सहयोग की ओराश्यकता है, पर वाशिंगटन को समझना होगा कि इकतरफा दबाव का दौर अब खत्म हो चुका है। यूरोप का रूस से जारी कारोबार इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। इसलिए परस्पर सम्मान और समझदारी से ही भारत-अमेरिकी संबंध भी एक नई ऊंचाई को छू सकेंगे।



कांग्रेस को मजबूत कर पाएंगे प्रशांत किशोर ?

क ई दौर तक चली बैठकों और मुलाकातों के दौर के बाद कांग्रेस में प्रशांत किशोर की एंट्री हो गई है। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं से कह दिया है कि प्रशांत किशोर पार्टी में शामिल होंगे और 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए रणनीति बनाने का काम करेंगे। इससे पहले छत्तीसगढ़ के छठ्ठ भूपेश बघेल ने सोनिया गांधी से पीके के मसले पर बात की। राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत ने भी कहा है कि प्रशांत किशोर जैसे स्ट्रैटजिस्ट का अनुभव कांग्रेस के लिए फायदेमंद होगा।

इन अपृष्ठ खबरों को फिलहाल एक तरफ कर दिया जाए तो भी इतना तो है ही कि इन मुलाकातों और बैठकों ने कांग्रेस को एक बार फिर राजनीतिक हल्कों की औपचारिक-अनौपचारिक चर्चा के केंद्र में ला दिया है। न केवल इस पर बात होने लगी है बल्कि विभिन्न पार्टियों में और स्वतंत्र प्रेसकों के बीच इसका आकलन भी होने लगा है कि अगर सचमुच प्रशांत फिशोर कांग्रेस के साथ जुड़ते हैं तो आगे के चुनावी परिदृश्य पर किस तरह का और कितना प्रभाव पड़ सकता है। पांच राज्यों के हालिया विधानसभा चुनावों में मिली करारी शिकस्त के बाद पार्टी के अंदर और बाहर कांग्रेस नेतृत्व को लेकर जिस तरह का निराशाजनक माहौल बना दिख रहा था, उसमें यह बदलाव भी कम बड़ी बात नहीं है। लेकिन बात ऐसे सांकेतिक बदलावों तक रीमिट रही तो काम नहीं चलेगा। अगर इन मुलाकातों को इतनी दिलचस्पी से देखा

जा रहा है तो इसका कारण ही यह है कि बहुतों को इनमें हालात बदलने की संभावना नजर आ रही है। प्रशांत किशोर से न तो कांग्रेस नेताओं की बातचीत नई है और



न ही कांग्रेस में उनसे सहयोग लेने का विचार नया है। अब तक ऐसे एकाधिक प्रस्ताव कुछ दूर चलकर बिना कोई नतीजा दिए समाप्त हो गए। इसके बावजूद जब इस बार खुद कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने इस प्रस्ताव को इतनी अहमियत दी तो इसका संदेश साफ है कि पार्टी सर्वोच्च स्तर पर इस बारे में मन बना चुकी है। यानी अब उसे यह स्वीकार करने में कोई दिक्षिण नहीं है कि उसे कांग्रेस के रिवाइबल के लिए बाहर के किसी शख्स की

मदद लेने की जरूरत है और यह भी कि उसे काम करने के अंदाज में, फैसले करने के ढंग में और पार्टी चलाने के तौर-तरीकों में बड़े बदलाव करने होंगे। जहां तक

प्रशांत किशोर की बात है तो बतौर पोल स्ट्रेजिस्ट वह अपनी काविलियत कई बार साबित कर चुके हैं। उनका विपक्ष की कई पार्टियों के नेतृत्व से अच्छा तालमेल है। यानी अगर कांग्रेस के साथ उनके सहयोग का यह प्रस्ताव अमल में आता है तो उसका फायदा न केवल कांग्रेस को बल्कि पूरी विपक्षी राजनीति को मिल सकता है। यह उन सबके लिए राहत की बात हो सकती है जो लोकतंत्र में मजबूत विपक्ष को आवश्यक मानते हैं।



समाज की सक्रिय सहभागिता से मध्यप्रदेश के सुशासन प्रयासों में मिली है सफलता

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि आम जनता की सक्रिय सहभागिता से ही मध्यप्रदेश सुशासन के क्षेत्र में देश के सामने उदाहरण बनकर खड़ा हो सका है। आज से 15 वर्ष पहले मध्यप्रदेश जिन क्षेत्रों में बहुत पीछे था और बीमारू राज्य कहलाता था, उन क्षेत्रों में लगातार प्रगति के प्रयास किए गए, जिसका परिणाम यह है कि मध्यप्रदेश पहले विकासशील राज्य बना और अब विकसित प्रदेशों की पर्कि में खड़ा है। मध्यप्रदेश में जन-भागीदारी से विकास का मॉडल लागू किया गया है। पिछले 02 साल में कोविड महामारी के नियंत्रण में इस मॉडल की उपयोगिता सिद्ध हुई। प्रधानमंत्री श्री मोदी भी विकास के लिए जन-भागीदारी पर जोर देते हैं। वे हमारे प्रेरक हैं। मध्यप्रदेश निरंतर जन-भागीदारी के साथ विभिन्न क्षेत्रों में विकास की गति तेज करने का कार्य करेगा।

मुख्यमंत्री श्री चौहान नई दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर में आज मध्यप्रदेश सुशासन और विकास रिपोर्ट 2022 के लांचिंग समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में अनेक केंद्रीय मंत्री, राज्य सरकार के मंत्री, भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारी और मध्यप्रदेश कैडर के अखिल भारतीय स्तर के प्रशासनिक, पुलिस और बन सेवा के अधिकारी भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश में अनेक योजनाओं के क्रियान्वयन में अग्रणी रहकर सफलता प्राप्त की है। मध्यप्रदेश की उपलब्धियों में प्रधानमंत्री जी का निर्देशन महत्वपूर्ण रहा है। श्री मोदी भारत राष्ट्र के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। मध्यप्रदेश में 03 लाख किलोमीटर लंबाई की सड़कें विभिन्न योजनाओं में निर्मित की गईं। बिजली का उत्पादन 05 हजार मेगावॉट से बढ़कर 21 हजार मेगावॉट तक पहुँचाया गया। कई

बार कृषि कर्मण अवार्ड प्राप्त करने वाले मध्यप्रदेश ने पंजाब और हरियाणा को गेहूँ उपार्जन में पीछे छोड़ दिया

प्रतिशत का योगदान दे रहा है। सकल घरेलू उत्पाद में बीते दशक में 200 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। कार्यक्रम



है। मध्यप्रदेश का सोने जैसे दानों वाला गेहूँ अमेरिका सहित अनेक देशों में निर्यात होता है। अब गेहूँ के निर्यात के लिए प्रयास बढ़ाए जा रहे हैं। प्रदेश में एक्सपोर्ट प्रोमोशन काउंसिल भी बनाई गई है। मध्यप्रदेश में सिंचाई योजनाओं से लाभान्वित सिंचाई रकबा 43 लाख हेक्टेयर से अधिक हो गया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने केन-बेतवा योजना की मंजूरी से मध्यप्रदेश के बड़े इलाके को लाभान्वित करने की पहल की है। मध्यप्रदेश में अन्य नदी जोड़ें परियोजनाएँ भी क्रियान्वित हो रही हैं। प्रदेश की विकास दर 19.7 प्रतिशत देश में सर्वाधिक है। देश की अर्थ-व्यवस्था में मध्यप्रदेश 4.6

में केंद्रीय कृषि एवं किसान-कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, केंद्रीय नागरिक उद्ययन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, केंद्रीय ग्रामीण विकास और इस्मात राज्य मंत्री श्री फग्गन सिंह कुलस्ते, प्रदेश के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, कृषि मंत्री श्री कमल पटेल, सिंगापुर के हाइ-कमिशनर श्री वॉक, मध्यप्रदेश के सांसद और प्रतिनियुक्त पर नई दिल्ली में पदस्थ मध्यप्रदेश कैडर के भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा और भारतीय बन सेवा के अधिकारी, सुशासन संस्थान की सीईओ सुश्री जी.क्ली. रश्म और एसीईओ श्री लोकेश शर्मा भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

अपराधियों पर करेगा वार **'मामा' का बुलडोजर!**



माफियाओं पर बरस रहा शिव का बुलडोजर

15 साल से अधिक समय से एमपी के मुख्यमंत्री रहे शिवराज सिंह चौहान की छवि एक ऐसे राजनेता के तौर पर है जिसने जीवन से लेकर सियासत के शिखर तक का सफर तय किया है। राजनीति में पांव-पांव वाले मामा के नाम से पहचाने जाने वाले मुख्यमंत्री अपने चौथे कार्यकाल में बेहद अक्रामक हो गए हैं। अब उनकी छवि पांव-पांव वाले मामा की जगह बुलडोजर मामा की बनने लगी है। जानकारी के अनुसार चौथी पारी में फ़ैट फुट पर खेलने वाले सीएम शिवराज के दो साल का कार्यकाल पूरा करने पर भोपाल से बीजेपी विधायक रामेश्वर शर्मा के बुलडोजर मामा के जश्न में खुद मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी पहुंचे। मुख्यमंत्री शिवराज की मौजदूरी में बीजेपी विधायक रामेश्वर शर्मा ने बुलडोजर मामा जिंदाबाद के नारे भी लगाए। दरअसल सिंह चौहान के पांव-पांव वाले मामा से बुलडोजर मामा तक बनने का सफर भी अपने आप में अनोखी बात है। चौथी पारी में मुख्यमंत्री का अंदाज पिछले तीन कार्यकालों से बिल्कुल ही अलग नजर आया है। आम तौर पर बेहद सौम्य और शांत नजर आने वाले शिवराज सिंह सार्वजनिक मंचों से अपराधियों के खिलाफ बुलडोजर चलाने का एलान कर रहे हैं।

आपको बता दें कि रायसेन के सिलवानी पहुंचे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मैं फिर कहना चाहता हूं गुण्डे और बदमाश यह ना समझना कि कांग्रेस और कमलनाथ की सरकार है। यह मामा का राज है गड़बड़ करी तो छोड़ना नहीं। यह ट्रॉट करने वाले जितने चिल्ह रहे हैं चिल्हाते रहें, गरीब की मौत में भी राजनीति करते रहें। उन्होंने कहा कि लेकिन मामा का बुलडोजर चला है अब रुकेगा नहीं जब तक बदमाशों को दफन नहीं कर देगा। मध्य प्रदेश में जितने गुण्डे और अपराधी हैं वह भी सुन ले, अगर गरीब कमज़ोर की तरफ हाथ उठा तो, मकान खोदकर मैदान बना दूंगा।



चैन से नहीं रहने दूंगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि बात चाहे माफियाओं के खिलाफ ताबड़तोड़ अभियान की हो या सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन में लापरवाही बरतने वाले सरकारी अफसरों पर कार्रवाही का शिवराज बड़े फैसले लेने से चूक नहीं रहे हैं। मुख्यमंत्री हर फैसला 100% स्पॉट कर रहे हैं। मुख्यमंत्री शिवराज जिस अंदाज प्रदेश के गुंडा-माफियाओं के खिलाफ ऐलानी तौर पर बुलडोजर चलाने की चेतावनी दे रहे हैं वह उनकी सियासी मजबूरी भी है। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में बीजेपी की सत्ता वापसी का बड़ा कारण 'बाबा का बुलडोजर' माना गया। दरअसल उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपराधियों के खिलाफ बुलडोजर चलाकर इसके सख्त प्रशासन की छवि बनाने के साथ जीत का प्रतीक बना दिया। और अब मध्य प्रदेश में शिवराज सरकार अब बुलडोजर के सहारे अपनी राजनीति

आगे बढ़ना शुरू कर दिया। ऐसे में अब जब मध्य प्रदेश में 2023 के विधानसभा चुनाव में लगभग डेढ़ साल का ही वक्त बचा है तब भाजपा संगठन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की छवि बुलडोजर मामा के तौर पर गढ़ने में जुट गई है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के बुलडोजर मामा की छवि को राजनीति के जानकार काफी अहम मानते हैं। राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि बीजेपी के सबसे अधिक समय तक मुख्यमंत्री रहने का रिकॉर्ड बनाने वाले शिवराज सिंह चौहान राजनीति की नब्ज को समझने में सबसे आगे है। बुधनी से पांव-पांव भैया से अपना सियासी सफर शुरू करने वाले शिवराज सिंह की छवि अगर बुलडोजर मामा के तौर पर गढ़ी जा रही है। तो यह 2023 के मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव का चुनावी शंखनाद होने के साथ एक रणनीति का हिस्सा भी है।



कश्मीर से कन्याकुमारी तक भाजपा एक भारत, श्रेष्ठ भारत का संकल्प

भा

रतीय जनता पार्टी ने अपना 42वां स्थापना दिवस देशभर में पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हर राज्य व जिले में पार्टी मुख्यालय पर कार्यक्रम आयोजित कर भाजपा के झँडे फहराए गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने भाषण की शुरुआत में कहा कि मेरी प्रार्थना है कि मां स्कंदमाता का आशीर्वाद देशवासियों पर, भाजपा के प्रत्येक कर्मठ कार्यकर्ता और प्रत्येक सदस्य पर हमेशा बना रहे। आज नवरात्रि की पांचवीं तिथि भी है, आज के दिन हम सभी मां स्कंदमाता की पूजा करते हैं। पीएम मोदी ने कहा कि हम सबने देखा है कि मां स्कंदमाता कमल के आसन पर विराजमान रहती हैं और अपने दोनों हाथों में कमल का फूल थामे रहती हैं। मैं देश और दुनिया भर में फैले भाजपा के प्रत्येक सदस्य को बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कश्मीर से कन्याकुमारी, कच्छ से कोहिमा तक भाजपा एक भारत, श्रेष्ठ भारत के संकल्प को निरंतर सशक्त कर रही है। इस बार का स्थापना दिवस 3 और वजहों से महत्वपूर्ण हो गया है। पहला कारण है कि इस समय हम देश की आजादी के 75 वर्ष का पर्व मना रहे हैं, आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। ये प्रेरणा का बहुत बड़ा अवसर है। दूसरा कारण है- तेजी से बदलती हुई वैश्विक परिस्थितियां, बदलता हुआ ग्लोबल ऑर्डर। इसमें भारत के लिए लगातार नई संभावनाएं बन रही हैं। तीसरा कारण भी उतना ही अहम है। कुछ सप्ताह पहले चार राज्यों में भाजपा की डबल इंजन की सरकारें वापस लौटी हैं। तीन दशकों के बाद राज्यसभा में किसी पार्टी के सदस्यों की संख्या 100 तक पहुंची है प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि वैश्विक दृष्टिकोण से देखें या राष्ट्रीय दृष्टिकोण से, भाजपा का दायित्व, भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता का दायित्व लगातार बढ़ रहा है। इसलिए भाजपा का प्रत्येक

कार्यकर्ता, देश के सपनों का प्रतिनिधि है, देश के संकल्पों का प्रतिनिधि है। इस अमृत काल में भारत की सोच आत्मनिर्भरता की है, लोकल को ग्लोबल बनाने

रहता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जब पूरी दुनिया दो विरोधी धरों में बंटी हो, तब भारत को ऐसे देश के रूप में देखा



की है, सामाजिक न्याय और समरसता की है प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इहीं संकल्पों को लेकर एक विचार बीज के रूप में हमारी पार्टी की स्थापना हुई थी। इसलिए ये अमृत काल भाजपा के हर कार्यकर्ता के लिए कर्तव्य काल है। आज दुनिया के सामने एक ऐसा भारत है जो बिना किसी डर या दबाव के, अपने हितों के लिए अड़िगा

जा रहा है, जो दृढ़ता के साथ मानवता की बात कर सकता है। हमारी सरकार राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखते हुए काम कर रही है। आज देश के पास नीतियाँ भी हैं, नियत भी है। आज देश के पास निर्णय शक्ति भी है, और निश्चित शक्ति भी है। इसलिए, आज हम लक्ष्य तय कर रहे हैं, उन्हें पूरा भी कर रहे हैं।



शिल्प एवं कला से होगा आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश का स्वप्न साकार

आ

तम-निर्भर मध्यप्रदेश के स्वप्न को साकार बनाने में स्थानीय शिल्पकला एक मजबूत कड़ी है। परम्परागत कला को रोजगार के रूप में विकसित करके ही आत्म-निर्भरता के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। इस मंत्र को प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आत्मसात कर लिया है। आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के रोडमैप के लिए तीन दिन तक विषय विशेषज्ञों, आर्थिक नीति सलाहकारों के साथ अगस्त-2020 से विस्तृत विचार-मंथन के उपरांत उसमें स्थानीय संसाधनों का बैठकर इस्टेमाल कर स्थानीय कलाकारों को प्रोत्साहित करना, एक जिला-एक उत्पाद, लोकल फॉर वोकल जैसे आधारभूत विषय उभर कर आऐ है, इन पर कार्य करते हुए 2023 तक आत्म-निर्भरता में लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा।

देश में शिल्पकला की अक्षुण्ण परम्परा

भारत वर्ष में शिल्पकला की अक्षुण्ण परम्परा रही है, इससे से 2500 वर्ष पूर्व हड्डपा एवं सिंधु घाटी की सभ्यता से लेकर आधुनिक भारत और अब आत्म-निर्भर भारत से आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश तक शिल्पकला की यह परम्परा निंतर जारी है। समृद्ध भारत में शिल्पकारों की कला की खनक को पूरी दुनिया सदैव से महसूस करती आ रही है। कोरोना काल ने स्थानीय बाजार, स्थानीय उत्पाद के महत्व को सिद्ध कर दिया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आत्म-निर्भर भारत से लेकर आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के स्वप्न को साकार बनाने में ग्रामीण भारत अहम् भूमिका अदा कर रहा है। ग्रामीण और शहरी अंचल में रहने वाले स्थानीय शिल्पी परम्परागत शिल्प तैयार कर अपनी अलग पहचान बनाने में सफल हो रहे हैं। यही शिल्प उनकी रोजी-रोटी का

जरिया बना है। इनके उत्पादों को बाजार मुहैया कराने के लिये एक प्लेटफार्म प्रदान करने का काम राज्य सरकार द्वारा किया जाता है।



अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मिल रही है पहचान

चंदेरी और महेश्वर के शिल्पियों ने अपने सधे हुए हाथों से करवों में ऐसा ताना-बना बुना कि, पूरी दुनिया उनकी कला की दीवानी हो गई है। सूती और रेशमी धागे से तैयार साड़ियाँ, सलवार-सूट, बरबस ही अपना ध्यान खींच लेती हैं। इसी तरह धार जिले में बाघ की ब्लॉक प्रिंट ने भी अपनी अलग पहचान बनाई है। धार जिले के धरा प्रिंट सेंटर में माण्डू क्षेत्र की आदिवासी युवतियों द्वारा ब्लॉक प्रिंट चंदेरी और महेश्वरी साड़ियाँ तैयार की जा रही हैं। इनकी डिमांड ऑट्रेलिया और सिंगापुर जैसे विकसित शहरों में बढ़ रही है।

ई-कामर्स के माध्यम से लोकल फॉर ग्लोबल बनाने की पहल

मध्यप्रदेश में मई-1990 से ग्रामोद्योग विभाग स्थापना के साथ ही ग्रामोद्योग के सुदृढ़ीकरण के लिए लगातार अग्रसर है। हाथकरघा संचालनालय, रेशम संचालनालय के साथ-साथ संत रविदास म.प्र. हस्तशिल्प एवं हाथकरघा विकास निगम, मध्यप्रदेश माटी कला बोर्ड के माध्यम से स्थानीय शिल्पियों का कौशल उन्नयन कर उनके

उत्पादों को बाजार मुहैया कराये जा रहे हैं।

लोकल फॉर वोकल के बाद अब लोकल फॉर ग्लोबल बनाने के तर्ज पर प्रदेश के शिल्प और शिल्पकारों को नई पहचान दिलाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार का खादी-ग्रामोद्योग विभाग सक्रिय है। ग्रामोद्योग उत्पादों को ई-कामर्स प्लेटफार्म से जोड़ने के जो प्रयास किए जा रहे हैं, उससे हमारे कारीगरों के हौसलों और कला को नई उड़ान मिल सकी है। खादी ग्रामोद्योग बोर्ड तथा म.प्र. हस्तशिल्प तथा हाथकरघा विकास निगम मृगनयनी प्रदेश और प्रदेश के बाहर एम्पोरियम और शो-रू के माध्यम से उत्पादों को बाजार मुहैया करा रहा है।



शिक्षा/कैरियर

ल

योगिकी जीवन और समाज के हर पहलू को छू रही है। आजादी के बाद से, हमारे देश में तकनीकी शिक्षा प्रणाली काफ़ी बढ़े। आकार की प्रणाली के रूप में उभरी है, जो देश भर में संस्थानों में प्रमाण पत्र, डिप्लोमा, डिग्री, स्नातकोत्तर डिग्री और डॉक्टरेट स्तर पर विभिन्न प्रकार के व्यापारों और विषयों में शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करती है।

भारत में उच्च शिक्षा का सामान्य परिदृश्य वैश्विक गुणवत्ता

और विशेष क्षेत्रों में अनुसंधान, तकनीकी विकास और आर्थिक प्रगति के विभिन्न पहलुओं को पूरा करना।

इसके अलावा, बेरोजगारी की इस उम्र में, केवल तकनीकी शिक्षा नौकरी और आरामदायक रहने का आश्वासन दे सकती है, जो लोग अपनी भी पारंपरिक संस्थानों में हैं, परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं, जिनके पास आधुनिक प्रणालियों में थोड़ी प्रारंगिकता है, उन्हें रोजगार के अवसर नहीं मिलते हैं और, स्वाभाविक रूप से, वे निराशा के

पीड़ित बनने के लिए खत्म हो जाते हैं और खुद को आधुनिक दुनिया के मुख्यधारा से अलग कर पाते हैं। किसी भी विशेषज्ञता और पेशेवर कौशल के बिना उनके स्टीरियो टाइप की गई सामान्य शिक्षा के साथ वे मानव समाज की प्राप्ति और समृद्धि में योगदान करने के लिए कुछ भी हासिल नहीं करते हैं। वे इस बारे में काफ़ी जानते हैं और यह जागरूकता उन्हें निराशाजनक छोड़ देती है।

यह सिर्फ एक अंत नहीं था, यह आधुनिक भारत का सपना था और उस सपने को साकार करने के लिए तकनीकी शिक्षा को उचित महत्व दिया गया था।

संभावनाएं और पहल

भारत उच्चतम क्षमता वाले स्नातकों के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन इसकी आबादी की तुलना में केवल कुछ ही उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी शिक्षा प्राप्त करते हैं। भारत ने वर्षों से तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता और उपलब्धता को काफ़ी हद तक मजबूत किया है, जो स्नातक की रोज़गार दर को दोगुना कर रहा है, जो अब भारतीय उद्योग की जरूरतों के अनुरूप बेहतर है।

इसलिए, पारंपरिक अध्ययन का समर्थन करने और तकनीकी शिक्षा को पढ़ाने की सख्त जरूरत है, क्योंकि इससे न केवल देश के विकास में मदद मिलेगी, बल्कि वह कौशल रखने वाले व्यक्ति भी होंगे। तकनीकी शिक्षा, शिक्षा का एक हिस्सा है, जो सीधे विनिर्माण और सेवा उद्योगों में आवश्यक जानकारी और कौशल प्राप्त करने से संबंधित है। तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए, भारत में दो संरचनात्मक धाराएँ हैं - औपचारिक और अनौपचारिक। पॉलिटेक्निक, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायिक करण की केंद्रीय प्रयोजित योजना भारत में

तकनीकी शिक्षा के औपचारिक स्रोतों में से एक है। जबकि अल्पकालिक तकनीकी पाठ्यक्रम प्रदान करने वाले स्वयं-शिक्षण और छोटे निजी संस्थान अनौपचारिक शिक्षा के अंतर्गत आते हैं।

भारत में नए औद्योगिक और श्रमिक रुझानों ने स्पष्ट रूप से तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता को निर्दिष्ट किया है, लेकिन माध्यमिक स्तर की शिक्षा में तकनीकी शिक्षा का आधार



स्टडी टिप्स

मानकों के बराबर नहीं है। इसलिए, देश के शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता के बढ़ते मूल्यांकन के लिए पर्याप्त और्जात्य है। तकनीकी शिक्षा के मानक को बनाए रखने के लिए, अग्रिम भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) की स्थापना 1945 में हुई थी। एआईसीटीई मानदंडों और मानकों की योजना, निर्माण और रखरखाव, मान्यता के माध्यम से गुणवत्ता आश्वासन, प्राथमिक क्षेत्रों में वित्त पोषण के लिए जिमेदार है। निगरानी और मूल्यांकन, प्रमाणीकरण और पुरस्कारों की समानता बनाए रखना और देश में तकनीकी शिक्षा के समक्ष और एकीकृत विकास और प्रबंधन को सुनिश्चित करना।

यह महत्वपूर्ण क्यों है?

भारत, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उम्र देख रहा है। आधुनिक युग में तकनीकी शिक्षा की भारी मांग है। उम्र में विकसित जीवन का पैटर्न कुछ पचास साल पहले हमारे समाज में मिलने वाले व्यक्ति से बहुत अलग है।

कई मामलों में पेशेवर तकनीकी शिक्षा द्वारा सामान्य शिक्षा को प्रतिस्थापित किया गया है। तकनीकी शिक्षा रोजगार और सफल करियर के लिए अच्छा अवसर प्रदान करती है। तकनीकी शिक्षा समग्र शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा हिस्सा योगदान देती है और हमारे देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में, तकनीकी शिक्षा को विभिन्न स्तरों पर प्रदान किया जाता है, जैसे कि शिल्प कौशल, डिप्लोमा और डिग्री, स्नातकोत्तर

मजबूत होना चाहिए और छात्रों को इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए एक स्पष्ट मार्ग बनाया जाना चाहिए। तकनीकी विश्वविद्यालयों के साथ उच्च गुणवत्ता की अधिक तकनीकी डिग्री स्थापित की जानी चाहिए।

संबंधित मुद्दे

तकनीकी शिक्षा विशिष्ट व्यापार, शिल्प या पेशे के ज्ञान प्रदान करती है। तकनीकी शिक्षा, यानी, कुछ कला या शिल्प में शिक्षा एक बहुत बड़ी आवश्यकता है। हम उस समय में रह रहे हैं, जब शिक्षा की पुरानी अवधारणाओं में बदलाव आया है। हमें उदार शिक्षा की आवश्यकता नहीं है, शिक्षा जो ललित कला, मानविकी, सांस्कृतिक पैटर्न और व्यवहार में प्रशिक्षण का तात्पर्य है और इसका उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व को विकसित करना है, क्योंकि यह स्वतंत्रता दिवसों में था। हमें कृशल श्रमिकों की जरूरत है। हर साल करोड़ों रुपए के निर्मित सामान आयत किए जा रहे हैं। भोजन की कमी है। हमारे उद्योग अपनी तक बचपन में हैं। हमें इंजीनियर मनुष्यों की जरूरत है। मकई के उत्पादन में बुद्धि के लिए हमें मर्शीनीकृत खेती की जरूरत है। यह सब केवल तभी संभव है, जब हम अपनी शिक्षा में तकनीकी बदलाव दें और यदि कुशल श्रम उपलब्ध कराया जाए।

जैविक खेती में देश में अग्रणी है मध्यप्रदेश

दे

श के अन्य प्रदेश आज जब जैविक खेती की दिशा में कार्य शुरू कर रहे हैं तो मध्यप्रदेश की तारीफ करनी होगी जहाँ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने वर्ष 2011 में ही जैविक कृषि नीति तैयार कर उस पर अमल शुरू कर दिया था। इसी का परिणाम है कि मध्यप्रदेश को न केवल जैविक कृषि लागू करने वाला देश के पहले प्रदेश बल्कि देश में सर्वाधिक प्रमाणित जैविक कृषि क्षेत्र वाले प्रदेश होने का गौरव भी हासिल है। कृषि के क्षेत्र में मध्यप्रदेश की अपनी विशेषताएँ हैं और यह पिछले डेढ़ दशक में प्रमाणित भी हुआ है। इस असे में प्रदेश की कृषि विकास दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। खेती-किसानी नुकसान के जाल से बाहर निकली। अन्नदाताओं को उनकी मेहनत का फल वाचिक दामों के रूप में मिला। प्राकृतिक आपदाओं और मानसून की बेरुखी से होने वाले नुकसान के समय में सरकार के किसानों के साथ खड़े होने से प्रदेश का कृषि परिदृश्य लगातार बेहतर हुआ। आर्गेंनिक बर्लंड रिपोर्ट 2021 के आधार पर वर्ष 2019 में विश्व का 72.3 मिलियन हेक्टर क्षेत्र जैविक खेती हेतु उपयोग में लिया गया है। इसमें एशिया का 5.1 मिलियन हेक्टर क्षेत्र भी शामिल है। भारत में भी पिछले कुछ वर्षों में जैविक खेती में वृद्धि हुई है जिसमें मध्यप्रदेश जैसे राज्यों का विशेष योगदान है। इसका मुख्य कारण अधिक रासायनिक खाद्यों एवं कीटनाशकों से होने वाला दुष्प्रभाव है, जिसने सरकार को इस दिशा में विचार करने के लिए प्रेरित किया। जैविक खेती के अंतर्गत मुख्यतः खाद्यान्न फसलें, दलहन, तिलहन, सब्जियाँ तथा बागान वाली वाली फसलों का उत्पादन किया जा रहा है। इन सब फसलों में जैविक खेती का बढ़ता प्रचलन मुख्यतः उपभोक्ता की माँग पर आधारित है। उपभोक्ता की माँग मुख्यतः खाद्य उत्पाद की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। पारम्परिक खेती में बढ़ते रसायनों का उपयोग तथा उनके कृप्रभाव, दूरगमी स्तर पर उपभोक्ता में अविश्वास का कारण बन रहे हैं। जैविक खेती से उत्पन्न खाद्य उत्पादों की विदेशों में बढ़ती माँग भी इसके महत्व को प्रदर्शित करती है। मुख्यतः ऑस्ट्रेलिया, जापान, कनाडा, न्यूजीलैंड, स्विट्जरलैंड, इंडिया, संयुक्त अरब अमीरात तथा वियतनाम जैसे देशों में निर्यात की संभावनाएँ बनी हैं। मुख्यमंत्री ने कृषि निर्यात पर विशेष ध्यान देने के लिये कहा है। इस दृष्टि से मध्यप्रदेश के लिये भी भविष्य में जैविक उत्पाद के निर्यात की नई संभावनाएँ बनेंगी। जैविक खेती: प्रदेश में जैविक खेती का कूल क्षेत्र लगभग 16 लाख 37 हजार हेक्टेयर है, जो देश में

सर्वाधिक है। जैविक उत्पाद का उत्पादन 14 लाख 2 हजार मी.टन रहा, जो क्षेत्रफल की भाँति ही देश में सर्वाधिक है। जैविक खेती को प्रोत्साहन स्वरूप प्रदेश में कुल 17 लाख 31 हजार क्षेत्र हेक्टेयर जैविक प्रमाणिक है, जिसमें से 16 लाख 38 हजार एपीडा से और 93 हजार हेक्टेयर क्षेत्र, पी.जी.एस. से पंजीकृत है। इस तरह पंजीकृत जैविक क्षेत्र के मामले में भी मध्यप्रदेश देश में अग्रणी है। प्रदेश ने पिछले वित्त वर्ष

रासायनिक उर्वरक, कृषि रसायन आदि का उपयोग कर रहे हैं। इस दृष्टि से अधिकांश जनजातीय जिले जैसे मंडला, डिडोरी, बैतूल, झाबुआ, अलीराजपुर आदि जैविक कृषि विकास के अनुकूल है। गौ-वंश आधारित ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था प्रदेश में प्राकृतिक/जैविक खेती के विस्तार को मिशन मोड में गति देने में मददगार प्रमाणित होने वाली है। जैविक खेती में प्रदेश को देश में अग्रणी बनाने में



में 2 हजार 683 करोड़ रुपये के मूल्य के 5 लाख मी.टन से अधिक के जैविक उत्पाद निर्यात किये हैं। प्रदेश का जैविक उत्पाद निर्यात लगातार तेजी से बढ़ रहा है। वर्ष 2020-21 में प्रदेश में 5 लाख 41 हेक्टेयर में जैविक फसलों की बोनी की गई। अब भारत सरकार की सहायता से प्रदेश में प्राकृतिक कृषि पद्धति के अंतर्गत क्लस्टर आधारित कार्यक्रम लिया गया है। इस वर्ष प्रदेश में 99 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती का लक्ष्य है। प्रदेश जैविक खेती की अपार संभावनाओं से पूरित है। यहाँ सभी धान्य फसल, सब्जियाँ, फल, मसाले, सुर्गाधित एवं औषधीय फसलों न्यूनतम रासायनिक इनपुट के उपयोग से ली जाती हैं। प्रदेश के पास प्राकृतिक चारागाहों, प्राकृतिक उपचानों, सुदूर जनजातीय जिलों में अप्रदूषित कृषि भूमि का बड़ा क्षेत्र और नर्मदा घाटी के उपजाऊ क्षेत्र उपलब्ध है। साथ ही प्रदेश के प्राकृतिक एवं घने वनों में प्रचुर मात्रा में पलाश, रोहिणी, इत्यादि के पुष्प भी उपलब्ध हैं। प्रदेश में कई जिले, ग्राम, विकासखण्ड और ग्राम पंचायत क्षेत्र ऐसे हैं, जो राज्य औसत से कम से कम 50 से 60 प्रतिशत कम बाह्य आदान जैसे

परम्परागत कृषि विकास योजना का भी योगदान रहा है। योजना में भारत सरकार द्वारा अभी तक 3,728 क्लस्टर अनुमोदित किये गये हैं। इन क्लस्टरों में करीब एक लाख 16 हजार कृषक शामिल हैं, जो सभी पीजीएस पोर्टल पर पंजीकृत हैं। पंजीकृत कृषकों के जैविक उत्पादों की स्थानीय स्तर पर तथा जैविक केन्द्र, मंडला और जबलपुर के माध्यम से मार्केटिंग में मदद की जा रही है। प्रदेश में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2008 से अब तक के अरसे में राष्ट्रीय विकास योजना में भी 20 परियोजनाएँ स्वीकृत की गई हैं। प्रमुख रूप से नाडेप एवं बर्मा कम्पोस्ट पिट निर्माण, जैव उर्वरक एवं पोषक तत्व वितरण, जैविक खेती जागरूकता अभियान, नर्मदा नदी के किनारों के सभी जिलों के सभी विकासखण्डों में जैविक खेती कार्यक्रम, जैविक प्रक्षेत्रों की स्थापना, हरी खाद के लिए सहायता, जैव उर्वरकों की निर्माण इकाइयों की स्थापना, नर्मदा किनारे के गाँवों में बायोगैस प्लांट का निर्माण और जैव उर्वरकों के परीक्षण के लिए प्रयोगशालाओं के निर्माण की इन परियोजनाओं से जैविक खेती को प्रदेश में गति मिली है।



हर क्षेत्र में आगे आज की नारी

“ इकसवीं शताब्दी में, महिलाओं ने ज सिर्फ धन अर्जन करने में अपनी भूमिका दर्ज कराई है बल्कि भावी संगठनों का निर्माण करते हुए अग्रिमताओं का स्वरूप भी परिवर्तित किया है। हाल के वर्षों में, महिलाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। आज नारी ने भूमिका के बदलाव को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया है अपनी इच्छा शक्ति के बल पर सफल भी हुई लेकिन आज वो एक अनोखी दुविधा से गुजर रही है। उसे अपने प्रति पुरुष अथवा समाज का ही नहीं बल्कि उसका खुद का भी नजरिया बदलने का इंतजार है।

नारी आज के बदलते परिवेश में जिस तरह पुरुष वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है, वह समाज के लिए एक गर्व और सराहना की बात है। आज राजनीति, टेक्नोलॉजी, सुरक्षा समेत हर क्षेत्र में जहां जहां महिलाओं ने हाथ आजमाया उसे कामयाबी ही मिली। अब तो ऐसी कोई जगह नहीं है, जहां आज की नारी अपनी उपस्थिति दर्ज न करा रही हो। और इतना सब होने के बाद भी वह एक गुहलक्ष्मी के रूप में भी अपना स्थान बनाए हुए है। नारी, स्त्री, महिला वनिता, चाहे जिस नाम से पुकारो नारी तो एक ही है। ईश्वर की वो रचना जिसे उसने सृजन की शक्ति दी है, ईश्वर की वो कल्पना जिसमें प्रेम त्याग सहनशीलता सेवा और करुणा जैसे भावों से भरा हृदय है।

भारतीय शास्त्रों में कहा गया है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान काफी ऊँचा है। वैदिक युग में समाज में नारी की भूमिका बेहद अहम थी। लैंकिन कालांतर में पुरुषों की वर्चस्ववादी सोच ने महिलाओं को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया। महिलाओं को अबला समझा जाने लगा। धीरे-धीरे महिलाएं अपने सम्मान के लिए आगे बढ़ने लगी और हाल के दिनों में भारत समाज के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धि हासिल की। चाहे वो शिक्षा का मामला हो या खेलकूद का, हर क्षेत्र में महिलाएं आगे बढ़ रही हैं। इसके बावजूद बालिकाओं की संख्या कम होने, बाल विवाह, दहेज, महिलाओं के

खिलाफ हिंसा, अनेक स्तरों पर शोषण और भेदभाव जैसी बुराइयां मौजूद हैं। इन बुराइयों के खिलाफ एक जंग की जरूरत है। पहले नारी का स्थान घर की चारदीवारी तक सीमित था लेकिन आज वो हर सीमा

रूप में साबित किया है। भारतीय महिला उद्यमी वर्ग ने नए उद्यमों को आरंभ करने एवं उनका सफलतापूर्वक संचालन करने में बेहतर कार्य-निष्ठादान के कई उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।



को चुनौती दे रही है। चाहे राजनीति का क्षेत्र हो चाहे सामाजिक, चाहे हमारी सेनाएँ हों चाहे कारपोरेट जगत, आज की नारी हर क्षेत्र में सफलता पूर्वक दस्तक देते हुए देश की तरक्की में अपना योगदान दे रही है।

विगत तीन दशकों में, महिलाओं ने कॉरपोरेट जगत में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है, सामाजिक नैतिकता की बाध्यताओं को पार करते हुए घर तथा कार्यस्थल पर स्वयं को सफल उद्यमी एवं कार्यकारी व्यावसायिकों के

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात में नारी शक्ति की चर्चा करते हुए कहा कि प्राचीन काल से लेकर आज के दिन भी भारतीय महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं और साथ ही कहा कि एसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहां पर महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं कराई हो। प्रधानमंत्री ने महिलाओं के रक्षा क्षेत्र से लेकर विमानन क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने को एक मील का पत्थर बताया।



एटीएम पिन व ओटीपी किसी से भी नहीं करें शेयर: दंडोतिया

• टीम गूँज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्वालियर शहर पूर्व अपराध ने एमटी विश्वविद्यालय में आयोजित स्मार्ट शहरों में साइबर अपराध और साइबर सुरक्षा विषय पर व्यायान दिया। श्री दंडोतिया ने कहा कि स्मार्ट सिटी में नागरिकों को इंटरनेट से जुड़ी हुई सेवाओं का लाभ लेने के साथ-साथ सायबर अपराध और साइबर सुरक्षा के प्रति सजग रहना बहुत जरूरी है। आप सभी अपनी गोपनीय जानकारी जैसे एटीएम पिन, ओटीपी और अन्य निजी संवेदनशील जानकारी किसी भी दशा में किसी के भी साथ साझा नहीं करें। फेसबुक सोशल मीडिया पर फेक अकाउंट बनाकर पैसों की मांग करने वाले व्यक्तियों से जागरूक रहें। फिर भी यदि दुर्भाग्यवश साइबर फॉड के शिकार हो जायें तो घबराये नहीं अपने परिवारजन या निकट सबन्धी को साथ लेकर पुलिस को तुरंत सूचित करें। इस मौके पर अतिथि वक्ता डॉ. अंजलि पाटिल ने यूचर चेलेंजेस फॉर स्मार्ट सिटीज अर्बन ऑर्जनेटरी विषय पर विचारियों को संबोधित किया। स्मार्ट शहरों में साइबर अपराध और साइबर सुरक्षा खतरों पर उनकी टीम से सब इंसपेटर रजनी सिंह साइबर क्राइम सेल प्रभारी द्वारा स्लाइड शो के माध्यम से प्रस्तुति दी गयी जिसमें सायबर क्राइम के तरीकों फिल्मिं, मेसेजिंग और लैकेमेलिंग आदि को पहचानने और बचने के तरीकों पर भी विस्तार से चर्चा की गयी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. एलके जैन ने की।

सायबर क्राइम अवेयनेस प्रोग्राम, छात्र-छात्रायें सायबर अपराधों से कैसे निपटें

ग्वालियर “सायबर काइम अवेयनेस” प्रोग्राम के तहत “विक्रांत ग्रूप ऑफ कॉलेज” में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के लिये सायबर क्राइम से रोकथाम विषय पर

अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सभी को फायनेंशियल फॉड, ओटीपी फॉड, यूपीआई फॉड, जॉव फॉड, मेट्रोमोनियल फॉड, सोषल मीडिया फॉड,



एक सेमीनार आयोजित किया गया। इस सेमीनार का प्रारंभ एएसपी पूर्व/अपराध राजेष डण्डोतिया द्वारा अपने उद्घोषन से किया गया।

सेमीनार में उपस्थित सभी कॉलेज स्टाफ एवं छात्र-छात्राओं को सायबर सेल की टीम द्वारा सायबर क्राइम की परिभाषा तथा ठांगों द्वारा की जाने वाली ऑनलाइन ठांगों के तरीकों से भी अवगत कराया, इसके साथ ही उन्हे इनसे बचाव के तरीकों भी समझाएं। सेमीनार में उपस्थित सायबर सेल के

स्टॉकिंग, बुलिंग, रेनसमवेयर, मालवेयर आदि के संबंध में विस्तृत व्याख्यान दिया गया। सायबर क्राइम अवेयनेस की ओर ग्वालियर पुलिस द्वारा प्रारंभ किये गये प्रोग्रामों का मुख्य उद्देश्य आने वाली पीढ़ी को सायबर अपराधों के

प्रति जागरूक करना है। जिससे भविष्य में सायबर संबंधी अपराधों पर पूर्णतः रोक लगाइ जा सके। इस सेमीनार में एएसपी.अपराध के साथ-साथ टीआई बिजौली के पीएस यादव, प्रभारी सायबर सेल एसआई रजनी रघुवंशी, हैडकान्सटेबल के पीयादव तथा विक्रांत कॉलेज के विक्रांत सिंह राठौर (सेक्टरी-विक्रांत कॉलेज), प्रोफेसर आनंद सिंह विसेन, तरुण भल्ला, प्राफेसर प्राजक्ता देषपाण्डे मौजूद रहे।



सकारात्मक ऊर्जा से ही रक्षा समिति के सदस्य पुलिस का सहयोग करें

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

P

लिस लाइन के सामुदायिक भवन में ग्राम/नगर रक्षा समिति, जिला ग्वालियर एवं ट्रैफ़िक वार्डन के एक दिवसीय वार्षिक सम्मेलन का आयोजन आईजी अनिल शर्मा के मुख्य आतिथ्य एवं एसएसपी अमित सांघी की अध्यक्षता में ग्वालियर पुलिस द्वारा किया गया। सम्मेलन में ग्वालियर जिले के थानों से ग्राम व नगर रक्षा समिति के लगभग 350 सदस्य व कैप्टन एवं ट्रैफ़िक वार्डन सम्मिलित हुए। सम्मेलन के प्रारम्भ में ग्राम व नगर रक्षा समिति के पदाधिकारियों ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। सम्मेलन में उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए आईजी ग्वालियर ने रक्षा समिति के सदस्यों द्वारा विभिन्न अवसरों पर पुलिस का सहयोग करने के लिये उनकी सराहना की तथा हमेशा की तरह पुलिस का सहयोग करने के लिये कहा गया। आईजी ग्वालियर ने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलन से ग्राम व नगर रक्षा समिति सदस्यों में निष्ठित रूप से नवीन ऊर्जा का संचार होगा तथा सकारात्मक ऊर्जा से ही रक्षा समिति के सदस्य पुलिस का सहयोग करेंगे। एसएसपी ग्वालियर ने वर्तमान परिपेक्ष्य में पुलिस व्यवस्था में ग्राम व नगर रक्षा समिति की उपयोगिता के संबंध में जानकारी दी। इस अवसर पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने कहा कि ग्राम व नगर रक्षा समिति के सदस्य पुलिस परिवार का हिस्सा बनकर सूचनाओं का आदन-प्रदान करें। एसएसपी ग्वालियर ने ग्राम-नगर रक्षा समिति में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता सुनिष्चित करने पर बल दिया और कहा कि जिले के प्रत्येक थानों में पुरुष सदस्य के अलावा महिलाओं को भी सक्रिय सदस्य बनाया जावे। इस अवसर पर एसएसपी ग्वालियर ने अपने संबोधन में कहा कि कोरोना महामारी के दौरान ग्राम व नगर रक्षा समिति के सदस्यों द्वारा पुलिस बल के साथ मिलकर कानून व्यवस्था बनाये रखने में कधे से कंधा मिलाकर कार्य किया जिसके लिये वह बधाई



90 दिन में शहर से चोरी और गुम हुए मोबाइल पुलिस ने खोजकर मालिकों को सौंपे

पुलिस की सायबर सेल टीम ने एक बड़ी सफलता पाई है। बीते 90 दिन में चोरी या गुम हुए 102 मोबाइल बरामद किए गए हैं। जिनकी फोटो लगभग 18 लाख रुपए है। एसएसपी ऑफिसर सिंह जिला सायबर सेल में काम करने वाले पुलिस कर्मियों व अफसरों की टीम ने वो कर दिखाया जो मुश्किल नजर आता था। बीते तीन महीने में शहर से खोए या चोरी गए 102 मोबाइल जो एप्ल, सैमसंग, सोनी, नोकिया, एमआई सहित अन्य बड़े ब्रांड के थे उनको ढूँढकर निकाला है। एसएसपी ग्वालियर अमित सांघी ने बताया कि यह चुनौतीभरा था, क्योंकि मोबाइल चोरी करने वाले उसे काफी लीला कर देते हैं। इसके बाद कुछ ही समय में वह इतने हाथों में बैग जाता है कि चंद दिनों में कई किलोमीटर की दूरी तय कर लेता है। पर हमारी सायबर सेल की टीम लगातार इन चोरी या गुम हुए मोबाइल को ट्रैस करती रही। जिसके बाद यह सफलता मिली है। उस समय खुशी ज्यादा हुई जब बॉर्डर पर तैनात सेना के जवान का मोबाइल जो कुछ समय पहले उनके ग्वालियर छुट्टी पर आने के दौरान चोरी हुआ था वह मिला। वहां जवान को सूचना दी तो उसकी खुशी का टिकाना ही नहीं था। ज्यादातर मोबाइल फोर्स के लोगों हैं। साइबर सेल की टीम ने यह कामयादी ऐसे ही नहीं पाई है। 5 लोगों की टीम लगातार अल्ट्रानेट इन मोबाइल को सर्विलांस पर लगाकर जांच कर रही थी। जिस मोबाइल की कुछ भी डिटेल मिलती उससे अफसरों को अवगत कराकर पुलिस की टीम की मदद से उसे वापस लाया जाता।

के पात्र हैं। सम्मेलन में ग्राम व नगर रक्षा समिति के नोडल अधिकारी एसएसपी, ग्रामीण जयराज कुबेर, समस्त नगर पुलिस अधीक्षकगण, रक्षित निरीक्षक ग्वालियर रंजीत सिंह के अलावा पुलिस के अधिकारी व कर्मचारीण उपस्थित हुये। कार्यक्रम का संचालन रक्षित निरीक्षक ग्वालियर द्वारा तथा आभार डीएसपी लाइन विजय भदौरिया द्वारा व्यक्त किया गया। ग्राम व

नगर रक्षा समिति के पदाधिकारियों में डॉ. राजकुमार दत्ता, जिला संयोजक ग्राम/नगर रक्षा समिति द्वारा किया गया तथा मुख्य रूप से ग्राम व नगर रक्षा समिति के विनय जैन वरिष्ठ परामर्शदाता, संतोष राठौर जिला संयोजक, जयसिंह सेंगर उप जिला संयोजक, आर०के० गुर्जर कार्यालय प्रभारी सहित विभिन्न अनुभागों के संयोजकगण उपस्थित रहे।

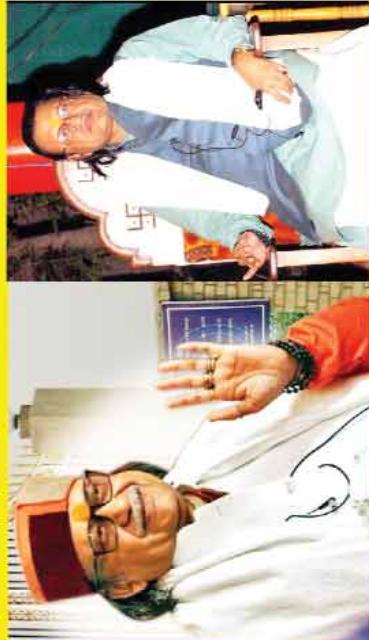
आध्यात्मिक संत शिरोमणि संतकुपाल सिंह जी महाराजा



• वृज द्वाज ब्रेटर्न

वैसे तो हर धर्म में उनके अपने अनुयायी होते हैं लेकिन अध्यात्म का अध्यात्म निकलन, साथका का एक ऐसा केंद्र है जहां समाज के हर वर्ग की आस्था है, परम सत्त हृष्मा गालिक साहित्य द्वारा अध्यात्म निकलन में अज भी उन्हीं समझते हैं को तब्जो दी जाती है औंडंबो से दूर अज ये स्थान सिर्फ चालियर अचल का ही नहीं बालक विदेशों में रहने वाले भक्तों की आस्था का केंद्र है परम सत्त हृष्मा गालिक साहित्य के द्वारा अध्यात्म निकलन का मंत्रलन मुचारू रूप से प्रम सत्त हृष्मा की आस्था के पुर संत श्री कृपाल सिंह जी द्वारा किया जाता है, सत कृपाल सिंह जो सही मायनों में हजुर गालिक साहित्य के सम्बन्ध उत्तराधिकारी है, बड़े गुण जी बनाए गए नियम, संस्कार, और परंपराओं निर्विळ अप कर करमाने से ही सम्प्रब्रह्म होता है, अश्रम की नियमदारी उत्तम कोई मायनों बात नहीं है, लाखों अनुयायों की आस्था का विश्वास बनाने रखना सत कृपाल सिंह जी की ही योगी शक्ति के फलान्तरण है, जो उन्हें सत हृष्मा गालिक साहित्य से मिली है, प्रति वर्ष अस्था नियम करद बढ़ रही है इसका अनुभव अप गुरु पूर्णिमा जैसे आयोजन से समझ सकते हैं अश्रम निकेतन, अज सिर्फ आस्था का ही नहीं, बालक युव दें एक आध्यात्मिक शक्ति महसूस करने का केंद्र भी है। साथ ही अप को बनाना चाहती की सत्री कृपाल सिंह जी एक कृशल लेखक भी है, आ की लिखी बहुमुलकों के कई रीप्रिट आ चुके हैं, अम नामार्थ हो य कोई राजनीति सब को समान रूप से सत जी का

आशीर्वाद मिलता है कई सामाजिक सम्झौतों के संबंधक की भूमिका में सत्री का अभूतपूर्व योगदान है, गणेश कन्याओं के विवाह, पर्वतीव बच्चों की विद्या प्रशंसन, जनस्वासदी की महत ये कुछ



ऐसे काम हैं, जो कृपाल सिंह जी महाराज निना किसी प्रचार के लियाँ जाती हैं, जो सत्री की कृपा, लक्ष्मा पर देख लोगों करते रहते हैं अज भी सत्री की कृपा, लक्ष्मा पर देख लोगों को विशिष्ट प्रेरणा देता है, तो जो से बदलती जीवन शैली में सुकून लायी जाएगी वही जीवन शैली है, जो अनन्त है असम्म है।



और पारमितक शक्ति की तलाश अश्रम निकेतन में और संत शिरोमणि श्री कृशल सिंह जी महाराज के दशन मात्र से पूरी होती है... विज्ञानिकों यह मायरण श्री कृशल सिंह जी महाराज के चारों में जितना लिखा जाये जो काम है, जो अनन्त है असम्म है।





GOONJ SPECIAL REPORT

स्वच्छ ग्वालियर

ग्वालियर में गली-गली,
स्वच्छता की लहर चली

स्वच्छ सर्वेक्षण



स्वच्छता में नंबर 1 बनेगा ग्वालियर

स्वच्छता से खुलेंगे प्रगति के द्वार, शहर का दुनिया में बढ़ेगा मान : कन्याल

- टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर की क्षमता यहां की विरासत के रूप में दुनियाभर ने देखी है अब हमें इसी ग्वालियर की क्षमता को शहर की सफाई के रूप में दिखाना है आओ हम सभी मिलकर संकल्प लें कि ग्वालियर को इस प्रकार से चमका दें कि यहां की सड़कें और नलियां बिल्कुल

मेरा शहर, मेरी तैयारी
स्वच्छ रहे हर मोहल्ला
हम सब की जिम्मेदारी



साफ व स्वच्छ रहें। इनमें बिल्कुल भी कचरा ना हो हमें देश का नंबर वन स्वच्छ शहर बनाना है। ग्वालियर को अबकी बार स्वच्छता में अव्वल नंबर पर लाने के लिए निगम ने अभी से कमर कस ली है। ग्वालियर नगर निगम पुरानी गलालियों से सबक लेकर स्वच्छता की ओर ध्यान देकर शहर को स्वच्छता के पायदान पर आगे बढ़ाने का संकल्प लिया है और इस कार्य में सभी शहरवासियों को भी आगे बढ़कर साथ देना है तब ही हम नंबर 1 बनेंगे। स्वच्छता रैंकिंग-2022 के लिए

हमारा ग्वालियर, स्वच्छ ग्वालियर

निगमायुक्त किशोर कन्याल ने कहा कि यह शहर हमारा है तथा इसे अच्छा बनाने की जिम्मेदारी भी हम सभी लोगों की है। इसलिए हमें यह संकल्प लोगों को दिलाना है कि हम अपना घर जिस प्रकार से साफ व स्वच्छ रखते हैं उसी प्रकार से हमें अपना शहर बनाना है। इसके लिए सभी लोग जुटजाएं और अच्छा कार्य करें। जो भी कर्मचारी, सुपरवाइजर चालक एवं हेल्पर अच्छा कार्य करें उन्हें हम पुरस्कृत करेंगे। उक्ताशय के विचार निगमायुक्त किशोर कन्याल ने स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम में कर्मचारियों का प्रोत्साहन करते हुए व्यक्त किए। श्री कन्याल ने स्वच्छता सामाजी वितरण कार्यक्रम के दौरान कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज दिख रहा है कि ग्वालियर बदल रहा है और हमारा ग्वालियर स्वच्छ ग्वालियर हो रहा है इसके लिए आप सभी का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। निगमायुक्त श्री कन्याल ने कहा कि परीक्षा की घड़ी अभी शुरू हुई है।

90 दिन का रोडमैप ग्वालियर को अव्वल कक्षे दिखाएगा। ग्वालियर शहरवासी यह प्रण लें कि अबकी बार अपने ग्वालियर को स्वच्छता में नंबर 1 बनाकर ही दम लेंगे। स्वच्छता में ग्वालियर को पहले पायदान पर पहुंचाने के लिए नगर निगम के साथ मिलकर सभी शहरवासियों, सामाजिक संस्थाओं, समाजसेवियों, को एक साथ आगे बढ़कर स्वच्छता की अलख जगाने होंगी और हमें खुद से ही शुरूआत करनी होगी कि हम कैसे ग्वालियर को स्वच्छ रखें।

शहर के युवा स्वच्छता अभियान में सक्रियता से सहभागिता करें और अपने ग्वालियर को स्वच्छता में



नंबर 1 लाने के लिए शहर के प्रत्येक नागरिक की सहभागिता सुनिश्चित करें। ग्वालियर के अधिक से अधिक नागरिक स्वच्छता का ऑनलाइन फीडबैक दें, इसके लिए युवा मेहनत करें और प्रत्येक नागरिक को बोट फॉर माय सिटी एप डाउनलोड कराकर ऑनलाइन फीडबैक दर्ज कराएं। उक्ताशय के विचार नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कन्याल ने हेमसिंह की परेड सिकंदर कंपू पर स्थित शहीद चौराहे पर पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता फैंस क्लब द्वारा प्रारंभ किए गए स्वच्छता जागरूकता अभियान का शुभारंभ करते हुए व्यक्त किए।



ग्वालियर स्वच्छ सर्वेक्षण फीडबैक देश में चौथे स्थान पर

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर. स्वच्छ सर्वेक्षण 2022 में स्वच्छता फीडबैक में ग्वालियर देश में चौथे पायदान पर है। वहाँ नगर निगम द्वारा किए जा रहे प्रयासों से अनुमान लगाया जा रहा है कि शहर जल्द ही तीसरे अंथवा दूसरे नंबर पर आ जाएगा। वहाँ इंटरनेट मीडिया पर ग्वालियर छटवें स्थान पर चल रहा है। केंद्र सरकार के शहरी मंत्रालय द्वारा इंटरनेट मीडिया और स्वच्छ सर्वेक्षण फीडबैक को लेकर जारी की गई सूची में शहर से अभी तक 1,57,824 लोगों ने सिटीजन फीडबैक दिया हैं वहाँ इंटरनेट मीडिया पर इस सूची में विशाखापट्टनम (आंध्र प्रदेश) पहले स्थान पर है इसमें फेसबुक, इंस्ट्राग्राम, और ट्यूविटर शामिल है साथ ही स्वच्छ सर्वेक्षण में भी विशाखापट्टनम (आंध्र प्रदेश) 2.50.409 फीडबैक के साथ प्रथम स्थान पर बना हुआ है। वहाँ इंटरनेट मीडिया पर फेसबुक, इंस्ट्राग्राम, और ट्यूविटर शामिल है। शहरी मंत्रालय द्वारा जारी की गई टाप 20 शहरों के नाम की सूची में ग्वालियर का नंबर छठवा है। स्वच्छ सर्वेक्षण में सिटीजन फीडबैक में आमजनता द्वारा नगर निगम द्वारा किए जा रहे कार्यों को लेकर आमजनों द्वारा फीडबैक दिया जाता है। वहाँ स्वच्छ सर्वेक्षण में इंटरनेट मीडिया



का काफी बड़ा किरदार है। एक ओर जहाँ नगर निगम द्वारा किए जा रहे कार्यों को लेकर सिटीजन फीडबैक लिया जा रहा है। वहाँ इंटरनेट मीडिया पर नगर निगम के अधिकारी कर्मचारी एवं शहरवासी कितने एक्टिव हैं, इसे भी देखा जा रहा है। शहरवासियों द्वारा स्वच्छता के कार्यों को लेकर किए जा रहे ट्यूटर, इंस्ट्राग्राम पर लाइक एवं

अपलोड करने सहित फेसबुक पर लाइक और कमेंट पर निगह रखी जा रही है। जिस नगर निगम एवं नगर पालिका से जितने लोगों ने नगर निगम के कार्यों को लेकर इंटरनेट मीडिया पर कमेंट, लाइक एवं फोटो अपलोड किए हैं उसके हिसाब से उसका स्थान शहरी मंत्रालय द्वारा निर्धारित किया जा रहा है।

बंदूक का लायसेंस पाना है तो खुदवाओ तालाब: कलेक्टर

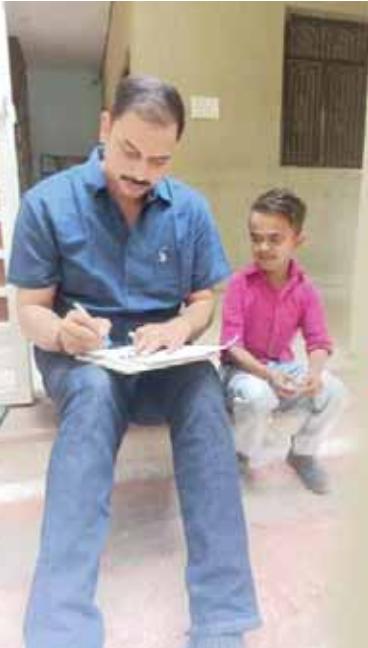
● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर. मप्र के ग्वालियर चंबल संभाग में हथियारों के शौकीनों की सूची काफी लम्बी है। उनके लिये एक अच्छी खबर आ रही है। लायसेंस पाने के लिये ग्वालियर कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रमसिंह ने एक ऑफर दिया है जिसमें अगर कोई भी व्यक्ति तालाब खुदवाने में मदद करेगा या खोदेगा तो उसे बंदूक का लायसेंस मिलेगा। यह कवायद इसलिये की जा रही है क्योंकि इस बार आजादी के अमृत महोत्सव के तहत ग्वालियर जिले में 100 तालाबों खुदवाने हैं। इसके लिये कलेक्टर ने आम जनता की भी भागीदारी चाह रहे हैं। दूसरी ओर ऑफर पटल पर आने से पहले ही इस पर राजनीति भी शुरू हो गयी है। कलेक्टर के आदेश के बाद अब राजनीति शुरू हो गई है। कांग्रेस ने इसे लोगों को हथियारों के लिए प्रेरित करने वाली कवायद बताया, तो वहाँ बीजेपी सांसद विवेक नारायण शेजवलकर इसे एक बेहतर पहल बता रहे हैं। दरसअल मध्य प्रदेश में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत प्रदेशभर के सरोवर का निर्माण होना है, जिसमें ग्वालियर के खाते में 100 तालाब हैं। अगले एक साल में यह निर्माण पूरे भी करने हैं। इनके निर्माण का लक्ष्य पूरा करने के लिए ही जिला प्रशासन ने नया विकल्प शुरू किया है। इसमें एक तालाब की खुदाई पूरी करवाने के बाद खुदाई कराने वाले को हथियार के लिए लाइसेंस दिया जाएगा। इसके लिए लोगों को आज ओर कल में कलेक्टर में अपना नाम दर्ज करना होगा। 2 दिन तक नाम लेने के बाद और नाम नहीं लिए जाएंगे।



कांग्रेस विधायक प्रवीण पाठक ने सोशल मीडिया से दिलाई नौकरी

एमबीए पास छोटे कद के अंकेश को नहीं मिल रही थी नौकरी, विधायक ने फेसबुक पर की मदद



विधायक की पहल के बाद नौकरी के ऑफर की वरसात

मध्यप्रदेश के ग्वालियर शहर में कांग्रेस के एक विधायक ने 28 साल के एक युवक की जिस तरह से मदद की उसकी सभी चर्चा कर रहे हैं। महज 3 फुट 7 इंच का यह एमबीए पास युवक दर-दर की ठोकरे खा रहा था। इस बीच वह कांग्रेस के विधायक प्रवीण पाठक के पास किसी काम से पहुंच गया। प्रवीण पाठक ने उसका मीडिया सोशल मीडिया पर शेयर किया और अब अंकेश पर नौकरी

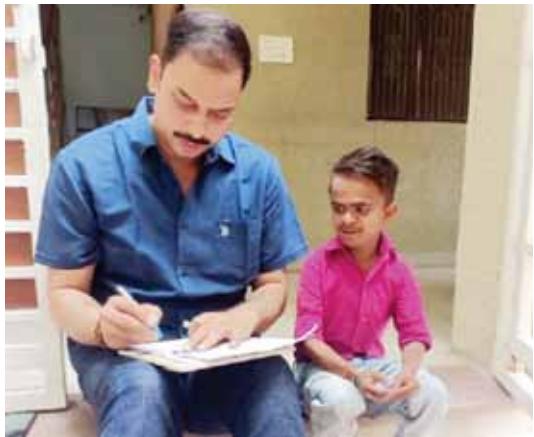
के लिए 30 से 35 जगहों से ऑफर है। वो अब इंटरव्यू के लिए भी जा रहे हैं।

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

ग्वालियर दक्षिण के विधायक प्रवीण पाठक ने छोटे कद वाले एक शख्स के लिए जॉब ऑफर की लाइन लगवा दी। लाला का बाजार इलाके में रहने वाले अंकेश कोष्ठी एमबीए करने के बाद भी 2 साल से नौकरी की तलाश कर रहे थे। अंकेश 28 साल के हैं, लेकिन कद-काठी का विकास नहीं हो पाने से काफी छोटे लगते हैं। उनकी हाइट 3 फीट 2 इंच है। जिसकी बजह से वे अच्छी जॉब पाने में चूक जाते थे। जब विधायक को उनकी परेशानी पता चली, तो उन्होंने अंकेश की मदद करते हुए जॉब के ढेरों ऑफर दिलवा दिए। विधायक को जब पता लगा कि अंकेश (पोस्ट ग्रेजुएशन डिप्लोमा इन मैनेजमेंट) किए हुए हैं। तो उन्होंने अपने साथ अंकेश की एक फोटो सोशल मीडिया पर शेयर कर लिखा— यह रुक्क किए हैं। इनके लिए कोई जॉब हो तो बताएं। साथ ही उन्होंने अंकेश के व्यक्तित्व के बारे में भी लिखा। इसके बाद विधायक को अंकेश के जॉब के लिए कई ऑफर आए हैं। इससे अंकेश बहुत खुश है। वह गरीब परिवार है। उसने विधायक प्रवीण पाठक को धन्यवाद कहा है। 28 साल के अंकेश कुछी पुत्र अशोक लाला का बाजार में रहते हैं। मां बीड़ी के कारखाने में काम करती हैं। पिता कॉर्नर पर सिलाई की दुकान चलाते हैं। दो भाई एक बहन में अंकेश बीच के हैं। उम्र 28 की होने के बाद भी वह शरीर का विकास नहीं होते पर 14 से 15 साल के बालक की तरह दिखते हैं, जबकि अंकेश ने वर्ष 2020 में क्लबस्कूलिया है। उसके बाद से अपने लिए जॉब सर्व कर रहे हैं, लेकिन हर बार उनका पर्सनलिटी आड़े आ जाती थी। क्योंकि मैनेजमेंट की

की तलाश कर रहा था। यह कहानी लाला का बाजार में रहने वाले अंकेश की है। वह पर्सनलिटी के लिहाज से अच्छी नौकरी पाने में चूक जाते थे। क्योंकि अंकेश की उम्र 28 साल है, लेकिन वह लगते 14 से 15 साल के स्ट्रॉटेंट हैं। बस फिर क्या था जब विधायक को पता लगा कि वह पीजीडीएम (पोस्ट ग्रेजुएशन डिप्लोमा इन मैनेजमेंट) किए हैं। तत्काल विधायक ने अंकेश की अपने साथ एक फोटो सोशल मीडिया पर अपलोड करते हुए लिखा कि वह एमबीए किए हैं। इनके लिए कोई जॉब हो जो बताएं। साथ ही अंकेश के व्यक्तित्व के बारे में लिखा। जिसके बाद विधायक को अंकेश के जॉब के लिए कई ऑफर आए हैं। इससे अंकेश बहुत खुश है। वह गरीब परिवार है। उसने विधायक प्रवीण पाठक को धन्यवाद कहा है।

फील्ड में कंपनियों को गुड लुकिंग कर्मचारी चाहिए होते थे। पर अंकेश के अंदर की खूबसूरती सिर्फ ग्वालियर दक्षिण से कांग्रेस विधायक प्रवीण पाठक ने पहचानी। हुआ यह था कि अंकेश को मां के आधार कार्ड में उम्र का करेक्शन कराना था, लेकिन उनकी मां के जन्म का कोई प्रमाण पत्र नहीं था। इसमें उहें किसी ने क्षेत्रीय विधायक से लिखवाने केलिए कहा। जब वह विधायक पाठक के पास पहुंचे तो उन्होंने अंकेश से बात की तो पता लगा कि वह मैनेजमेंट का कोर्स करे है। गरीबी और प्रतिकूल हालात में भी उसने पढ़ाई जारी रखी। इस पर विधायक ने तत्काल उसका अपने साथ फोटो लिया और अपने फेसबुक वॉल पर अपडेट किया। इनके लिए कोई जॉब हो तो बताएं। इसके बाद तो अंकेश पूरे शहर में चर्चित हो गया। अंकेश के लिए जॉब के ऑफर विधायक पाठक के पास आने लगे। जब उन्होंने यह अंकेश को बताया तो उसकी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा।



अंकेश बोला- थैंक्यू प्रवीण भैया

अंकेश ने बताया कि उसे जॉब नहीं मिल रहा था। उसकी पर्सनलिटी आड़े आ रही थी। पर जब वह विधायक प्रवीण पाठक से मिला तो लगा ही नहीं किसी नेता या विधायक से मिल रहा हूं। ऐसा लगा कि बड़े भाई से मिल रहा हूं। उन्होंने मेरी तत्काल मदद की। जिस काम के लिए योग्यता को समझा और अपने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर मेरे लिए जॉब के ऑफर का अंबार लगा दिया। थैंक्यू प्रवीण भैया।

शिक्षा और साक्षरता

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

शि

क्षा और साक्षरता को समानार्थी शब्द समझा जाता है पर दोनों में बहुत गहरा अंतर होता है। अक्षर पढ़ कर और लिख कर हर व्यक्ति साक्षर तो बन सकता है लेकिन शिक्षित नहीं बन सकता है। शिक्षित होने के लिए आपको साक्षर होने की ज़रूरत नहीं है। शिक्षा आपके विचार, व्यक्तावार और शिष्टाचार में दिखती है। आपने ये बहुत लोगों को कहते हुए सुना होगा और शायद कहा भी होगा कि वो व्यक्ति पढ़ा - लिखा गंवार है। ऐसा तभी कहा जाता है जब कोई व्यक्ति ने बहुत अच्छी पढ़ाई की हो लेकिन उसके विचार और व्यक्तावार एक अशिक्षित व्यक्ति के जैसे हों। इसका मतलब वो व्यक्ति साक्षर तो हो चुका है पर शिक्षित नहीं हुआ है। साक्षरता आपको शिक्षित होने में मदद करती है। यदि आप साक्षर नहीं हैं तो आपके लिए बहुत सामान्य चीज़ें काफ़ी कठिन हो जाएंगी क्योंकि आपको पढ़ना नहीं आएगा, लिखना नहीं आएगा, और गणना करनी नहीं आएगी।

शिक्षा सर्वप्रथम आपके घर से शुरू होती है। आपको जिस तरीके से बात करना सिखाया जाता है या आप घर में सभी को जिस तरीके से बात करते देखते हैं वैसे ही सीखते हैं, किस प्रकार के कपड़े कहां पहने जाएं, खाने - पीने का क्या सलीका होता है आदि बातें शिक्षा होती हैं जो आपको बचपन से सिखाई जाती हैं। आपको ये तो यद ही होंगा जब घर में कोई मेहमान आते थे तब बचपन में मां उनसे नमस्ते करने को कहती थी, उनको सबसे पहले पानी दिया जाता है फिर खाना खिलाया जाता है, आदर - सत्कार किया जाता है, ये सब शिक्षा ही है। अगर कोई खाना अच्छा बनाता है तो वो खाना बनाने की विधियों में



शिक्षित है। अतः शिक्षा और साक्षरता अपने आप में दो स्वतंत्र शब्द हैं।

ऐसा नहीं है की अगर आप सूट - बूट में होगे तभी शिक्षित दिखेंगे। स्वामी विवेकानंद, नेताजी सुभाषचंद्र बोस जैसे महापुरुष साधारण वेश - भूषा में रहते थे, जो उनको

की ओर एक इंसान है और उससे भी भूल हो सकती है, उसने जान - बूझ कर नहीं किया है तो आप उसको माफ कर सकते हैं। आपकी प्रतिक्रिया आपके विचारों की उच्चता और आप एक मनुष्य के तौर पर कितने विकसित हुए हैं ये दर्शाती है। शिक्षा का पहला काम यही



असाधारण बनाता था वो उनका ज्ञान और विचार थे। इतना मान और सम्मान होने के बावजूद वो लोग बहुत विनम्र थे, ये ही उनके विचारों की उच्चता को दिखाता था। आजकल कुछ ऐसे लोग भी हैं जो बहुत बड़ी संस्थाओं से पढ़ते हैं और अपने आप को सबसे बेहतर समझते हैं, इस घंटं में वो किसी का सम्मान नहीं करते। आप चाहे जितने पढ़ - लिख जाएं लेकिन आप घर में बढ़ों का सम्मान, अतिथि का सम्मान और छोटों से अच्छा व्यक्तावार नहीं कर रहे हैं तो आप शिक्षित नहीं हैं, सिर्फ साक्षर हैं। शिक्षा समाज में रहना का सलीका सिखाती है, अच्छी भाषा बोलना सिखाती है, विचारों को उच्चता देती है, व्यवहार कुशल बनाती है, ज्ञान देती है और वो ज्ञान दूसरों की सहायता करने और विनम्र रहने की सीख देता है। ज्ञानी व्यक्ति हमेशा विनम्र होता है, उसकी विनम्रता सभी के साथ एक समान होती है वो रंग, रूप, शिक्षा या पैसा देख कर भेदभाव नहीं करता है और जिस मनुष्य को सिर्फ ज्ञान का भ्रम है वो खुद को बेहतर दिखाने और दूसरों को नीचा दिखाने में लगा रहता है। उदाहरण के तौर पर आप किसी महंगे रेस्टोरेंट में जाएं और गलती से वेटर आपके कपड़ों पर थोड़ा - सा खाना फैला दे। निश्चीत ही गुस्सा तो आएगा लेकिन उस गुस्से को कैसे संभालना है। क्या आप उसके ऊपर चिल्हा देंगे, हाथ उठा देंगे या आप ये समझेंगे

होता है को वो आपको एक बेहतर मनुष्य बनाए।

शिक्षा सिर्फ आपके बात करने के तरीके को नहीं बदलता। आप क्या बात कर रहे हैं इसको भी प्रभावित करती है। सबसे पहले तो आपको जिस विषय की जानकारी नहीं है उसके बारे में बोलने की बजाए आपको सुनना चाहिए। विषय के बारे में सही साधनों से जानकारी प्राप्त करने के बाद ही आपको बोलना चाहिए। जिस विषय के बारे में आपने जानकारी प्राप्त करली है आप उस विषय में शिक्षित हो गए हैं। साक्षर व्यक्ति सर्फ खुद का अच्छा कर पाता है और शिक्षित व्यक्ति पूरे समाज का कल्याण करता है। जैसे महात्मा गांधी जी बहुत शिक्षीत थे, उन्होंने अपनी शिक्षा और सिद्धांतों से देश की आज़ादी में एक अहम भूमिका निभाई। कई महात्मा, पण्डित और कवियों ने बहुत महान ग्रंथ पढ़े होते हैं, वेदों और पुराणों का ज्ञान होता है, सुंदर रचनाएं की होती हैं, पर वो ज्ञान सिर्फ दूसरों को देते हैं या उस ज्ञान का बखान करते हैं, लेकिन स्वयं के जीवन में वो ज्ञान नहीं उतारते हैं। जो ज्ञान आपको है उस ज्ञान के अनुसार काम करना ज़रूरी है। यहीं फर्क होता है साक्षर और शिक्षित होने में। आप जिन किताबों को पढ़ रहे हैं, उस ज्ञान को अपनी डिग्री तक न सीमित रखते हुए अपने जीवन में भी उतारेंगे तभी आप शिक्षित हो सकते हैं।

चट्टानों में आदि मानव द्वारा उकेरे गए शैलचित्र

च

ट्टानों में आदि मानव द्वारा उकेरे गए शैलचित्र, मानव सभ्यता के विकास के साथी माने गए हैं। मुरैना जिले की जौगा तहसील के अन्तर्गत पहाड़गढ़ ब्लाक में ग्राम निची बहराई के समीप स्थित

**डॉ. सुरेण्ड्र सम्बाट****वरिष्ठ संपादक, लेखक**

8839261908

आमझिर, खाई श्यामदेव और पगारा उल्लेखनीय हैं। इन शैलचित्रों में नील गाय, संभर, वृषभ, चीता आदि वन्य प्राणी, गजरोही, अश्वरोही, धनुर्धनी, योद्धाओं के साथ शिकार करने के चित्र शामिल हैं। इनमें गधिन गाय, और अरना भैंस का अंकन देखते ही बनता है।

इन चित्रों के बारे में निचली बहराई और आसपास के गांवों में यह धारणा प्रचलित है कि पांडवों ने निर्वासन काल के दैरान जब वे विराट नगर (वर्तमान बैराड़ जिला शिवपुरी) में रहे थे, एक वर्ष के गुप्त प्रवास के दैरान उन्होंने लिखीछाज नाम स्थान पर पहाड़ काट कर आवास बनाया था। जिसकी दीवारों पर द्वोपदी ने यह चित्र उकेरे थे। जबकि पुरातत्वविदों के अनुसार यह चित्र 23 हजार साल पुराने हैं। उस समय के मानव ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए इन चित्रों का लिपि के रूप में प्रयोग किया था।

वस्तुतः आसन नदी के किनारे सौ से अधिक ऐसी गुफाएं अभी भी अवस्थित हैं, जिनमें पानी एवं भोजन की पर्यास मात्रा उपलब्ध थी। इन गुफाओं में पुराकालीन बर्तन, गौरिया, औखली और चकिया के चिह्न मिले हैं।

आदिमानव कालीन साक्ष्यों से भरे इस क्षेत्र की व्यापकता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि यह क्षेत्र आसन नदी के किनारे ही छह सौ वर्ग किलोमीटर से अधिक भू भाग में फैला हुआ है। यह भू-भाग पहाड़ी इलाके के सघन जंगलों में है। दुर्गम पहाड़ों और घने वनों का सीना चीर कर तेज गति से बहने वाली आसन नदी के साथ कई सहायक नदियों और नाले मिलकर इसके आकार और गति को बढ़ा देते हैं। इसमें गिरने वाले नालों में खारी नाला, पाड़खो, नाला और भद्रे नाला प्रमुख हैं। इन नालों तथा कई अन्य नालों के दोनों किनारों पर स्थित गुफाओं में शैलाश्रय देखे जा सकते हैं। कुल मिलकर अभी तक लगभग 90 शैलाश्रय का पता लग चुका है। इनमें कई शैलश्रय तो नाम से प्रचिलित हैं।

जो इस बात को साबित करते हैं कि इनकी पहचान वर्षों पूर्व हो चुकी है। इनमें लिखी छाज के अलावा नोवता, कुण्डीघाट, वर्दह, चपरेटा, खजुरा, चूनेवाली, कील्या, पंखा, सिद्धवाली, भछेड़ाज, नररा छाज, वर्दह, चपरेटा, खजुरा, चूनेवाली, कील्या, पंखा, सिद्धवाली, भछेड़ाज, नररा छाज, पाड़ खो, देवता दह, कटावली, रानीदह, हवा महल, ऐसी ही गुफाएं हैं, जिनके नामकरण का विश्लेषण किया जाए तो उनसे जुड़ी मान्यताएं और उनसे जुड़ी

तक चली गई हैं। कुछ अंदर जाकर छोटे-छोटे भागों में विभाजित हैं। कुछ का प्रवेश द्वार बहुत सकारा है लेकिन आन्तरिकता काफी फैली और विस्तृत है। शैलाश्रयों और गुफाओं की यह संरचना बताती है कि आदि मानव संरचना के हिसाब से रहने, सोने, आमोद-प्रमोद और उत्सवों के लिए इनका उपयोग करते रहे होंगे।

आसन नदी पर पगारा बांध (1911-1927) बन जाने के कारण बांध के ढूब क्षेत्र में न जाने कितनी ही गुफाएं



धारणाएं, उनकी प्राचीनता से आवरण हटाकर, उनकी पहचान को और उजला कर सकती है।

लिखीछाज समूह की अभी तक निजी स्तर पर जो खोज और अन्वेषण हुए हैं उनसे आदि मानव कालीन सभ्यता से जुड़े अनेक साक्ष्य यहां शैलाश्रय और शैलाश्रयों में



शैलचित्र होने की पुष्टि करते हैं। इन साक्ष्यों से जहां शैलाश्रयों की संरचना का पता चलता है वहां शैलचित्रों के स्थान, अंकन और उनमें उभरे रंग उनकी प्राचीनता को ध्वनित करते हैं। इन शैलाश्रयों में दीवानों के अलावा छतों पर चित्र आंके गए हैं। अधिकांश चित्रों में कुछ लाल, गेंहुआ, गहरे रंग और कुछ सफेद रंगों में उकरे हुए हैं। जहां तक शैलाश्रयों की संरचना का सवाल है, इन आश्रयों में गुफाएं भी मिली हैं। लिखीछाज शैलाश्रय के अंदर भी गुफा है। जबकि वर्दह, नौबता, सिद्धवाली, शैलाश्रयों में तो कई-कई छोटी बड़ी गुफाओं के गुच्छ शामिल हैं। जैसा कि प्राकृतिक दृष्टि से स्वाभाविक है सभी शैलाश्रयों और गुफाओं की बनावट अलग है। कुछ वृत्ताकार हैं तो कुछ अर्धवृत्ताकार। कुछ दो तरफ से खुली हैं तो कुछ तीन तरफ से। कुछ गुफाएं कम गहरी हैं तो कुछ गुफाएं पहाड़ के अन्तस को चीरता हुई काफी गहराई



ढूब गई होंगी। यहीं निकट में चाचुल गांव के पास पुराकालीन शिव मंदिर बना हुआ है जो वर्षों से भक्त पर्यटकों का लोकल पर्यटन केन्द्र बना हुआ है। निरार से निचली बहराई तक पक्का मार्ग है। यह वही निचली बहराई है जहां, पगारा, टिकटोली दूमदार अगे बढ़ने के स्पष्ट साक्ष्य हैं। इतनी पुरा और ऐतिह्य साक्ष्य उपलब्ध होने के बावजूद यहां अभी तक पुरातत्व अथवा किसी विभाग ने कोई खुदाई नहीं की है। जबकि वर्षों पूर्व सुश्री गीतम मिश्र (मुरैना में जन्मे महाकवि वीरन्द्र मिश्र की पुत्री) लिखी छाज पर आदिमानव की आर्टौलरी जैसे सार्थक शीर्षक से वृत्तचित्र बनाकर दूरदर्शीन पर प्रदर्शित कर चुकी हैं। बावजूद इसके अभी तक इस क्षेत्र को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की दिशा में भी कोई पहल नहीं हुई। लगभग छह सौ वर्ग किलोमीटर में फैले आदिमानव और उसके बाद के इतिहास के साक्ष्यों से भरे पड़े इस क्षेत्र में घटनाक्रमों की बेहद दिलचस्प भूमिका रही है।

चपरेट की गुफा

इस गुफा में दो वृत्तों के साथ बड़े आकार का एक ऐसा चित्र है, जिसका केंद्र बिन्दु एक ही है और जिसके ऊपर स्टार बना है। बड़े वृत्त में ऐसे आठ स्टार हैं, जिनमें से चार स्टारों को गहरे रंग से तथा शेष चार स्टारों को हल्के रंग से दिखाया गया है। लगता है कि यह चित्र वैदिक ज्योतिष के अधीन आठ माहों में बांटा गया है। इसके साथ ही एक समकोणीय चित्र भी है, जिसके रेखांकन में एक ऐसा सूर्य के हल्के भाग की ओर बढ़ाई गई है। यह चित्र इस बात की मांग करता है कि यहां के इस शैलचित्र का वैदिक, तांत्रिक अथवा ज्योतिष विज्ञान से भी कोई संबंध है या नहीं।



वन्य जीवों की प्रचुरता और जैविकी विविधताओं के लिए मशहूर

'कान्हा नेशनल पार्क'

प्रदेश में स्थापित नेशनल पार्कों के प्रति देशी पर्टटकों के साथ विदेशी पर्टटक बहुत तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। इनमें से एक है कान्हा नेशनल पार्क। यह पार्क वन सम्पदा, वन्य जीवों की प्रचुरता और जैविकी विविधताओं से लबरेज है। कान्हा नेशनल पार्क विलक्षण और अद्वितीय प्राकृतिक आवास के लिए जाना जाता है। कान्हा का संपूर्ण वन क्षेत्र वैभवशाली अतीत को आज भी संजोए हुए हैं, जिसकी वजह से यह पार्क देशी-विदेशी पर्टटकों को बरबस अपनी ओर खींचता है।

म

ण्डला और बालाघाट जिले की सीमा से लगा यह पार्क प्राकृतिक और पर्यावरणीय गौरव के लिए जाना जाता है। क्षेत्रफल के लिहाज से इसका देश के सबसे बड़े राष्ट्रीय पार्कों में शुमार है। कोर वन मण्डल (राष्ट्रीय उद्यान) एवं बफर जोन वन मण्डल कान्हा टाईगर रिजर्व के अन्तर्गत आते हैं। इन दोनों वन मण्डल का क्षेत्रफल क्रमशः 940 और 1134 वर्ग कि.मी. है। राष्ट्रीय उद्यान में 91 हजार 743 वर्ग कि.मी. का क्षेत्रफल क्रिटिकल टाईगर हेबीटेट के रूप में अधिसूचित है। इसके अलावा टाईगर रिजर्व के अधीन एक वन्य-प्राणी अभ्यारण्य सेटेलाइट मिनी कोर-फेन अभ्यारण्य है, जो 110.74 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला है।

टाईगर रिजर्व में वन्य- प्राणी गणना आकलन 2020 के अनुसार 118 बाघ और 146 तेंदुए मौजूद हैं। बाघों में 83 वयस्क और 35 शावक बाघ हैं। इसके अलावा जंगली कुत्ता, लकड़ बाघ, सियार, भौंडिया, भालू (रीछ), लोमड़ी, जंगली बिल्ली, जंगली मुअर, गौर, चीतल, बारासिंघा, सांभर, मेड़क-मेड़की, चौसिंघा, नीलगाय, नेवला, पानी कुत्ता (उद बिलाव), सेही, लंगूर, बंदर, मोर प्रजाति के वन्य-जीव उपलब्ध हैं। साथ ही स्तनधारियों की तकरीबन 43 प्रजाति, पक्षियों की 325, सरी सुप की 39, कीट की 500, मकड़ी की 114 और पतंगों और तितलियों की भी अनेक प्रजाति पर्यटकों को अपनी ओर खींचती हैं।

पार्क के यह स्थल है बेहद खास



फेन अभ्यारण्यटाइगर की विशेष इकाई फेन अभ्यारण्य है। वर्ष 1983 में 110 वर्ग कि.मी. का क्षेत्र फेन अभ्यारण्य घोषित हुआ। यह क्षेत्र वन्य-जीव के आवासीय स्थल के रूप में पिछले वर्षों से, काफी विकसित हुआ है। इस क्षेत्र में पूर्व में 38 मवेशी गय, भैंस रहकर वन क्षेत्र को नष्ट किया करती थी। वर्ष 1997-98 के मध्य यहाँ से सभी शिवरों को विशेष मुहिम से हटा दिया, तब से यहाँ के वन काफी अच्छे हो गए हैं जिससे अब यहाँ बाघ, तेंदुए, बायसन, चीतल, सांभर, जंगली कुत्ता आदि विचरण करते

दिखाई देते हैं।

श्रवणताल: कान्हा से 4 कि.मी. की दूरी पर श्रवणताल है। पौराणिक मान्यता अनुसार गजा दशरथ के तीर से मातृ-पितृ भक्त श्रवण कुमार की मृत्यु इसी स्थान पर होना माना जाता है। यहाँ कई साल पहले तक मकर संक्रान्ति का मेला लगता था। श्रवणताल में वर्ष भर पानी रहता है, जिसके कारण नीचे स्थित मेन्हरनाला और देशीनाला क्षेत्र में पानी रिसने से हमेशा नमी बनी रहती है, जो बाघ के लिए उपयुक्त आवास है। बारासिंघा पानी में धूसकर यहाँ जलीय पौधों को अपना भोजन बनाते हैं।

किसली मैदान (चुप्पे मैदान) - पार्क का यह मुख्य प्रवेश द्वार है। वर्ष 1986-87 में यहाँ बसे लोगों को

पार्क के बाहर कपोट बहरा में विस्थापित किया गया था। ढाई दशक पहले यहाँ आरा मिल का ऑफिस लगा करता था।

डिगडोला - किसली परिक्षेत्र के उत्तर पूर्व पहाड़ी में एक बैलेंसिंग रॉक संतुलित चट्टान पर अपना संतुलन बनाये रखी है। इस क्षेत्र को डिगडोला कहते हैं। आदिवासियों के लिए यह पूजा स्थल के रूप में विख्यात है।

कान्हा मैदान - कान्हा के चारों ओर घास के मैदान स्थित हैं। यहाँ पहले खेती हुआ करती थी। विस्थापन में 26 परिवारों को वर्ष 1998-99 में मानेगांव में बसाया गया। इसके बाद खेत घास के मैदान में परिवर्तित हो गये, जिसके कारण शाकाहारी वन्य-प्राणियों की संख्या में बढ़ातरी हुई।

कान्हा एनीकट - देशीनाला में बना एनीकट जल संवर्धन के साथ वन्य जीवों के लिये बहु-उपयोगी माना जाता है। इस एनीकट का निर्माण 72 साल पहले हुआ था।

बाल विवाह

समाज में फैली कुरीति का हो अन्त

विकास के दौर में बाल विवाह एक नायूर के समान है। देश में हर व्यक्ति को शिथित करने की मुहिम चल रही है। हर व्यक्ति को उत्तम स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने के प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसे में बाल विवाह होना समाज के माथे पर एक कलंक के समान है। देश में अक्षय तृतीया (आखा तीज) पर हर वर्ष हजारों की संख्या में बाल विवाह किए जाते हैं। कोटोना संकट को लेकर देश में चल रहे लॉकडाउन के कारण हर जगह पुलिस प्रशासन की व्यवस्था चाक-चौबंद होने के घलते इस बार अक्षय तृतीया पर बाल विवाह होने की संभावना बहुत ही कम लगती है।

दे

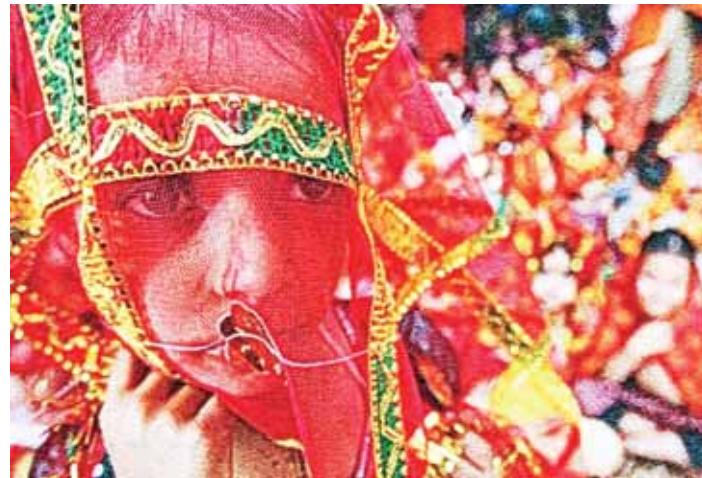
श में बाल विवाह जैसी कुप्रथा को जड़ से खत्म करना है तो इसके लिए समाज को ही आगे आना होगा तथा बालिकाओं के पोषण, स्वास्थ्य, सुरक्षा और शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करना होगा। समाज में शिक्षा को बढ़ावा देना होगा। अभिभावकों को बाल विवाह के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना होगा। सरकार को भी बाल विवाह की रोकथाम के लिये बने कानून का कड़ाई से पालन करवाना होगा। बाल विवाह प्रथा के खिलाफ समाज में जोरदार अभियान चलाना होगा। साथ ही सरकार को विभिन्न रोजगार के कार्यक्रम भी चलाने होंगे ताकि गरीब परिवार गरीबी की जकड़ से मुक्त हो सकें और इन परिवारों की बच्चियां बाल विवाह का निशाना न बन पाएं।

यूनिसेफ द्वारा जारी एक रिपोर्ट में कहा गया था कि भारत के कई क्षेत्रों में अब भी बाल विवाह हो रहा है। इसमें कहा गया है कि पिछले कुछ दशकों के दौरान भारत में बाल विवाह की दर में कमी आई है। लेकिन कई प्रदेशों में यह प्रथा अब भी जारी है। रिपोर्ट के अनुसार बाल विवाह की यह कुप्रथा आदिवासी समुदायों सहित कुछ विशेष जातियों के बीच प्रचलित है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि बालिका शिक्षा की दर में सुधार, किशोरियों के कल्याण के लिये सरकार द्वारा किये गए निवेश व कल्याणकारी कार्यक्रम और इस कुप्रथा के खिलाफ सार्वजनिक रूप से प्रभावी संदेश देने जैसे काटपों के चलते बाल विवाह की दर में कमी देखने को मिली है। यूनिसेफ के अनुसार अन्य सभी राज्यों में बाल विवाह की दर में गिरावट लाए जाने की प्रवृत्ति दिखाई दे रही है। किंतु कुछ जिलों में बाल विवाह का प्रचलन अब भी उच्च स्तर पर बना हुआ है।

यह रिपोर्ट हमारे सामाजिक जीवन के उस स्थान पहलू की ओर इशारा करती है जिसे अक्सर हम रीति-रिवाज के परम्परा के नाम पर अनदेखा करते हैं। देश में बाल विवाह के खिलाफ कानून बने हैं और समय-समय पर उसमें

संशोधन कर उसे और प्रभावशाली बनाया गया है। फिर भी लगातार बाल विवाह हो रहे हैं। भारत में बाल विवाह पर रोक संबंधी कानून सर्वप्रथम सन् 1929 में पारित किया गया था। बाद में सन् 1949, 1978 और 2006 में इसमें संशोधन किये गए। बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006 के तहत बाल विवाह कराने पर 2 साल की जेल व एक लाख रुपए का दंड निर्धारित किया गया है। फिर भी तमाम प्रयासों के बावजूद हमारे देश में बाल विवाह जैसी कुप्रथा का अन्त नहीं हो पा रहा है।



भारत में बेटी-बच्चाओं-बेटी पढ़ाओं जैसे अभियान के शुरू होने के बावजूद एक नाबालिंग बेटी की जबर्दस्ती शादी करा दी जा रही है। बाल विवाह मनुष्य जाति के लिए एक अभिशाप है। यह जीवन का एक कड़वा सच है कि आज भी छोटे-छोटे बच्चे इस प्रथा की भेंट चढ़े जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर जगह बेटी बचावों बेटी पढ़ाओं का नारा देते हैं। देश के सभी प्रदेशों में बेटियां शिक्षित हो रही हैं। ऐसे में समाज को आगे आकर कम उम्र में लड़कियों के होने वाले बाल विवाह रुकवाने के प्रयास करने होंगे। आजकल कई लड़कियां खुद भी



आगे आकर अपना बाल विवाह रुकवाने का प्रयास करने लगी हैं। गत वर्ष बिहार के बेगूसराय में एक 14 साल की लड़की की शादी हो रही थी। जिस पड़ित को शादी के लिए बुलाया था। लड़की की उम्र पता चलने पर उस पड़ित ने ही स्थानीय थाने को सूचना देकर बाल विवाह रुकवा दिया। बिहार के बेतिया में लॉकडाउन में रोजगार का कोई जरिया नहीं रहने से एक मजदूर पिता अपनी 13 साल की बेटी का विवाह करने जा रहा था। गरीबी में बेटी की शादी कर वो पेट भरने के बोझ से मुक्त हो जाना चाहता था। लेकिन लड़की स्कूल में पढ़ने जाती थी। उसने हेल्पलाइन नंबर पर फोन कर दिया। पुलिस आई और शादी रोक दी गई। भारत में यह प्रथा लम्बे समय से चली आ रही है जिसके तहत छोटे बच्चों का विवाह कर दिया जाता है। आश्वय की बात तो यह है कि आज के पढ़े लिखे समाज में भी यह प्रथा अपना स्थान बनाए हुए हैं। जो बच्चे अप्पी खुद को भी अच्छे से नहीं समझते। जिन्हें जिन्दगी की कड़ी सच्चाईयों का कोई ज्ञान नहीं। जिनकी उम्र अपी पढ़ने लिखने की होती है। उन्हें बाल विवाह के बंधन में बांधकर क्यों उनका जीवन बर्बाद कर दिया जाता है।

नेशनल हेल्थ फैमेली सर्वे-5 की 2020 में जारी रिपोर्ट के मुताबिक बिहार में 40.8 फीसदी लड़कियों का विवाह 18 वर्ष से कम आयु में हो गया। त्रिपुरा में 40.1 और पश्चिम बंगाल में 41.6 फीसदी लड़कियां बाल विवाह की शिकार हुई हैं। गुजरात में भी 20 फीसदी लड़कियां साल 2019 में बाल विवाह का शिकार हुई हैं।

आखिर क्यों धधक रही है पृथ्वी



“

प्रकृति कभी समुद्री तूफान तो कभी भूकम्प, कभी सूखा तो कभी अकाल के रूप में अपना विकराल रूप दिखाकर हमें निरन्तर चेतावनियां देती रही हैं किन्तु जलवायु परिवर्तन से निपटने के नाम पर वैश्विक पिंता व्यक्त करने से आगे हम शायद कुछ करना ही नहीं चाहते। पृथ्वी पर बढ़ते दबाव का एक महत्वपूर्ण कारण बेतहाशा जनसंख्या वृद्धि भी है। जहाँ 20वीं सदी में वैश्विक जनसंख्या करीब 1.7 अरब थी, अब बढ़कर करीब 7.8 अरब हो चुकी है। अब सोचने वाली बात यह है कि धरती का क्षेत्रफल तो उतना ही रहेगा, इसीलिए कई गुना बढ़ी आबादी के रहने और उसकी जरूरतें पूरी करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर दोहन किया जा रहा है। इससे पर्यावरण की सेहत पर जो प्रहार हो रहा है, उसी का परिणाम है कि धरती अब धधक रही है।

त

माम तरह की सुख-सुविधाएं और संसाधन जुटाने के लिए किए जाने वाले मानवीय क्रियाकलापों के कारण आज पूरी दुनिया ग्लोबल वार्मिंग की भयावह समस्या से त्रस्त है। इसीलिए पर्यावरण संरक्षण को लेकर लोगों में जागरूकता पैदान करने तथा पृथ्वी को बचाने के संकल्प के साथ प्रतिवर्ष 22 अप्रैल को विश्वभर में

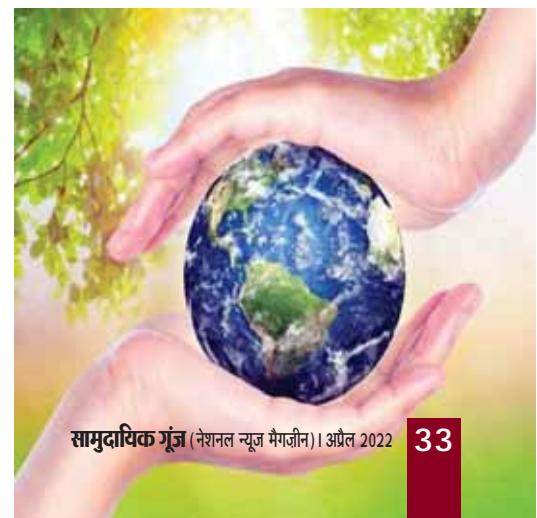
दिखाकर हमें निरन्तर चेतावनियां देती रही हैं किन्तु जलवायु परिवर्तन से निपटने के नाम पर वैश्विक चिंता व्यक्त करने से आगे हम शायद कुछ करना ही नहीं चाहते। अगर प्रकृति से खिलवाड़ कर पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर हम स्वयं इन समस्याओं का कारण बने हैं और गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर हम बाकई चिंतित हैं तो इन समस्याओं का निवारण भी हमें ही करना होगा ताकि हम प्रकृति के प्रकोप का भाजन होने से बच सकें। अच्युता प्रकृति से जिस बड़े पैमाने पर खिलवाड़ हो रहा है, उसका खामियाजा समस्त मानव जाति को अपने विनाश से चुकाना पड़ेगा। लोगों को पर्यावरण एवं पृथ्वी संरक्षण के लिए जागरूक करने के लिए साल में केवल एक दिन अर्थात् 22 अप्रैल को ‘पृथ्वी दिवस’ मनाने की औपचारिकता निभाने से कुछ हासिल नहीं होगा। अगर हम वास्तव में पृथ्वी को खुशहाल देखना चाहते हैं तो यही ‘पृथ्वी दिवस’ प्रतिदिन मनाए जाने की आवश्यकता है। पृथ्वी दिवस पहले प्रतिवर्ष दो बार 21 मार्च तथा 22 अप्रैल को मनाया जाता था लेकिन वर्ष 1970 से यह दिवस 22 अप्रैल को ही मनाया जाना तय किया गया। 21 मार्च को पृथ्वी दिवस केवल उत्तरी गोलार्द्ध के वसंत तथा दक्षिणी गोलार्द्ध के पतझड़ के प्रतीक स्वरूप ही मनाया जाता रहा है। 21 मार्च को मनाए जाने वाले ‘पृथ्वी दिवस’ को हालांकि संयुक्त राष्ट्र का समर्थन प्राप्त है लेकिन उसका केवल वैज्ञानिक व पर्यावरणीय महत्व ही है जबकि 22 अप्रैल को मनाए जाने वाले ‘पृथ्वी दिवस’ का पूरी दुनिया में सामाजिक एवं राजनैतिक महत्व है। संयुक्त राष्ट्र में पृथ्वी दिवस को प्रतिवर्ष मार्च एक्नोक्स (वर्ष का वह समय, जब दिन और रात बराबर होते हैं) पर मनाया जाता है और यह दिन प्रायः 21 मार्च ही होता है। इस परम्परा की स्थापना शांति कार्यकर्ता जॉन मकोनेल द्वारा की गई थी। वैश्विक स्तर पर लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए 22 अप्रैल 1970 को पहली बार पृथ्वी दिवस



पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। पिछले साल कोरोना महामारी के चलते दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में लगे लॉकडाउन के दौर में थम गई मानवीय गतिविधियों के कारण यह दिवस ऐसे समय में मनाया गया था, जब दुनियाभर के लोगों को पहली बार पृथ्वी को काफी हद तक साफ-सुथरी और प्रदूषण रहित देखने का सुअवसर मिला था। हालांकि कोरोना संकट के चलते लगाए गए लॉकडाउन के कारण पूरी दुनिया को पर्यावरण संरक्षण को लेकर सोचने का बेहतरीन अवसर मिला था, जिससे दुनियाभर के तमाम देश एकजुट होकर ऐसी योजनाओं पर विचार सके, जिनसे पर्यावरण संरक्षण में अपेक्षित मदद मिल सके लेकिन विडम्बना देखिये कि लॉकडाउन हटते ही धरती की हालत धीरे-धीरे हर जगह पूर्ववत बदतर होती गई।

प्रकृति कभी समुद्री तूफान तो कभी भूकम्प, कभी सूखा तो कभी अकाल के रूप में अपना विकराल रूप

वृहद स्तर पर मनाया गया था। तभी से हर साल 22 अप्रैल को यह दिवस मनाए जाने का निर्णय लिया गया। हालांकि पृथ्वी दिवस को मनाए जाने का वास्तविक लाभ तभी है, जब हम आयोजन को केवल रस्म अदायगी तक ही सीमित न रखें बल्कि धरती की सुरक्षा के लिए इस अवसर पर लिए जाने वाले संकल्पों को पूरा करने हेतु हरसंभव प्रयास भी करें। हमें बखूबी समझ लेना होगा कि अगर पृथ्वी का तापमान साल दर साल इसी प्रकार बढ़ता रहा तो आने वाले वर्षों में हमें इसके बेहद गंभीर परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा। ‘प्रदूषण मुक्त सांस’ पुस्तक के अनुसार पैट्रोल, डीजल से उत्पन्न होने वाले धूएं ने वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड तथा ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया है और वातावरण में पहले की अपेक्षा 30 फीसदी ज्यादा कार्बन डाइऑक्साइड मौजूद है, जिसकी जलवायु परिवर्तन में अहम भूमिका है। पेड़-पौधे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते रहे हैं लेकिन पिछले कुछ दशकों में वन-क्षेत्रों को बड़े पैमाने पर कंक्रीट के जंगलों में तब्दील किया जाता रहा है।



सत्य, न्याय एवं सदाचार के प्रतीक हैं श्रीराम

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम में सभी के प्रति प्रेम की अगाध भावना कूट-कूटकर भरी थी। उनकी प्रज्ञ वात्सल्यता, न्यायप्रियता और सत्यता के कारण ही उनके शासन को आज भी ‘आदर्श’ शासन की संज्ञा दी जाती है और आज भी अच्छे शासन को ‘रामराज्य’ कहकर परिभाषित किया जाता है। ‘रामराज्य’ यानी सुख, शांति एवं न्याय का राज्य। रामनवमी पर्व वास्तव में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की गुण सेवा, माता-पिता की सेवा व आज्ञापालन, जात-पात के मेदभाव को मिटाने, क्षमाशीलता, आतृप्रेम, पवित्रता, न्यायप्रियता आदि विभिन्न महान् आदर्शों एवं गुणों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देता है।

“

भ

गवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ल पक्ष नवमी को रामनवमी का त्योहार समूचे भारतवर्ष में अपार श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में उत्सवों का विशेष आयोजन होता

कोरोना संक्रमण के चलते ऐसे आयोजन ज्यादा धूमधाम से मनाए जाने की संभावना कम ही रहेगी लेकिन भीड़-भाड़ से बचकर लोग अपने घर में भी अपने आराध्य देव के जन्मोत्सव को श्रद्धापूर्वक मना सकते हैं।
वनवासी राम का सम्पूर्ण जीवन सामाजिक समरसता का

अनुकरणीय पथश्य है। श्रीराम ने वनगमन के समय प्रत्येक कदम पर समाज के अंतिम व्यक्ति को गले लगाया। केवट के बारे में हम सभी ने सुना ही है कि कैसे भगवान राम ने उनको गले लगाकर समाज को यह संदेश दिया कि प्रत्येक मनुष्य के अंदर एक ही जीव

आत्मा है। बाहर भले ही अलग दिखते हों, लेकिन अंदर से सब एक हैं। यहां जाति का कोई भेद नहीं था। वर्तमान में जिस केवट समाज को वंचित समुदाय की श्रेणी में शामिल किया जाता है, भगवान राम ने उनको गले लगाकर सामाजिक समरसता का अद्वृत उदाहरण प्रस्तुत किया है। सामाजिक समरसता के भाव को नष्ट करने वाली जो बुराई आज दिखाई दे रही है, वह पुरातन समय में नहीं थी। समाज में विभाजन की रेखा खींचने वाले स्वार्थी व्यक्तियों ने भेदभाव को जन्म दिया है।



है, जिनमें भाग लेने के लिए देशभर से हजारों भक्तगण अयोध्या पहुंचते हैं तथा अयोध्या स्थित सरयू नदी में पवित्र स्नान कर पंचकोसी की परिक्रमा करते हैं। समूची अयोध्या नगरी इस दिन पूरी तरह राममय नजर आती है और हर तरफ भजन-कीर्तनों तथा अखण्ड रामायण के पाठ की गूंज सुनाई पड़ती है। देशभर में अन्य स्थानों पर भी जगह-जगह इस दिन श्रद्धापूर्वक हवन, ब्रत, उपवास, यज्ञ, दान-पुण्य आदि विभिन्न धर्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है। हालांकि इस वर्ष फिर से बढ़ते

विभिन्न हिन्दू धर्मग्रंथों में कहा गया है कि श्रीराम का जन्म नवात्र के अवसर पर नवदुर्गा के पाठ के समाप्त के पश्चात हुआ था और उनके शरीर में मां दुर्गा की नवी शक्ति जागृत थी। मान्यता है कि त्रेता युग में इसी दिन अयोध्या के महाराजा दशरथ की पटसनी महारानी कौशल्या ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को जन्म दिया था। वालिमकी रामायण के अनुसार, “भगवान श्रीराम घन्द्रा के समान अति सुंदर, समुद्र के समान गंगी और पृथ्वी के समान अत्यंत धैर्यवान थे तथा इन्हें शील सम्पन्न थे कि दुखों के आरेण में जीने के बावजूद कभी किसी को कटू वर्णन नहीं बोलते थे। वे अपने माता-पिता, गुरुजनों, भाईयों, सेवकों, प्रजाजनों अर्थात् हर किसी के प्रति अपने स्नेहपूर्ण दायित्वों का निर्वाह किया करते थे। माता-पिता के प्रति कर्तृत्य पालन एवं आज्ञा पालन की भावना तो उनमें कूट-कूटकर भरी थी। उनकी कठोर से कठोर आज्ञा के पालन के लिए भी वह हर समय तत्पर रहते थे।”

अंचल का लोक संगीत



“
लोकगीत लोक के गीत हैं। जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा लोक समाज अपनाता है। सामाजिक लोक नृत्य प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जा सकता है। लोकगीतों का रचनाकार अपने व्यक्तित्व को लोक समर्पित कर देता है। शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामाजिक लोकव्यवहार के उपयोग नें लाने के लिए मानव अपने आनंद की तरफ में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज उद्भूत करता है, वही लोकगीत है।

● गृज न्यूज नेटवर्क,

सं

गीत की विरासत की बात करे तो इसका बजूद देवताओं से लेकर इंसानों तक इतना विस्तृत है



की जीवन, प्रकृति, देवगण, प्रेम, नफरत, युद्धघोष, मौसम, जीव -जंतु तक इसमें समाये हुए हैं। लोकसंगीत एक ऐसा उपहार है जो बरदान है.. और बात है लोकसंगीत की तो यह हमारी लोक संस्कृति की पहचान है, ग्रामीण जनजीवन की लोक कला, त्यौहार, गीतरिचाज़ आदि के सारे रंगों का जीवन्त चित्रण है लोकसंगीत। हमारा चम्बल का अंचल लोकगीतों की कई विधाओं को अपने अंचल में समेटे हुए है। जिनमें कुछ लोकगीत शैली की बात करे तो कहन्हैया लोकगीत एक ऐसी परम्परा का निर्बाहन करता है जिसमें बृज और बुदेली शैली का मिश्रण है। हालांकि इस मैं कोई काव्यात्मक शैली नहीं होती। इसका पूरा विषय भक्ति, संस्कृति, लोकपरम्परा आधारित होता है। आमतौर पर कहन्हैया लोकगीत किसी संगीत वाद्ययंत्र के मोहताज नहीं होते, और देखा जाये तो इसकी कोई खास राग रागनी के बारे मैं कोई लिखित प्रमाण मिला है, आमतौर पर पुराने समाये जान्हतों मैं रहने वाली जातियों ने इसे संजोया है।

हालांकि ये आजकल अपना मूलस्वरूप खो रही है। फिर भी बुजुर्गों की विरासत के तौर पर कुछ टोलियों ने इसे ज़िंदा रखा है। इसका प्रदर्शन गांव- चौपालों पर होता है परं विशाल

स्वरूप आप ग्वालियर मेले के पश्च मेले आज भी देखने को मिलता है कुछ और अंचल के लोक गीत परंपरा के बारे मैं आप को बताते। कई और लोकगीतों की जो प्रचलित कला है उन मैं एक है लांगुरिया।

लांगुरिया

लांगुरिया में बृज भाषा का पुट स्पष्ट दिखाई देता है। लोक गीतों की कई ऐसी विधाएं हैं जिनमें बृज भाषा बृज के कवियों का विशेष योगदान रहा है। लांगुरिया पर लोक नृत्य भी किया जाता है लांगुरिया इसमें मान्यताओं और हंसी-ठिठोली का वर्णन रहता है। जो समय के साथ सिमट गई हैं, अब यह गावों में अपने आखिरी चरण पर हैं। अन्य लोकगीत शैलीयों में प्रमुख है।

गोठ: इसमें भी लोक देवताओं की गाथाएं गाई जाती हैं। (के भये कनैया, के भए कारस, जिने गयियन की राक्खी हो लाज हो...) गुरुज रसमुदाय जो चम्बल और केन नदी के बीच बसेरा करते थे उनके लोकदेवता के रूप मैं मान्य कारसदेव को ये लोकगीत शैली समर्पित है, उनकी गाथा उनके सम्मान मैं छोटी छोटी गाथा के रूप में गाई जाती है।

लीला

लीला मैं लोक देवी देवताओं का प्रसास्ति गान होता है, जो की आमतौर पर तीज त्यौहारों आदि मैं गया जाता है इसमें कई लोक परम्पराओं का उल्लेख भी होता है, साथ ही लोकदेवताओं की परम्परा को भी शामिल किया जाता है।

दिमरयाई

इसे ढीमर जाति के लोग ही गाते हैं। इसमें पानी और पानी के जीवों का वर्णन होता है। ढीमर समाज द्वारा गये जाने वाले लोकगीतों मैं जीवन दायक जल और उस जल मैं विचरण करने वाले जीव जन्तुओं का लोक शैली मैं गयन किया जाता है।

राई

बेड़िया समाज का लोकसंगीत और लोकनृत्य राई यु तो

सामाजिक दृष्टिकोण से बेड़िया समाज की संस्कृति का हिस्सा है, किन्तु कई लोगों का ऐसा मानना है की राई शब्द का उच्चारण राधा से आया है .. क्यों की इस लोकगीत के कई शब्द राधा द्वारा कृष्ण को रिज़ाने को गये गए लोकगीतों का मिश्रण है। मगर दूसरे विद्वान इसे विशुद्ध रूप से आदिवासी नृत्य मानते हैं। चूंकि यह नृत्य मशाल की रोशनी में होता था और मशाल को बुझने न देने के लिए इसमें राई डाली जाती थी, इसीलिए यह राई नृत्य कहलाया। सच तो यह है की लोकगीतों की देशव्यापी चर्चा तो अनंत है लेकिन अगर अंचल की ही बात करे तो ये लेख अधूरा है, क्यों की हमारे अंचल मैं ही लोकगीतों का इतना विस्तृत संसार है की उन को सिर्फ इस लेख मैं नहीं समेटा जा सकता। और इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता की लोकगीतों की लुप्त होती परंपरा को जो कुछ गायक या गायन टोली इस विस्तृत परम्परा को तब भी अपनी दम पर जीवित रखे, जब हिंदी फिल्मों मैं इनके मूल स्वरूप को बिगाड़ कर फूहड़ तरीके से पेश किया जा रहा है, इस के हेतु कुछ नियम बनाने की बेहद आवश्यकता है साथ ही लोक गायकी की परंपरा को बचाने की जरूरत भी है।



पैथोलॉजी में है सुनहरा भविष्य, ऐसे बनाएं कैरियर

पै

थोलोजिस्ट बनने के लिए आपको भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के संयोजन के साथ विज्ञान की पृष्ठभूमि की आवश्यकता होती है। आप एमबीबीएस कंप्लीट करने के बाद पैथोलॉजी में एमडी कर सकते हैं। विकित्सा के क्षेत्र में यूं तो कैरियर की असीम संभावनाएं मौजूद हैं, लेकिन पैथोलॉजी को एक बेहतरीन शाखा माना जाता है। यह सबसे पुराने विकित्सा विधियों में से एक है। इस समय जिस तरह कोरोना का संक्रमण रहा है, उस कठिन दौर में पैथोलॉजिस्ट एक कोरोना वैरियर्स के रूप में सामने आए हैं। इस क्षेत्र की महत्वा का अंदाज मौजूदा हालात में आसानी से समझा जा सकता है। एक पैथोलॉजिस्ट विभिन्न अंगों, रक्त, ऊतक नमूनों, शारीरिक तरल पदार्थ और पूरे शरीर की परीक्षा के माध्यम से रोग का अध्ययन की करते हैं। यह क्षेत्र रोगों की बुनियादी समझ और निदान में सुधार करने में मदद करता है। आप भी इस क्षेत्र में कैरियर की असीम संभावनाएं खोज सकते हैं। तो चलिए जानते हैं इसके बारे में—
क्या होता है काम

पैथोलॉजिस्ट का मुख्य काम विभिन्न टेस्ट को कंडक्ट करना होता है। वह किसी विशेष बीमारी के कारण की जाँच करके संबंधित डॉक्टरों को दवा और इलाज के बारे में सूचित करता है। पैथोलॉजिस्ट पौधे, जानवर या मानव पैथोलॉजी दोनों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जो पैथोलॉजिस्ट मानव रोगों से निपटते हैं, आमतौर पर अन्य चिकित्सकों के परामर्शदाता के रूप में

कार्य करते हैं, और इस प्रकार रोगियों की दैनिक देखभाल में योगदान करते हैं। रोगों की प्रवृत्ति का अध्ययन करने के साथ, वे उन बीमारियों के निपटान के उपचार और अन्य साधनों की खोज करने की कोशिश करते हैं।



योग्यता

पैथोलॉजिस्ट बनने के लिए आपको भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के संयोजन के साथ विज्ञान की पृष्ठभूमि की आवश्यकता होती है। आप एमबीबीएस कंप्लीट करने के बाद पैथोलॉजी में एमडी कर सकते हैं। एमडी तीन साल का होता है। इसके अलावा अगर आप चाहते हों तो दो साल का पोस्ट ग्रेजुएट डिलोमा प्रोग्राम भी कर सकते हैं।

स्किल्स

एक पैथोलॉजिस्ट बनने के लिए आपको स्पष्ट और सटीक टिप्पणी करनी आनी चाहिए, तभी आप किसी सैंपल का विश्लेषण करके उसकी स्टीक जानकारी दे पाएंगे। इसके अलावा मौखिक व लिखित रूप से विचारों को व्यक्त करने की क्षमता, क्रिटिकल थिंकिंग क्षमता, रोगियों की सेवा करने की इच्छा, भावनात्मक स्थिरता, धैर्य, अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता व प्रतिबद्धता और समय पर निर्णय लेने की क्षमता जैसे गुण भी एक पैथोलॉजिस्ट में होने चाहिए। इनमें से एक भी अच्छा होना जरूरी है।

संभावनाएं

एक पैथोलॉजिस्ट के लिए कैरियर की अपार संभावनाएं मौजूद हैं। पैथोलॉजिस्ट आमतौर पर तीन व्यापक क्षेत्रों में कार्य करते हैं— अस्पतालों में निदान करने वाले के रूप में विकित्सा प्रयोगशालाओं में और कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के रूप में जांचकर्ता या शोधकर्ता के रूप में। एक पैथोलॉजिस्ट प्रतिष्ठित सरकारी अस्पतालों जैसे कि एम्स आदि में काम कर सकते हैं। इसके अलावा सैन्य और सरकारी एजेंसियों में जैसे कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान, सशस्त्र बल पैथोलॉजी संस्थान, और खाद्य और औषध प्रशासन आदि में भी उनके लिए अवसर मौजूद हैं। दवा निर्माण, दवा और जैव प्रोटोग्राफी की कंपनियां भी पैथोलॉजिस्ट नियुक्त करती हैं। इनमें से एक जूड़ दीक्षिण अमेरिका में बतौर कंसल्टेंट भी काम कर सकते हैं।

न्यूट्रिशन और डाइटेटिक्स के क्षेत्र में हैं कैरियर की अपार संभावनाएं

आ

ज के समय में मेडिकल की दुनिया सिर्फ दवाई और डायनोसिस तक ही सीमित नहीं रह गई है, बल्कि आहार-सेहत इसके महत्वपूर्ण फैक्टर हो गए हैं। हॉस्पिटलिटी इंडस्ट्री में पोषण और आहार के क्षेत्र में बतौर डाइटिशन कैरियर बनाना अब लोगों को काफी फायदेमंद लगने लगा है। आज के समय में विभिन्न प्रकार के कैरियर ॲप्लिकेशन उभर रहे हैं, और इन पर तमाम युवा विश्वास भी जता रहे हैं।

वयोंकि हेल्थ को लेकर जागरूकता तेजी से बढ़ रही है, और हेल्थ की जब भी बात आती है, तो खानपान और पोषण से संबंधित जानकारियों की अहमियत बढ़ जाती है। चूंकि आज के समय में कोरोना चाल रहा है, और कोरोना पीरियड में वर्क फॉम होम कल्चर जबरदस्त ढंग से बढ़ा है। ऐसी स्थिति में घर बैठे लोगों को आहार और पोषण संबंधित जानकारियों सटीकता से दे पाए, इस प्रकार के कैरियर ॲप्लिकेशन का उभरना स्वाभाविक ही है।

आज के समय में मेडिकल की दुनिया सिर्फ दवाई और डायनोसिस तक ही सीमित नहीं रह गई है, बल्कि आहार-सेहत इसके महत्वपूर्ण फैक्टर हो गए हैं। हॉस्पिटलिटी इंडस्ट्री में पोषण और आहार के क्षेत्र में बतौर डाइटिशन कैरियर बनाना आवश्यकता होती है। हॉस्पिटलिटी इंडस्ट्री में आपको फूड साइंस में या फिट रहना चाहता है, और ऐसे में डाइटिशन की डिमांड निश्चित रूप से बढ़ जाती

है। बता दें कि अगर आप भी इस फील्ड में कैरियर बनाना चाहते हैं, तो खाद्य पदार्थों की बारीक जानकारी, उसकी एनालिसिस कर



पाना, उसके रेकेल को समझना और मेडिकल रिसर्च जानना ज़रूरी हो जाता है। इससे युद्ध को अपडेट रखना उतना ही ज़रूरी है, जितना किसी अन्य पेशी में लोग उसकी बारीकियों को ध्यान रखते हैं। कोविड-19 में पोषण विशेषज्ञ और आहार विशेषज्ञों की मांग जबरदस्त ढंग से बढ़ी है। हार कोई अपनी इम्युनिटी ठीक रखना चाहता है, फिट रहना चाहता है, और ऐसे में डाइटिशन की डिमांड निश्चित रूप से बढ़ जाती

है। डाइटिशन न्यूट्रिशनिस्ट की मांग इन दिनों सबसे ज्यादा है। पहले के समय में न्यूट्रिशन एंड डाइटेटिक्स एक्सपर्ट, कंज्यूमर प्रोडक्ट कंपनियों में ही रहते थे, किंतु अब रोजमर्रा की सेहत से संबंधित प्रोडक्ट बनाने वाली कंपनियां भी इनका उपयोग कर रही हैं। एफएमसीजी की कॉलेज, बोनविटा, हेल्थ ड्रिक्स इत्यादि कंपनियां भी इस तरह के विशेषज्ञों को अपने पास रख रही हैं। होटल इंडस्ट्री में भी बड़े-बड़े होटल इस फील्ड के एक्सपर्ट को काम पर रखती ही है।

यहां तक कि गवर्नमेंट स्तर पर भी डाइटिशन न्यूट्रिशन सरकारी हॉस्पिटल में भी नजर आने लगे हैं। बिल्कुल स्कूल, कैफेटेरिया और अन्य कंपनियां भी इस तरह की नियुक्तियों पर काम करने लगी हैं। इसके अलावा एथलीट, स्पोर्ट में तो यह बिल्कुल जुड़ा हुआ क्षेत्र है। मतलब कि अगर आप कोई खिलाड़ी हैं, या खिलाड़ियों से जुड़े स्स्थानों से संबंध रखते हैं, तो आपको इस तरह के न्यूट्रिशन और डाइटेटिक्स सर्विसेज लेनी ही होगी।

इसके अलावा कैरियर ॲप्लिकेशन की बात करें तो स्पीकिंग, रिसर्च एंड डेवलपमेंट में अपार संभावनाओं से जुड़ा हुआ यह क्षेत्र काफी महत्व का हो गया है। अगर योग्यता की बात करें तो होम साइंस या फिर साइंस से अगर आपने प्लस टू किया हुआ है, तो उसके बाद बैचलर डिग्री, फिर मास्टर डिग्री अथवा डिलोमा कोर्स करके इस क्षेत्र में अपना कैरियर बना सकते हैं। 1 साल का डिलोमा कोर्स करने के लिए आपको फूड साइंस में या फिर बायोटेक्नोलॉजी अथवा होम साइंस में बैचलर डिग्री रखना ज़रूरी है।

फेस पैक में भूलकर भी ना करें यह इंग्रीडिएंट्स इस्तेमाल, स्किन को होगा नुकसान

कु

छ लोग अपने स्किन के बेकिंग सोडा का इस्तेमाल करते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह मुँहासों को कम करने, काले धब्बों को हल्का करने और अन्य स्किन प्रॉब्लम्स को भी दूर करने में मदद करता है। लेकिन, वास्तव में यह निश्चित रूप से सुरक्षित नहीं है।

स्किन की केयर का सबसे बेहतर तरीका है नेचुरल चीजों को इस्तेमाल करना। आमतौर पर, अपनी स्किन को पैम्पर करने के लिए हम घर पर ही फेस पैक बनाना अधिक पसंद करते हैं और इसके लिए किचन में ही मौजूद कई तरह के इंग्रीडिएंट्स को यूज भी करते हैं। लेकिन वास्तव में यह सोचना कि किचन में मौजूद हर इंग्रीडिएंट आपकी स्किन को लाभ पहुंचाएगा, यह गलत है। कभी-कभी कुछ नेचुरल इंग्रीडिएंट्स भी आपकी स्किन पर विपरीत असर डाल सकते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको कुछ ऐसे ही नेचुरल इंग्रीडिएंट्स के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें आपको अपने स्किन के बारे में शमिल करती हैं या फिर फेस पैक का हिस्सा बनाती हैं। लेकिन हर किसी को नींबू का इस्तेमाल फेस पर करने की सलाह नहीं दी जाती है।

नींबू एक ऐसा इंग्रीडिएंट है, जिसे अमूमन महिलाएं अपने स्किन के बारे रुटीन में शमिल करती हैं या फिर फेस पैक का हिस्सा बनाती हैं। लेकिन हर किसी को नींबू का इस्तेमाल फेस पर करने की सलाह नहीं दी जाती है। दरअसल, नींबू प्रकृति में अत्यधिक अम्लीय होता है और त्वचा में जलन पैदा कर सकता है। इसके अलावा,

इसका तेल यूवी किरणों के संपर्क में आने पर आपकी त्वचा पर फोटोऑक्सिक प्रतिक्रिया पैदा कर सकता है।



इसका मतलब है कि यह फफोले या चक्के पैदा कर सकता है। इसलिए, नींबू का इस्तेमाल बेहद सोच-समझकर करें।

बेकिंग सोडा

कुछ लोग अपने स्किन के बेकिंग सोडा का इस्तेमाल करते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह मुँहासों को कम करने, काले धब्बों को हल्का करने और अन्य स्किन प्रॉब्लम्स को भी दूर करने में मदद करता है।

लेकिन, वास्तव में यह निश्चित रूप से सुरक्षित नहीं है। दरअसल, बेकिंग सोडा में कई कंपांड छोते हैं जो कि आपकी त्वचा को नुकसान पहुंचा सकते हैं और स्किन की एलर्जी का कारण बन सकता है।

विनेगर

नींबू की तरह ही विनेगर का इस्तेमाल भी फेस पैक में करना अच्छा आइडिया नहीं है। दरअसल, सिरका में उच्च पीएच होता है और प्रकृति में अत्यधिक अम्लीय होता है। यह जलन, सनबर्न, रासायनिक जलन आदि का कारण बन सकता है। इसलिए जहां तक संभव हो, आप विनेगर को फेस पैक में इस्तेमाल करना अवॉयड करें।

चीनी

कई फेस स्क्रब में लोग चीनी का इस्तेमाल करना पसंद करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि चीनी एक

प्राकृतिक एक्सफोलिएटर के रूप में काम करती है और आपके चेहरे से गंदगी और कीटाणुओं को दूर करती है। लेकिन यहां आपको यह भी समझना आवश्यक है कि आपकी फेस स्किन बॉडी स्किन से अधिक कोमल होती है और इससे फेस पर इस्तेमाल करने से आपकी स्किन में रेडेस व अन्य प्रॉब्लम्स हो सकती हैं। यदि आप अपना फेस पैक तैयार करते समय प्राकृतिक स्क्रबर का उपयोग करना चाहते हैं, तो आप नमक या ओटमील का ऑशन चुन सकते हैं।

भी उतनी ही फायदेमंद है।

निशानों को करे हल्का

शहद में प्राकृतिक एंटीसेप्टिक गुण होते हैं जो घाव भरने और निशानों को मिटाने में मदद करते हैं। ऐसे में अगर आप अपनी स्किन पर किसी तरह के निशान को हल्का करना चाहते हैं तो ऐसे में शहद के इस्तेमाल से वह धीरे-धीरे मिटने लगते हैं। आप एकने के दाग-धब्बों को मिटाने के लिए शहद का इस्तेमाल स्पॉट ट्रीटमेंट के रूप में कर सकते हैं।

सनबर्न से राहत

अगर आप अपनी स्किन पूरे दिन धूप में रहने के कारण डैमेज हो रही हैं तो ऐसे में शहद आपकी मदद कर सकता है। धूप से झुलसी त्वचा के कारण स्किन में रेडेस, सूखापन और जलन महसूस होती है। ऐसे में अपनी स्किन को ठंडक प्रदान करने के लिए आप एक भाग कच्चे शहद को दो भाग एलोवेरा जेल के साथ मिक्स करें और सीधे प्रभावित जगह पर लगाएं।



अगर आप अपनी स्किन को नेचुरली हेल्दी व ग्लोइंग बनाना चाहती हैं तो इसके लिए शहद से अधिक बेहतर उपाय और कोई नहीं है। शहद में त्वचा को चमकदार बनाने के गुण होते हैं और यह उपयोग के बाद यह आपके फेस पर चमक के साथ-साथ नमी भी बनाए रखता है। रुखी स्किन की महिलाएं तो ऐसे इस्तेमाल करती हैं ही, साथ ही साथ यह ऑयली, एक्ने और अन्य स्किन के लिए

डायबिटीज के मरीजों के लिए फायदेमंद हैं ये फल और सब्जियां

डा

यानि शुगर की बीमारी आजकल बहुत आम हो गई है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक, हर उम्र के लोग इस बीमारी की चपेट में आ रहे हैं। डायबिटीज में मरीज का ब्लड शुगर लेवल तेज़ी से बढ़ जाता है। डायबिटीज के मरीजों को अपने खानपान का खास खाल रखना चाहिए। डायबिटीज के मरीजों को मीठा, तला-भुना, और ज्यादा कैलोरी वाली चीज़ें खाने से परहेज करना चाहिए। लोगों में यह आम धारणा होती है कि डायबिटीज में वे बेझिज्ञक फलों और सब्जियों का सेवन कर सकते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। कुछ ऐसे फल और सब्जियां भी होते हैं जो डायबिटीज के मरीजों के लिए बहुत नुकसानदायक होते हैं। डायबिटीज के मरीजों को अधिक मीठे फलों के साथ-साथ स्टार्च वाली सब्जियों से परहेज करना चाहिए। इन फलों और सब्जियों में कार्बोहायड्रेट की मात्रा ज्यादा होती है जिससे ब्लड शुगर लेवल बढ़ जाता है। आज के इस लेख में हम आपको बताएंगे कि डायबिटीज के मरीजों को कौन से फलों और सब्जियों का सेवन करना चाहिए-

अमरुद

अमरुद ना सिर्फ खाने में स्वादिष्ट होता है बल्कि यह हमारी सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद है। इसमें

विटामिन सी, विटामिन ए, फॉलेट, पोटैशियम जैसे कई



पोषक तत्व मौजूद होते हैं। अमरुद का ग्लाइकैमिक इंडेक्स लो होता है जो ब्लड शुगर को कंट्रोल में रखने में मददगार होता है। डॉक्टर्स के मुताबिक डायबिटीज के मरीज अमरुद का सेवन कर सकते हैं।

जामुन

डायबिटीज के मरीजों के लिए बेस्ट फ्रूट माना जाता है। जामुन के सेवन से ब्लड में शुगर के लेवल को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। डॉक्टर्स के मुताबिक

जामुन के बीजों का पाठड़ बनाकर खाने से डायबिटीज के मरीजों को फायदा होता है।

कीवी

डायबिटीज के मरीजों के लिए कीवी का सेवन बहुत फायदेमंद होता है। इसमें विटामिन ए, विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स की भरपूर मात्रा होती है जो ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मददगार होते हैं। यह ब्लड शुगर या ग्लूकोज को एकदम से बढ़ने से रोकता है।

सेब

यह तो हम सब जानते हैं कि सेब हमारी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है। डॉक्टर्स हर किसी को सेब खाने की सलाह देते हैं। डायबिटीज के मरीजों के लिए भी सेब बेहद फायदेमंद होता है। सेब में सॉल्युबल और इनसॉल्युबल फाइबर होते हैं जो ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रण में रखने में मददगार होता है।

संतरा

संतरा भी डायबिटीज के मरीजों के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। संतरा में भरपूर मात्रा में फाइबर, विटामिन सी, फोलेट और पोटैशियम होता है जो डायबिटीज में राहत दिलाने का काम करता है।

सेहतमंद रहने के लिए डायबिटीज के दोगी इस तरह बनाएं आहार चार्ट

जा

आज के समय में मधुमेह यानि डायबिटीज होना आम बात है। जब ब्लड में शुगर का लेवल ज्यादा होता है तो ये बीमारी होती है। ऐसे में बार-बार प्यास लगने, पेशाब आने और ज्यादा भूख लगने जैसी समस्या होनी शुरू हो जाती है। इस बीमारी के चलते व्यक्ति का अग्न्याशय सही से इन्सुलिन का उत्पादन नहीं कर पाता है। वहीं, अगर इस तरह के समस्या ज्यादा समय तक रहती है तो रोगी कई तरह की बीमारियों को न्योता दे सकता है।

चिकित्सकों के अनुसार मधुमेह के रोगियों के लिए शारीरिक गतिविधि और पोषण के साथ ही एक सेहतमंद रहन-सहन का होना खास हिस्सा है। इसके अलावा रोगी स्वस्थ खान-पान अपनाकर और सक्रिय रहकर खुद-ब-खुद रक्त ग्लूकोज लेवल को लक्ष्य सीमा में रख सकता है। इसके लिए आपको शारीरिक गतिविधियों, सेहतमंद भोजन और मधुमेह की दवाइयों में ठीक संतुलन बनाने की जरूरत है। मधुमेह रोगी कब, कितना और क्या खाता है, ये सभी उनके रक्त ग्लूकोज को लेवल में रखने के लिए अपनी खास भूमिका निभाते हैं।

हालांकि मधुमेह के रोगियों के लिए शारीरिक तौर पर ज्यादा सक्रिय रहना और अपने भोजन में बदलाव करना, शुरुआत में थोड़ा कठिन हो सकता है, लेकिन

थोड़े समय बाद आप इन बदलावों को अपने लाइफस्टाइल में जोड़कर सेहतमंद बने रह सकते हैं। वहीं,



आज हम आपको मधुमेह आहार, भोजन और शारीरिक गतिविधियों के बारे बताने जा रहे हैं जिन्हें अपनाकर आप इस समस्या से राहत पा सकते हैं, आइए जानते हैं...

हेल्थ एक्सपर्ट्स कहते हैं कि मधुमेह के रोगी अपने पसंद का हर खाद्य पदार्थ का सेवन कर सकते हैं, लेकिन उन्हें छोटे भाग खाने या कम आनंद लेने की

जरूरत हो सकती है। आपको अपने आहार में भोजन की योजना की रूपरेखा में सभी खाद्य समूहों से अलग-अलग तरह के स्वस्थ खाद्य पदार्थ खाने हैं।

मधुमेह आहार चार्ट

- मधुमेह के आहार में अगर सब्जियों की बात करें तो आप टमाटर, गाजर, ब्रोकोली, साग और मिर्च शामिल करें, ये सभी सब्जियां नॉनस्टार्च मानी जाती हैं। जबकि स्टार्ची सब्जियों में आप मक्का, आलू और हरी मटर शामिल करें।

- फलों में आप तरबूज, संतरा, सेब, जामुन, अंगूर और केला शामिल करें।

- अनाज में दिन के समय न्यूनतम आधा साबुत अनाज होना चाहिए। इसमें आप चावल, गेहूं, जई, जौ, कॉर्नमील और किनोआ शामिल कर सकते हैं।

- प्रोटीन में आप दही, पनीर, मूंगफली, अंडे, बिना त्वचा का चिकन, मछली, दुबला मांस, मांस के विकल्प, जैसे टोफू का सेवन कर सकते हैं।

- सरसों के तेल, कैनोला और जैतून के तेल का आप इस्तेमाल कर सकते हैं।

विटामिन सी सीरम से स्किन को मिलते हैं क्या फायदे

आ

जकल महिलाएं अपनी स्किन की देखभाल का लिए कई तरह के स्किन केयर प्रॉडक्ट्स का इस्तेमाल करती हैं और इन्हीं में से एक है सीरम। यूं तो आपको मार्केट में कई तरह के सीरम मिल जाएंगे, लेकिन विटामिन सी सीरम को सबसे अच्छा प्रॉडक्ट माना जाता है। विटामिन सी सीरम में ना केवल एंटी-एजिंग इंग्रीडिएंट्स मौजूद होते हैं। बल्कि यह आपकी स्किन को अधिक स्मृदू और ग्लोइंग भी बनाता है। आमतौर पर, यह माना जाता है कि बढ़ती उम्र की महिलाओं को विटामिन सी सीरम का इस्तेमाल करना चाहिए। हालांकि, हर स्किन की महिला इसे बेहद आसानी से यूज कर सकती है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको विटामिन सी सीरम से होने वाले कुछ बेहतरीन लाभों के बारे में बता रहे हैं-

स्किन को करे ब्राइटन

विटामिन सी सीरम को स्किन केयर रूटीन में शामिल करने का एक सबसे बड़ा लाभ यह है कि आपकी स्किन पर मौजूद पिगमेंटेशन को फेड करके उसे अधिक ब्राइटन करने में मदद करता है। अगर आप इसका इस्तेमाल करते हैं, तो यह डलनेस को दूर करता

है और त्वचा को एक यूथफुल ग्लो प्रदान करता है। ऐसे में अगर आपकी स्किन को अधिक ग्लोइंग व



यूथफुल बनाए रखना चाहते हैं तो आपको विटामिन सी सीरम का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए।

स्किन टोन को करे इवन

विटामिन सी सीरम में एंटी-इंफ्लमेट्री गुण पाए जाते हैं, जिसका तात्पर्य यह है कि अगर इसे स्किन पर सही तरह से अप्लाई किया जाए तो यह आपकी त्वचा को

शांत करता है और सूजन को कम करता है, जिससे आपके चेहरे पर चमक आती है। वहीं, जिन लोगों को

स्किन में रेडनेस, डॉक्स स्पॉट्स या फिर अनइवन स्किन टोन की समस्या होती है, उनके लिए भी विटामिन सी सीरम बेहद ही लाभदायक है। आप इसे बेहद आसानी से इस्तेमाल करके एक इवन स्किन टोन पा सकते हैं।

अंडर-आई सर्कल्स से छुटकारा

विटामिन सी सीरम आपकी स्किन के साथ-साथ अंडर आई एरिया को भी लाभ पहुंचाता है। जब आप इसे

आंखों के नीचे के एरिया पर इस्तेमाल करते हैं तो यह उसे हाइड्रेट करता है, जिससे महीन रेखाओं को कम करने में मदद मिलती है। हालांकि विटामिन सी ओवरऑल रेडेस को कम करने में अधिक प्रभावी है, लेकिन जिन लोगों को अंडर आई एरिया में डिस्कलरेशन की समस्या है, वह विशेष रूप से उस एरिया में सीरम का इस्तेमाल अवश्य करें।

फेस शेप के अनुसार कुछ इस तरह करवाएं हेयर कट

अ

गर आपका फेस शेप ओवल है तो यकीन मानिए कि आप बहुत अधिक लकी हैं। दरअसल, यह एक ऐसा फेस शेप है, जिस पर कई तरह के हेयरस्टाइल्स और हेयर कट्स को ट्राई किया जा सकता है। ओवल फेस शेप पर लगभग हर तरह का हेयर कट जंचता है। यह तो हम सभी को पता है कि हमारे लुक में हेयर का एक अहम रोल होता है। तभी तो लोग जब भी अपने लुक में एक चेंज चाहते हैं तो हेयर कट करवाना पसंद करते हैं। यूं तो हर तरह के हेयर कट का अपना एक अलग चार्म होता है। लेकिन वह हेयर कट आप भी अच्छा लगे, यह जरूरी नहीं है। ऐसा इस्लिए भी है, क्योंकि हर व्यक्ति का फेस शेप अलग होता है और इस्लिए उसे ऐसा हेयर कट करवाना चाहिए, जो उनके फेस शेप को कॉम्पलीमेंट करे। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको डिफरेंट फेस शेप के अनुसार कुछ हेयर कट्स के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें आप बेहद आसानी से ट्राई कर सकते हैं-

आगर आपका फेस शेप ओवल है तो यकीन मानिए कि आप बहुत अधिक लकी हैं। दरअसल, यह एक ऐसा फेस शेप है, जिस पर कई तरह के हेयरस्टाइल्स और हेयर कट्स को ट्राई किया जा सकता है। ओवल फेस शेप पर लगभग हर तरह का हेयर कट जंचता है। ओवल

फेस की महिलाएं जो शॉर्ट हेयर रखना पसंद करती हैं, वह ब्लॉट बॉब हेयरकट या लॉब हेयरकट ट्राई कर



सकती हैं। वहीं, अगर आप लॉन्ग हेयर लुक रखना चाहती हैं तो ऐसे में आप मिनिमल लेयर्स लुक रख सकती हैं।

स्क्रेयर फेस के लिए हेयर कट

अगर आपका फेस शेप स्क्रेयर है तो इसका अर्थ है कि आपकी जॉलाइन बेहद शॉर्प है और ऐसे में आपको ऐसे

हेयर कट्स को चुनना चाहिए, जो उसे एक सॉफ्ट लुक दें। आपको ऐसे ब्लॉट कट से बचना चाहिए, जो

जॉलाइन पर खत्म हो, क्योंकि ऐसे हेयरकट आपकी जॉलाइन को और भी अधिक शॉर्प दिखाते हैं। साथ ही आपका फेस अधिक स्क्रेयर नजर आता है। आप हेयरकट में लेयर्स का ऑशन चुन सकती हैं। इसके अलावा, एमेट्रिकल बैंग्स कट भी स्क्रेवर फेस पर काफी अच्छा लगता है।

राउंड फेस के लिए हेयर कट

राउंड फेस शेप की महिलाओं को ऐसे हेयर कट का चयन करना चाहिए, जो उनकी जॉलाइन के थोड़ा लम्बा होने का भ्रम पैदा करें। इसके लिए आप लॉन्ग बॉब कट का ऑशन चुन सकती हैं। इसके अलावा, साइड स्वेप बैंग्स भी इस फेस शेप के लिए एक अच्छा ऑशन माना जाता है। वहीं अगर आप अपने फेस में एक स्ट्रॉकर एड करना चाहती हैं तो हेयर कट में लेयर्स का ऑशन भी चुन सकती है।

मानसून में रिकन का ध्यान रखने के लिए इस्तेमाल करें यह फेस पैक

पूँ

तो आपकी स्किन हमेशा ही केयर मांगती है, लेकिन मानसून के दौरान तो स्किन को नजरअंदाज करना बेहद भारी पड़ जाता है। बारिश का पानी और धूमिडिटी आपकी स्किन को परेशान कर सकती है और उसे अधिक चिपचिपा बना सकती है। ऐसे में सीटीएम रूटीन को फॉलो करने के साथ-साथ आप कुछ फेस पैक अप्लाई करके अपनी स्किन को पैम्पर करें। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको मानसून में स्किन की केयर करने के लिए कुछ बेहतरीन फेस पैक्स के बारे में बता रहे हैं-

करें चंदन का इस्तेमाल

चंदन आपकी स्किन को ठंडक प्रदान करने के साथ-साथ उसका ख्याल भी रखता है। मानसून में इसकी मदद से आप डार्क स्किन से छुटकारा पा सकती हैं और अपनी स्किन को बेदग बना सकती हैं। इस फेस पैक को बनाने के लिए आप चंदन पाउडर में छुटकी भर हल्दी मिलाएं। अब गुलाबजल की मदद से पेस्ट तैयार करें। अब इसे फेस को क्लीन करके अप्लाई करें और 15-20 मिनट तक इसे ऐसे ही रहने दें। अंत में साफ पानी की मदद से स्किन को साफ करें।



केले का फेस पैक

स्किन और बालों के लिए केला किसी वरदान से कम नहीं है। यह आपकी स्किन को अधिक फर्म व ग्लोइंग बनाता है। आप इसे पुदीने के साथ इस्तेमाल कर सकती हैं। पुदीना आपकी स्किन को ठंडक प्रदान करने के साथ-साथ उसकी अशुद्धियों को भी दूर करता है। इसके लिए आप पुदीना में हल्का सा पानी डालकर उससे एक फाइन पेस्ट बना लें। अब इसमें आधा केला अच्छी तरह मैश करें। अब इन दोनों को मिक्स करके चेहरे पर अप्लाई करें और करीब 10 मिनट के लिए ऐसे ही रहने दें।

अंत में गुनगुने पानी से स्किन को साफ करके मॉइश्यूर लगाएं।

जोजोबा का तेल

अगर आपकी स्किन रुखी है तो आप जोजोबा के तेल की मदद से मानसून में अपनी रुखी स्किन का ख्याल रख सकती हैं। इस फेस पैक को बनाने के लिए आप एक बाउल में जोजोबा ऑयल लेकर उसमें थोड़ी दही व शहद मिलाएं। इसे अच्छी तरह मिक्स करें। अब इसे अपनी स्किन पर लगाएं और कुछ देर ऐसे ही रहने दें।

अंत में गुनगुने पानी की मदद से स्किन को साफ करें।

अंडा आएगा काम

अंडा में मौजूद पोषक तत्व आपकी स्किन को नरिश्ड करते हैं। खासतौर से, मानसून में ऑयली स्किन के लिए इससे एक अच्छा फेस पैक तैयार किया जा सकता है। इसके लिए आप एक अंडे का व्हाइट पार्ट लेकर उसमें थोड़ा शहद डालें और अच्छी तरह मिक्स करें। अब इसे अपने चेहरे पर लगाकर इसके सूखने का इंतजार करें। अंत में सामान्य पानी की मदद से अपनी स्किन को साफ कर लें।

बढ़ती उम्र के साथ त्वचा की करें देखभाल, जल्दी नहीं दिखेंगी झुरियां

ब

ढ़ती उम्र का असर सबसे पहले यदि कहीं नज़र आता है तो वह है आपका चेहरा। इसलिए ज़रूरी है कि समय रहते इसकी सही देखभाल की जाए। 30 की उम्र के बाद से ही आपको अपनी त्वचा का खास ख्याल रखने की ज़रूरत है ताकि बढ़ती उम्र का असर चेहरे पर न हो और झुरियां भी जल्दी नज़र न आएं। इसके लिए किसी महंगी ऋग्नी या व्यूटी प्रोडक्ट्स की नहीं, बल्कि कुछ घरेलू तरीके आज़माने की ज़रूरत है।

क्यों होती हैं झुरियां

व्यूटी एक्सपर्ट्स की मानें तो बढ़ती उम्र के साथ ही त्वचा में कोलोजन और इलास्टिक नामक प्रोटीन की मात्रा कम होने लगती है जिससे चेहरे का निखार कम हो जाता है और झुरियां पड़ने लगती हैं। समय से पहले आपके चेहरे का नूर कम न हो इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना होगा चेहरे पर सिर्फ़ फेस पैक और मास्क लगाना ही काफी नहीं है इसे अंदर से हेल्दी बनाए रखने के लिए हेल्दी डायट भी ज़रूरी है। इसलिए ताजे फल और सब्जियां खाएं जिनमें विटामिन ए, ई, बी और सी हो। खासतौर पर विटामिन ई और सी हेल्दी स्किन के लिए बहुत ज़रूरी है। स्मोकिंग और एल्कोहल का सेवन बिल्कुन न करें। इससे स्किन के टिशू को नुकसान

पहुंचता है और त्वचा में कसाव नहीं रह जाता। इससे उम्र भी जल्दी बढ़ने लगती है यानी त्वचा जवां नज़र नहीं आती।



घरेलू उपाय

सौंदर्य विशेषज्ञों का मानना है कि आप घर में मौजूद कुछ चीज़ों का इस्तेमाल करके अपने चेहरे को बूढ़ा होने से बचा सकते हैं।

शहद से करें मसाज

आपके किंचन में मौजूद शहद चेहरे के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यह त्वचा को मॉइश्यूर लेकर उसमें कसाव लाता है। शहद को चेहरे पर लगाएं और

नीचे से ऊपर की ओर मसाज करें। इससे त्वचा के रोमछिद साफ हो जाते हैं। मसाज करने के बाद मुलायम कपड़े को गुनगुने पानी में भिगोकर चेहरा पोछ लें।

केले का पेस्ट लगाएं

पके केले को मिक्सर में पीसकर ऋग्नी जैसा पेस्ट बना लें और उसे चेहरे पर लगाएं। इसे करीब आधे घंटे तक लगा रहने दें, फिर पानी से धो लें। नियमित इस्तेमाल से त्वचा पर कसाव आता है और झुरियां भी कम होने लगती हैं। आप इसमें ऑलिव ऑयल, बादाम का तेल या नारियल का तेल मिलाकर भी लगा सकती हैं, इससे जल्दी झुरियां नहीं पड़तीं।

खीरे का रस का फायदेमंद

व्यूटी एक्सपर्ट्स न सिर्फ़ डार्क सर्कल कम करने के लिए खीरे का रस लगाने की सलाह देते हैं, बल्कि इससे चेहरे पर उम्र की लकीरों को भी कम किया जा सकता है। खीरे का रस निकालकर उसे बर्फ जमाने वाली ट्रे में जमा लें। आप चाहें तो इसमें टमाटर का रस भी मिला सकती हैं। फिर दिन में 2 बार इस आइसक्यूब को निकालकर चेहरे पर रख़ाँ। कुछ हफ्तों तक लगातार इस्तेमाल करने पर आपको फर्क नज़र आने लगेगा। झुरियां कम करने के लिए मुल्तानी मिट्टी और गुलाबजल



दीपिका पादुकोण के साथ फिल्म में काम करना चाहते हैं रॉकी भाई

प्रशांत नील के निर्देशन में बनी फिल्म के जीएफ चैप्टर 2 रिलीज से बाद से ही बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा रही है। इस फिल्म में यश ने रॉकी भाई के अंदाज में एक बार फिर दर्शकों का दिल जीत लिया है। यश की एक्टिंग को हर कोई पसंद कर रहा है। के जीएफ चैप्टर 2% तेलगू फिल्म है और इसे हिंदी में डब किया गया है। लेकिन अब फैस यश को हिंदी फिल्मों में भी देखना चाहते हैं। अभिनेता से कई बार बॉलीवुड डेब्यू के बारे में सवाल किया जा चुका है। इसी बीच एक बार यश ने हिंदी फिल्म में दीपिका पादुकोण के साथ काम करने की इच्छा जताई थी। इस मौके पर अभिनेता ने इसकी एक खास वजह भी बताई थी। दरअसल, के जीएफ चैप्टर 1 रिलीज होने के बाद यश ने एक यू-

ट्यूब चैनल को इंटरव्यू दिया था, जिसमें अभिनेता ने एक रैपिड फायर राउंड खेला था, जिसमें उन्होंने कई सवालों के जवाब दिए थे। इस मौके पर यश से उस



बॉलीवुड अभिनेता का नाम पूछा गया था, जिसके साथ वह अपनी डेब्यू फिल्म करना चाहते हैं। इस पर रॉकी भाई ने कहा था, दीपिका पादुकोण, क्योंकि वह बैंगलुरु से हैं। इस रैपिड फायर राउंड में यश ने दीपिका पादुकोण के पति और अभिनेता रणवीर सिंह के बारे में भी कुछ मजेदार कहा था। यश से इंटरव्यू में उस बॉलीवुड स्टार का नाम पूछा गया था, जिन्हें वह देखना पसंद करते हैं?

भूल भुलैया 2 से सामने आया कियारा का पहला लुक

बॉलीवुड की बहुप्रतीक्षित टीजर सामने आने के बाद से ही दर्शक बेसब्री से इस फिल्म का इंतजार कर रहे हैं। फिल्म के पहले भाग को दर्शकों का बेहद प्यार मिला था। ऐसे में अब दर्शकों को फिल्म के दूसरे भाग से भी काफी उम्मीदें हैं। हालांकि, पहले भाग से अलग इस फिल्म में कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी भी नजर आने वाले हैं। इसी बीच अब एक्ट्रेस ने हाल ही में फिल्म से अपना पहला लुक फैंस के साथ साझा किया है। अभिनेत्री ने

अपने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट पर अपनी एक वीडियो क्लिप शेयर की है। शेयर किए गए इस वीडियो में अभिनेत्री का डरा और सहमा हुआ चेहरा लोगों की उत्सुकता बढ़ा रहा है। इस वीडियो को शेयर करते हुए एक्ट्रेस ने काफी कैप्शन में लिखा, मिलिए रीत से, मूर्ख मत बनो, वह इतनी प्यारी नहीं है। इससे पहले बीते दिनों ही फिल्म का टीजर जारी किया गया था। सामने आया फिल्म का यह टीजर काफी डरावना था, जिसे देख लोगों की रुह कांप गई थी।





तानसेन का मकबरा

ग्वालियर में देखने लायक जगहों में तानसेन का मकबरा भी शामिल हैं। यह मकबरा भारत के प्रसिद्ध संगीतकार



और सप्ताष्ट अकबर के दरबार के प्रमुख गायक तानसेन का हैं जोकि अकबर के दरबार के नो रों में से एक हैं। माना जाता है कि ग्वालियर का यह प्रसिद्ध संगीतकार अपने संगीत के जादू से बारिश करा देता था और जानवरों को अपने संगीत से मन्त्र मुग्ध कर देता था।

गुजरी महल

गुजरी महल मान सिंह द्वारा अपनी सबसे प्रिय पत्नी



मृगनयनी के लिए 15वीं शताब्दी के दौरान बनवाया गया था। यह महल अब खंडों में तब्दील होता जा रहा है। महल में एक पुरातात्त्विक संग्रहालय भी बना हुआ है।
सास बहु मंदिर

ग्वालियर के प्रसिद्ध सास बहु मंदिर का निर्माण 9वीं शताब्दी में किया गया था। ग्वालियर का सास बहु मंदिर यहाँ आने वाले पर्यटकों और भक्तों को बहुत अधिक आकर्षित करता है। मंदिर के नाम सास-बहु का अभिप्राय भगवान विष्णु के एक अन्य नाम शास्त्री बहु का संक्षिप्त रूप है।

सूर्य मंदिर

सूर्य मंदिर भगवान सूर्य देव को समर्पित हैं। सूर्य मंदिर ग्वालियर के सबसे शानदार मंदिरों में से एक है और साथ ही साथ इस मंदिर में शानदार वास्तुशिल्प है जो आश्चर्यचकित कर देती हैं। सूर्य मंदिर का निर्माण वर्ष 1988 के दौरान एक प्रसिद्ध उद्योगपति जीडी बिड़ला के द्वारा करबाया गया था। सूर्य मंदिर में आने वाले पर्यटकों की लम्बी कतार वर्ष भर लगी रहती है।

सरोद घर

ग्वालियर आने वाले पर्यटकों में संगीत के शौकीन व्यक्ति अक्सर सरोद घर की ओर रुख करना पसंद करते हैं। सरोद घर संगीत का एक संग्रहालय है जिसे महान संगीत उत्साद हफिज अली खान के पैतृक घर में बनाया गया है। इस संग्रहालय में पुराने समय के कुछ संगीत वाद्ययंत्र रखे गए हैं।

रानी लक्ष्मीबाई की समाधी

ग्वालियर में रानी लक्ष्मी बाई की समाधी बनी हुई है जोकि ग्वालियर आने वाले पर्यटकों के लिए एक शानदार पर्यटन स्थल है। यहाँ के आकर्षण में रानी लक्ष्मी बाई की 8 मीटर ऊंची प्रतिमा बनी हुई है। यह इतिहास प्रेमियों के लिए एक शानदार स्थान है।

जय विलास पैलेस

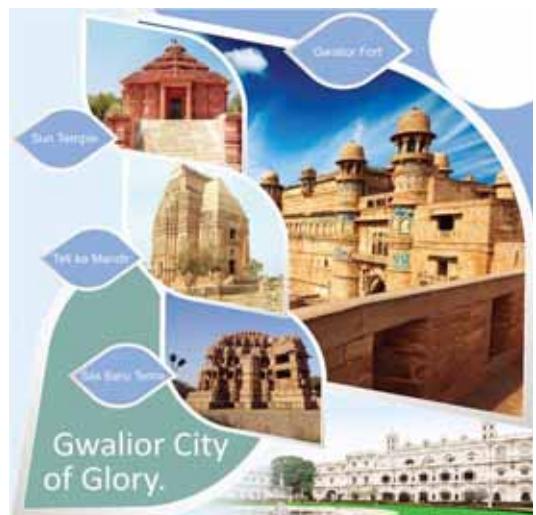
आज भी सिंधिया राजवंश और उनके पूर्वजों का निवास स्थान है। इसके एक भाग का उपयोग आजकल संग्रहालय की तरह किया जाता है। इसका निर्माण जीवाजी राव सिंधिया ने 1809 में किया था। लेफिटनेंट कर्नल सर माइकल फिलोस इसके वास्तुकार थे। इसकी स्थापत्य शैली इतालवी, टस्कन और कोरिंथियन शैली



का अद्भुत मिश्रण है। यहाँ सिंधिया शासनकाल के कई दस्तावेज़ और कलाकृतियाँ तथा औरंगजेब और शाहजहाँ की तलवार है। इटली और फ़रांस की कलाकृतियाँ और जहाज़ भी यहाँ प्रदर्शन के लिए रखे



गए हैं। संग्रहालय में हजारों टन के दो बड़े झूमर लगे हुए हैं जो निश्चित रूप से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यह स्थान इतिहासकारों और सामान्य जनता को समान रूप से आकर्षित करता है।



ऐतिहासिक शहर ग्वालियर

SPECIAL EDITION

“

ग्वालियर एक ऐतिहासिक शहर है जो अपने मंदिरों, प्राचीन महलों और करामाती स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है जो किसी भी यात्री को पुराने ज़माने में ले जाते हैं। यह मध्य प्रदेश राज्य का चौथा बड़ा शहर है। ग्वालियर को हिन्दू के किले के हार का मोती कहा जाता है। यह स्थान ग्वालियर किले के लिए प्रसिद्ध है जो कई उत्तर भारतीय राजवंशों का प्रशासनिक केंद्र था। जहाँ इतिहास आधुनिकता से मिलता है। ग्वालियर वह स्थान है जहाँ इतिहास आधुनिकता से मिलता है। यह अपने ऐतिहासिक स्मारकों, किलों और संग्रहालयों के द्वारा आपको अपने इतिहास में ले जाता है तथा साथ ही साथ यह एक प्रगतिशील औद्योगिक शहर भी है। आधुनिक भारत के इतिहास में ग्वालियर को अद्वितीय स्थान प्राप्त है।

इ

तिहास के पत्तों में ग्वालियर का नाम ऐतिहासिक शहरों में शुभार है। इस ऐतिहासिक शहर की सुन्दरता, आकर्षित कर दने वाली स्मारकों, महलों और मंदिरों की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है। यहाँ के ऐतिहासिक स्थलों की बनावट में शानदार वास्तुकला की झलक देखने को मिलती है। ग्वालियर पर्यटन स्थल खूबसूरत पहाड़ियों, सुन्दर हरियाली और मदमस्त कर देने वाली जलवायु से घिरा हुआ स्थान है। ग्वालियर का किला शहर की भव्यता को और अधिक बड़ा देता है और इस किले से पूरे शहर का खूबसूरत नजारा दिखाई देता है। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि प्रसिद्ध संगीतकार तानसेन का जन्म ग्वालियर में ही हुआ था और तानसेन का मकबरा भी यही बना हुआ है। आज हम आपको ग्वालियर और इसके आकर्षित पर्यटक स्थलों के बारे में जानकारी देने जा रहे हैं। ग्वालियर कई महलों, इमारतों, खंडों, मंदिरों और पर्यटन स्थलों से भरी हुई नारी है। यह शहर पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है और अरु दूर-दूर से आने वाले पर्यटकों का मैला यहां लगा रहता है। तो आइए हम आपको ग्वालियर शहर के पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी देते हैं। ग्वालियर का किला पूरे दक्षिण भारत का एक अभेद किला है। इस किले का निर्माण दो भागों में किया गया था। जोकि दो अलग अलग समय अवधि के दौरान हुआ था। ग्वालियर किले की सुन्दरता और विशालता का वर्णन शब्दों में करना कठिन है। इस किले में मन मंदिर, गुजरी महल, पानी के टैक, कर्ण, जहांगीर आदि है। ग्वालियर आने वाले पर्यटकों को एक बार इस किले में जरूर घूमने जाना चाहिए। ग्वालियर का दर्शनीय स्थल तेली का मंदिर ग्वालियर किले



में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण 9वीं शताब्दी में किया गया था और यह ग्वालियर की सबसे बड़ी ईमारत है। जिसकी ऊंचाई 100 फिट है। यह शानदार भव्य मंदिर अपनी अनूठी

वास्तुकला के लिए पूरे भारत वर्ष में प्रसिद्ध है। ग्वालियर किले में भिन्न प्रकार के महल स्थित हैं जैसे कि मानमंदिर कण महल, जहांगीर महल, शाहजहाँ मंदिर एवं गुरुजी महल आदि। ग्वालियर क्षेत्र में ग्वालियर शहर के अन्तर्गत दुर्ग पर चले जहाँ आलमगीरी दरवाजा जो किलांगेट से प्रारंभ होता है। दूसरा उत्तरांश एवं ढोड़ापुर गेट है। दुर्ग पर किलांगेट से आने पर प्रतिहार कालीब चतुर्भुज मंदिर जिसमें शून्य का संकेत एक अभिलेख से होता है। किले पर निम्न स्थल दर्शनीय है। चतुर्भुज मंदिर 8-9 वीं शती, ई., हथियापौर गेट, मानमंदिर, कर्णमहल, जहांगीर महल, शाहजहाँ महल, जौहर ताल, हुमायू महल, ढोड़ापुर गेट, तेली का मंदिर, सास बहू का मंदिर, गुरुद्वारा, सिधिया स्कूल, दुर्ग की जैन मूर्तियाँ इसके अतिरिक्त सिधिया संग्रहालय नगर निगम संग्रहालय, गूजरी महल संग्रहालय दर्शनीय है। रानी लक्ष्मीबाई की समाधि, फूलबाग, तिगराबांध, सूर्य मंदिर आदि दर्शनीय हैं।



ऐतिहासिक चम्बल की धरांहरें

“

मुरैना भारत के मध्य प्रदेश
ग्रान्त का एक नगर है
ऐतिहासिक चम्बल की
ऐतिहासिक धरांहरें पर्यटकों
को आकर्षित करती हैं। उत्तरी
मध्य प्रदेश में स्थित मुरैना
चंबल घाटी का प्रमुख जिला
है। 5000 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में
फैले इस जिले से चंबल,
कुंवारी, आसन और सांक
नदियां बहती हैं। पर्यटन के
लिए आने वालों के देखने के
लिए यहां अनेक दर्शनीय
स्थल हैं। इन दर्शनीय स्थलों
में सिंहोनिया, पहाड़गढ़,
मीतावली, नूराबाद, सबलगढ़
का किला और राष्ट्रीय चंबल
अभ्यारण्य प्रमुख हैं। यहां एक
पुरातात्त्विक संग्रहालय और
गैलरी भी देखी जा सकती है।
यह जिला ग्वालियर नगर से
लगभग 46 कि.मी. की दूरी
पर है।

“

तिहासिक शहर मुरैना मध्य प्रदेश राज्य का एक नगर तथा एक जिला मुख्यालय भी है, जो चंबल घाटी के अंतर्गत आता है। चंबल घाटी के बारे में तो आप सभी जानते होंगे चंबल घाटी को बागियों का गढ़ भी कहा जाता है। मुरैना जिला ग्वालियर से मात्र 40 किलोमीटर दूर तथा उत्तरी मध्य प्रदेश में स्थित है जो लगभग 5000 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। यह जिला अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है। यहाँ देखने योग्य सिंहोनिया, मितावली पड़ावली, नूराबाद, सबलगढ़ का किला, चंबल अभ्यारण, करह धाम, नोनार शनिचरा धाम आदि प्रमुख हैं। जिन्हे देखने के लिए प्रतिवर्ष देश-विदेश से लाखों पर्यटक आते रहते हैं।

ककनमठ मंदिर सिंहोनिया

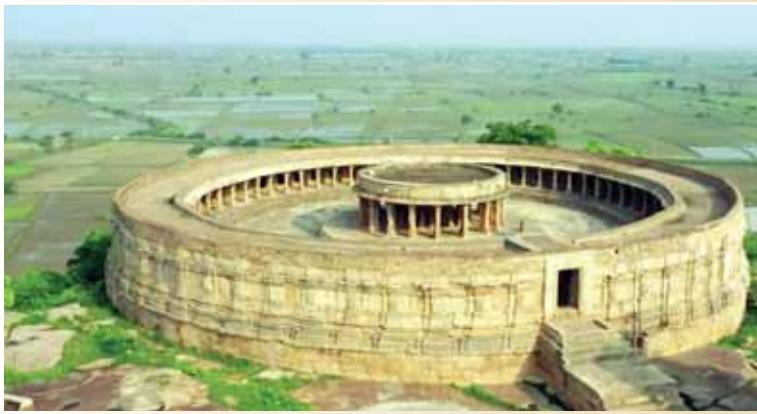
ककनमठ मंदिर सिंहोनिया 9वीं शताब्दी का है। पूरा मंदिर पथरों पर टिका हुआ है। इतिहासकारों के मुताबिक इस मंदिर को सिंहोनिया के सोनपाल राजा ने अपनी रानी ककनावती के लिए बनवाया था। हालांकि किवदंति है कि मंदिर को एक रात में ही भूतों ने तैयार किया था। इस मंदिर में शिवलिंग है और 52 खंभों पर बना हुआ है। मंदिर ख्याति प्राप्त तो है, लेकिन पर्यटकों के हिसाब से यहां पर सुविधाएं नहीं हैं। सिंहोनिया ककनमठ मंदिर मुरैना से करीब 30

किमी है। यहां पर बस या निजी वाहनों से जाया जा सकता है।

बटेश्वरा मंदिर

बटेश्वरा के शिव मंदिर भी 11 वीं शताब्दी के हैं। इन मंदिरों को गुर्जर प्रतिहार राजाओं ने बनवाए थे। यहां पर

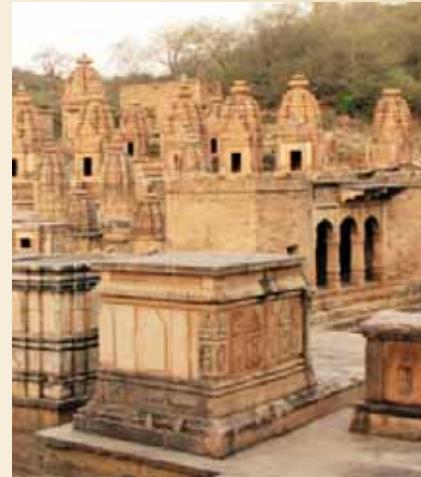
यहां पर तंत्रमंत्र की साधना होती थी। मंदिर का डिजायन संसद भवन जैसा है। इतिहासकारों के मुताबिक इस मंदिर को देखकर ही लुटियांस ने दिल्ली में संसद भवन डिजायन की थी। इस मंदिर को देखने के लिए भी सैलानी आते हैं, लेकिन उतने नहीं आते।



4 सौ मंदिरों की श्रृंखला है, लेकिन अवैध उत्खनन की वजह से अधिकतर मंदिर गिर गए थे, लेकिन आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने मंदिरों को दोबारा से खड़ा किया है। ऐसे करीब सौ मंदिर हैं, जिन्हें दोबारा से खड़ा किया है।

मितावली का चौंसठ योगिनी मंदिर

रिटौरा क्षेत्र का मितावली का चौंसठ योगिनी मंदिर पहाड़ी पर बना हुआ है। यह मंदिर भी 11वीं शताब्दी का है और इसे तात्रिक पीठ बताया गया है। यानी





निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर ग्वालियर

स्मार्ट सिटी द्वारा कराए जा रहे विकास कार्यों से निरंतर बढ़ रही शहर की सुंदरता

● गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर स्मार्ट सिटी परियोजना की सीईओ जयति सिंह के नेतृत्व में स्मार्ट सिटी की महत्वपूर्ण परियोजना निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। नए बस स्टैंड, दीवारों को

सुन्दर पैटिंग से सजाने का काम जोर से चल रहा है स्मार्ट सिटी द्वारा कराए जा रहे निरंतर विकास पथ के कार्यों से ग्वालियर शहर निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है और एक नया ग्वालियर हमारे सामने उभर रहा है जिसमें आकर्षक लाइटिंग, पार्कों का सौंदर्यीकरण, आकर्षक साइन बोर्ड जैसे अनेकों कार्य स्मार्ट सिटी के द्वारा किए जा रहे हैं। केन्द्र व प्रदेश सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत हो रहे कामों से ग्वालियर तेजी से विकास की ओर बढ़ रहा



है। ग्वालियर सिटी को स्मार्ट सिटी बनाने से पहले लोगों को भी स्मार्ट बनाना होगा। स्मार्ट सिटी द्वारा ग्वालियर शहर में विकसित किए गए करीब करोड़ों की लागत के निर्माण बनकर तैयार हैं ग्वालियर शहर स्मार्ट सिटी की ओर अग्रसर होता जा रहा है शहर में नित नए विकास कार्य स्मार्ट सिटी योजना के अन्तर्गत किए जा रहे हैं। स्मार्ट सिटी सीईओ श्रीमती जयति सिंह ने बताया कि ग्वालियर स्मार्ट सिटी द्वारा आमजन की मूलभूत सुविधाओं में सुधार व उनके जीवन को सुगम बनाने के उद्देश्य से विभिन्न परियोजनाओं का क्रियान्वयन किया जा



ग्वालियर को स्मार्ट शहरों की पत्ति में अग्रणी स्थान पर लाना है: जयति सिंह

रहा है। इसी क्रम में ग्वालियर स्मार्ट सिटी ने जंकशन उन्नयनिकरण परियोजना का कार्य शुरू किया गया है। इस परियोजना के तहत शहर के चिह्नित जंकशनों को

ग्वालियर स्मार्ट सिटी द्वारा क्रियान्वित फसाड लाइटिंग परियोजना शहरवासियों व सैलानियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनी है। महाराज बाड़ा, ग्वालियर फोर्ट,



यातायात के हिसाब से सुरक्षित व सुगम बनाना है। इसके साथ ही इस परियोजना से चिह्नित जंकशनों का सौंदर्यीकरण भी किया जा रहा है। लैंडस्केपिंग की विभिन्न शैलियों जैसे एफआरपी वॉल, म्युरल, वॉल आर्ट, पत्थर शिल्प, इत्यादि के माध्यम से ये जंकशन शहर को एक अलग पहचान देंगे। इस परियोजना के तहत उरवाई गेट, हजीरा चौराहा व तानसेन जंकशन पर उन्नयनिकरण किया जा रहा है। इस परियोजना के तहत तानसेन होटल जंकशन सुधार का कार्य पूर्ण हो चुका है व उरवाई गेट, हजीरा जंकशन उन्नयनिकरण का कार्य अंतिम चरण में है।

एमएलबी कॉलेज सहित शहर के ऐतिहासिक स्थलों को वॉर्म हेरिटेज लाइटिंग से रोशन किया गया है। शहरवासियों को मूलभूत सुविधाएँ पुष्टी कराने तथा शहर में लोकप्रिय स्थलों को आकर्षक बनाने की दृष्टि से परियोजनाओं का क्रियान्वयन ग्वालियर स्मार्ट सिटी द्वारा किया जा रहा है। चौपाटी, सेल्पी प्लाइट, यूजीयम, ठाड़न हॉल आदि स्थलों को स्थानीय लोगों व सैलानियों द्वारा सराहा जा रहा है। स्मार्ट रोड के प्रथम चरण के निर्माण में विकसित किया गया स्टेप सीटिंग व सेल्पी प्लाइट जो सैलानियों को आकर्षित कर रहा है।



सड़क दुर्घटनाएं रोकने में मददगार साबित होगा

विज्ञान जीरो

परिवहन विभाग ने सड़क दुर्घटनाएं रोकने और दुर्घटना में घायल लोगों की जान बचाने के लिए सुरक्षित प्रणाली पर आधारित विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना तैयार की है। इसमें सुरक्षित गति, सुरक्षित रोड, सुरक्षित वाहन, सुरक्षित चालक व्यवहार और दुर्घटना उपरात सहायता शामिल है। हम सभी लोग अपनी जवाबदेही निभाकर सड़क दुर्घटनायें रोकने में मददगार बनें। हम सबका नैतिक दायित्व है यदि दुर्घटना

इसमें सुरक्षित गति, सुरक्षित रोड, सुरक्षित वाहन, सुरक्षित चालक व्यवहार और दुर्घटना उपरात सहायता शामिल है। परिवहन, पुलिस, राष्ट्रीय सड़क विकास प्राधिकरण, लोक निर्माण विभाग, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सक व स्वयंसेवी संस्थाओं सहित सम्पूर्ण सामाज की भागीदारी से विजन जीरो मध्यप्रदेश को अमलीजामा पहनाया जा रहा है। सभी अपनी जवाबदेही निभाकर सड़क दुर्घटनायें रोकने में मददगार बनें। हम सबका नैतिक दायित्व है यदि दुर्घटना हो जाती है तो मानवता के नाते घायल को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाएं जिससे उसकी जान बचाई जा सके।

इसी के अन्तर्गत गूंज मीडिया ग्रुप एवं गूंज 90.8 एफएम द्वारा ग्वालियर शहर में लोगों को यातायात के नियमों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से विजन जीरो पर कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं जिसमें हेलमेट, सीट बेल्ट और ट्रैफिक रूल्स के बारे में विस्तार से जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। गूंज 90.8 एफएम द्वारा विजन जीरो के ऊपर विशेष कार्यक्रम चलाकर लोगों को यातायात के नियमों के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

वही दूसरी ओर मध्य प्रदेश एक्सीडेंट के मामले में दूसरे स्थान पर हैं जिससे हम सबको बचना है। साथ ही बच्चों को रेड सिग्नल के बारे में जागरूक होना चाहिए जिससे वह शुरू से ही नियमों का पालन करें। किस प्रकार रोड पर चलना चाहिए एवं युवा किस प्रकार एक्सीडेंट होने से बच सकते हैं इस पर विजन जीरो कार्यक्रम में गूंज द्वारा जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है जिसमें विद्यार्थियों को जागरूक किया जा रहा है।

विजन जीरो की हमारी इस मुहिम में आप भी सहभागी बनें जिससे सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सके क्योंकि आए दिन हम अखबारों में पढ़ते हैं कि रोड एक्सीडेंट में कितने असाधिक मौतें होती हैं जिन्हें रोकने के लिए सरकार द्वारा कई अहम कदम उठाए जा रहे हैं लेकिन किर भी भारत में रोड एक्सीडेंट में मरने वालों का आंकड़ा भयावह है। इसी को ध्यान में रखकर विजन जीरो की शुरूआत की गई है ताकि सड़क दुर्घटनाओं को रोका जा सके।

धन्यवाद



मनोज सिंह भदौरिया
सह संपादक

“

मध्य प्रदेश एक्सीडेंट के मामले में दूसरे स्थान पर हैं जिससे हम सबको बचना है। साथ ही बच्चों को रेड सिग्नल के बारे में जागरूक होना चाहिए जिससे वह शुरू से ही नियमों का पालन करें। किस प्रकार रोड पर चलना चाहिए एवं युवा किस प्रकार एक्सीडेंट होने से बच सकते हैं इस पर विजन जीरो कार्यक्रम में गूंज द्वारा जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है जिसमें विद्यार्थियों को जागरूक किया जा रहा है।

विजन जीरो की हमारी इस मुहिम में आप भी सहभागी बनें जिससे सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सके क्योंकि आए दिन हम अखबारों में पढ़ते हैं कि रोड एक्सीडेंट में कितने असाधिक मौतें होती हैं जिन्हें रोकने के लिए सरकार द्वारा कई अहम कदम उठाए जा रहे हैं लेकिन किर भी भारत में रोड एक्सीडेंट में मरने वालों का आंकड़ा भयावह है। इसी को ध्यान में रखकर विजन जीरो की शुरूआत की गई है ताकि सड़क दुर्घटनाओं को रोका जा रहा है।

”



हो जाती है तो मानवता के नाते घायल को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाएं जिससे उसकी जान बचाई जा सके। हम जिस तरह का सड़क सुरक्षा तंत्र तैयार करेंगे, उसी में हमें परिवार व मित्रों के साथ गुजरना होगा। परिवहन, पुलिस, राष्ट्रीय सड़क विकास प्राधिकरण, लोक निर्माण विभाग, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सक व स्वयंसेवी संस्थाओं सहित सम्पूर्ण सामाज की भागीदारी से विजन जीरो मध्यप्रदेश को अमलीजामा पहनाया जा रहा है। विजन जीरो को सफल बनाने में सभी लोग अपनी जवाबदेही निभाकर सड़क दुर्घटनायें रोकने में मददगार बनें। इसी कड़ी में गूंज भी निरंतर प्रयासरत है। गूंज मीडिया ग्रुप एवं गूंज 90.8 एफएम द्वारा ग्वालियर शहर में लोगों को यातायात के नियमों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से विजन जीरो पर कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। विजन जीरो को यथा है तथा इसके अंतर्गत आने वाली सभी चीजों को विस्तार पूर्वक लोगों को समझाने का कार्य हमारे द्वारा किया जा रहा है। विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना पाँच स्तम्भों पर आधारित है।



आपदा के समय में परिवहन विभाग के निस्वार्थ सेवा के जज्बे ने बहुत सारी जानों को बचाया

हर चुनौती का सफलतापूर्वक सामना किया परिवहन आयुक्त मुकेश जैन ने

लर्निंग लाइसेंस की प्रक्रिया को ऑनलाइन करने में रहा है बड़ा योगदान

● गूंज न्यूज नेटवर्क

लर्निंग लाइसेंस की प्रक्रिया को ऑनलाइन करने में रहा है बड़ा योगदान आयुक्त

मप्र मुकेश जैन

जी का बड़ा योगदान रहा है परिवहन कार्यालयों में कंप्यूटरीकरण की सुविधा उपलब्ध कराई गई मुकेश जी के नेतृत्व में व्हीकल लोकेशन ट्रैकिंग स्कीम पर भी काम किया जा रहा है जिसके अंतर्गत महिलाओं की सुरक्षा के लिए पब्लिक वाहनों में पैनिक बटन लगाया जाएगा जिसका इस्तेमाल महिलाएं खतरा महसूस होने पर कर सकती हैं।

मुकेश जैन ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि

नागरिकों की समस्याओं को अपनी समस्या मान कर सकारात्मकता के साथ समाधान करना ही प्रमुख कर्तव्य है। सभी शिकायतों की दैनिक समीक्षा की जाती है तथा ये सुनिश्चित की जाता है कि सासाहिक बैठक में समस्याओं का संतुष्टिपूर्वक निराकरण हो सके। मुकेश जैन ने अपनी डियूटी में आई हर चुनौती का

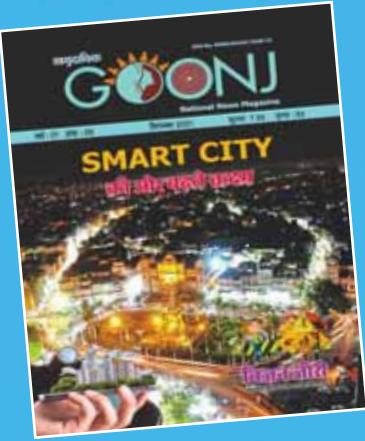
सफलतापूर्वक सामना किया है। कोरोना काल में भी जब ऑक्सीजन की समस्या आई तब अस्पतालों तक ऑक्सीजन पहुंचाने का काम परिवहन विभाग ने मुकेश जैन जी के नेतृत्व में कुशलतापूर्वक किया। मध्य प्रदेश में प्रति दिन 560 मीट्रिक टन ऑक्सीजन जुटाया गया। परिवहन विभाग ने मानव जीवन को बचाने के लिए स्वयं का जीवन खतरे में डाल कर 24/7 डियूटी की। जब मुकेश जी को इस बात का श्रेय दिया गया तब उन्होंने बहुत ही सरलता से कहा, हम मुख्यमंत्री जी का संकल्प पूरा कर रहे हैं। ऑक्सीजन की

कमी से किसी भी मरीज की जान नहीं जानी चाहिए। मानव जीवन को बचाने के लिए जो हमें जिम्मेदारी सौंपी गई है वो हमारी डियूटी का हिस्सा है, इसमें प्रशंसा की कोई बात नहीं है। इसके अलावा, लर्निंग लाइसेंस की प्रक्रिया को ऑनलाइन करने में मुकेश जी का बड़ा योगदान रहा है।



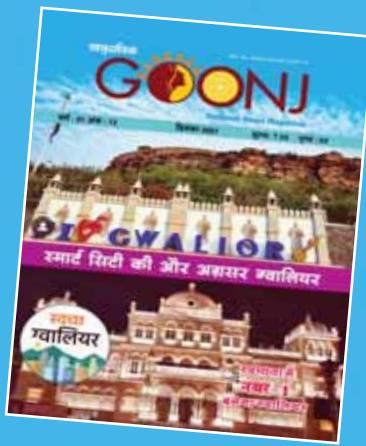
मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपर परिवहन आयुक्त अरविंद सर्करैना को भोपाल में वीरता पदक से सम्मानित किया। गौरतलब है कि 2017 में भोपाल एसपी रहने वाली सरकारी ने गांधी मेडिकल कॉलेज के अंदर एक विवादित भवन को लेकर दो पक्षों में हुए दंघों की घटना पर सफलता से अपनी टीम के साथ नियंत्रण कर लो एण्ड ऑर्डर की स्थिति बरकरार रखी थी।

परिवहन कार्यालयों में कंप्यूटरीकरण की सुविधा उपलब्ध कराई गई जिससे लर्निंग लाइसेंस प्राप्त करने की प्रक्रिया संपर्करहित हो सके। इस प्रक्रिया से 10 लाख युवा प्रतिवर्ष लाभान्वित होंगे। इस प्रक्रिया के लिए आवेदक को परिवहन कार्यालय जाने की ज़रूरत नहीं होती है, आवेदक अपने दस्तावेजों को स्कैन कर के अपलोड कर सकता है। दस्तावेजों के परीक्षण के उपरांत आवेदक ऑनलाइन टेस्ट दे कर दस्तावेज़ प्राप्त कर सकता है। इसमें समय की बचत हो रही है, और कार्यालयों में भीड़ कम हो रही है।



जन-जन तक पहुंच रही आपकी अपनी आवाज़

GOONJ



गूंज नेशनल मैगजीन का विमोचन करते
श्री संत कृपाल जी महाराज



गूंज नेशनल मैगजीन का अवलोकन करते
विधायक डॉ. सतीश सिकरवार



गूंज नेशनल मैगजीन का अवलोकन करते
दक्षिण विधायक प्रवीण पाठक



गूंज नेशनल मैगजीन का अवलोकन करते
गवालियर कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह



गूंज नेशनल मैगजीन का विमोचन करते पंडित
सतीश कौशिक जी महाराज।



गूंज नेशनल मैगजीन का अवलोकन करते वरिष्ठ
पुलिस अधीक्षक अमित सांघी



गूंज नेशनल मैगजीन का अवलोकन एवं साक्षात्कार
देते जेएच अधीक्षक आर. के. एस. धाकड़



गूंज नेशनल मैगजीन का अवलोकन विमोचन
करतीं पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता



गूंज नेशनल मैगजीन का अवलोकन करते
सीएमएचओ डॉ. मनीष शर्मा